FAIZAN-E-MADINA

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

मार्च 2026 ई. / शव्वालुल मुकर्रम1447 हि.

- दिल न लगाओ 7
- रसुलुल्लाह ﷺ का अन्दाज़े तबस्सुम 11
- सनाए सरकार है वज़ीफ़ा 23
- सोशल मीडिया इन्फ़्लूएंसर्स और उन की ज़िम्मेदारियां 26
- बच्चों को दूसरों का एहसास करना सिखाइये 47
- बेटियों को मसाइल का हल तलाश करना सिखाएं 49

कैसी ही बीमारी हो शिफ़ा मिले

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ الْبَاسِطُ

सौ बार अव्वल आख़िर तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर मरीज़ अपनी दवा और पानी की बोतल पर दम कर ले और ज़रूरत के मुताबिक़ इस्तिमाल करे, कैसी ही बीमारी हो अल्लाह करीम के फ़ज़्ल से शिफ़ा मिलेगी।

नोट : ज़रूरतन पानी में दूसरा पानी मिलाते रहिये। मरीज़ न पढ़ सके तो कोई और भी पढ़ कर दवा और पानी पर दम कर के दे सकता है।

अमीरे अहले सुन्नत
मौलाना इल्यास अ़त्तार क़ादिरी
4 रमज़ाने करीम 1446 हि. 5-3-25

जिस मरज़ का इ़लाज न मिलता हो

یَالَطِیْفُ 11 सौ बार

अव्वल आख़िर 11 मरतबा दुरूदे इब्राहीम पढ़ कर पानी पर दम कर के मरीज़ पानी पी ले जैसी ही गम्भीर (ख़तरनाक) बीमारी हो اِنْ شَآءَاللّٰہُ الْکَرِیْم शिफ़ा मिले।

दूसरा भी पढ़ कर पिला सकता है। (मुद्दत : शिफ़ा मिलने तक)

अमीरे अहले सुन्नत
मौलाना इल्यास अ़त्तार क़ादिरी
10 रमज़ाने करीम 1446 हि. 11-3-25

कमर दर्द का वज़ीफ़ा

یَااَللّٰہُ یَاحَکِیْمُ
21 मरतबा

कमर पर हाथ रख कर पढ़ें, اِنْ شَآءَاللّٰہُ الْکَرِیْم दर्द में जल्द आराम आ जाएगा।

(शिफ़ा मिलने तक रोज़ाना पढ़ना है)

(मदनी मुज़ाकरा, 27 जून 2025 ई.)

नोट : विर्द के अव्वल आख़िर तीन तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना है।

शौहर तंग करता हो तो

یَالَطِیْفُ یَاوَدُوْدُ

बीवी खाना पकाते, दूध उबालते, चाय बनाते, आटा गूंधते हुए अल ग़रज़ खाने पीने की चीज़ें तय्यार करते हुए पढ़ती रहे। मौक़अ़ मिले तो दम भी करती रहे, दम न भी कर सके तो ह़रज नहीं। اِنْ شَآءَاللّٰہُ الْکَرِیْم शौहर महब्बत करने लगेगा, घर के झगड़े ख़त्म हो जाएंगे।

मुद्दत : ता हुसूले मक़्सद

ताकीद : शौहर को हरगिज़ न बताए वरना नाराज़ी बढ़ सकती है।

अमीरे अहले सुन्नत मौलाना इल्यास अ़त्तार क़ादिरी
(मदनी मुज़ाकरा 30 जून 2025 ई.)

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

मार्च 2026 ई.

ब फ़ैज़ाने नज़र
सिराजुल उम्मह, काशिफुल ग़ुम्मह,
इमामे आज़म हज़रते सय्यिदुना
इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

ब फ़ैज़ाने करम
आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत
मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह
इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर

(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ)

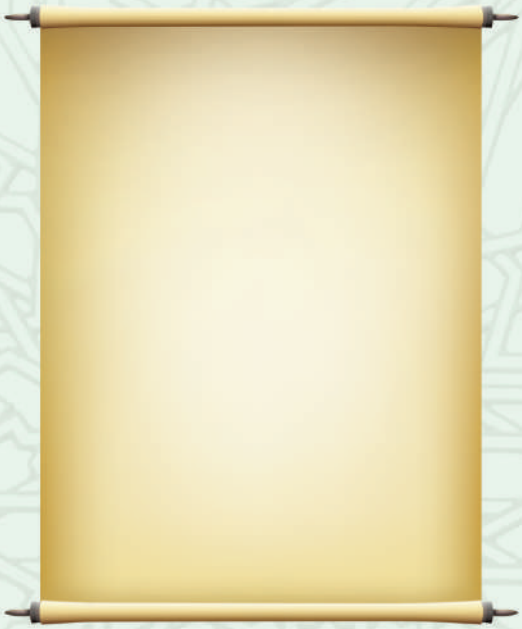

क़ुरआनो हदीस

नुज़ूले क़ुरआन के मक़ासिद और हिक्मतें 3
दिल न लगाओ 7

फ़ैज़ाने सीरत

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अन्दाज़े तबस्सुम 11

फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत

ईदुल फ़ित्र का नाम मीठी ईद क्यूं है ? मअ़ दीगर सुवालात 13

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

बे अ़मली के बावुजूद दूसरों को नेकी की दावत देने का हुक्म मअ़ दीगर सुवालात 15

मज़ामीन

इस्लाम में प्राइवेसी का तसव्वुर 17
मुसीबत के अय्याम 21
सनाए सरकार है वज़ीफ़ा 23
सोशल मीडिया इन्फ़्लोन्सर्ज़ और उन की ज़िम्मेदारियां 26
रोज़े जैसा सवाब दिलाने वाली नेकियां 28
बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन 30

ताजिरों के लिये

अह़कामे तिजारत 31

बुज़ुर्गाने दीन की सीरत

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام का हुस्न और बरकात 33
ह़ज़रते उ़मैर बिन वहब जमह़ी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ 35
अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये 37

क़ारिईन के सफ़ह़ात

नए लिखारी 39

बच्चों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"

ईदें, अल्लाह का तोह़फ़ा 42
आग का शोला 43
उ़हुद पहाड़ के पास 45
बच्चों को दूसरों का एह़सास करना सिखाइये 47

इस्लामी बहनों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"

बेटियों को मसाइल का ह़ल तलाश करना सिखाएं 49
इस्लामी बहनों के शरई़ मसाइल 51

नुज़ूले क़ुरआन के मक़ासिद और हिक्मतें (तीसरी और आख़िरी क़िस्त)

इन्सानों के दरमियान फ़ैसले और अह़काम

नुज़ूले क़ुरआन का एक मक़्सद क़ुरआने करीम में येह इरशाद फ़रमाया गया है कि येह किताब लोगों के दरमियान फ़ैसला करने और उन्हें वाज़ेह़ अह़काम देने के लिये नाज़िल की गई। सूरतुन्निसा में फ़रमाया: ﴿اِنَّاۤ اَنْزَلْنَاۤ اِلَیْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَیْنَ النَّاسِ بِمَاۤ اَرٰىكَ اللّٰهُ ؕ وَ لَا تَكُنْ لِّلْخَآىٕنِیْنَ خَصِیْمًا(۱۰۵)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ महबूब बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़ सच्ची किताब उतारी कि तुम लोगों में फ़ैसला करो जिस त़रह़ तुम्हें अल्लाह दिखाए और दग़ा वालों की त़रफ़ से न झगड़ो।[1]

सूरतुल माइदा में फ़रमाया :

﴿وَ اَنِ احْكُمْ بَیْنَهُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَ لَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ وَ احْذَرْهُمْ اَنْ یَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ بَعْضِ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَیْكَ ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह कि ऐ मुसलमान अल्लाह के उतारे पर हुक्म कर और उन की ख़्वाहिशों पर न चल और उन से बचता रह कि कहीं तुझे लग़्ज़िश न दे दें किसी हुक्म में जो तेरी त़रफ़ उतरा।[2]

येह आयात वाज़ेह़ करती हैं कि क़ुरआन एक मुकम्मल क़ानून और ज़ाबित़ा भी है। येह इन्सानों के बाहमी मुआमलात, हुक़ूक़ व फ़राइज़, ख़ानदानी मसाइल, मआशी लेन देन, सियासी उमूर, क़ानूनी मुआमलात और हर क़िस्म के इख़्तिलाफ़ात में वाज़ेह़ फ़ैसले फ़राहम करता है। मुआशरे में जब क़ुरआनी अह़काम के मुताबिक़ फ़ैसले किये जाते हैं तो अ़द्ल क़ाइम होता है, ज़ुल्म ख़त्म होता है और मुआशरती अम्नो इस्तिह़काम मुयस्सर आता है। लेकिन जब इन्सानों के मन घड़त क़वानीन को तरजीह़ दी जाती है तो मुआशरे में बे इन्साफ़ी, इस्तिह़साल और फ़साद फैलता है।

अल्लाह की इ़बादत की त़रफ़ दावत

नुज़ूले क़ुरआन का एक अहम मक़्सद क़ुरआने करीम में येह इरशाद फ़रमाया गया है कि येह किताब लोगों को अल्लाह की इ़बादत की त़रफ़ बुलाने और शिर्क से निकालने के लिये नाज़िल की गई, चुनान्चे फ़रमाया :

﴿اِنَّاۤ اَنْزَلْنَاۤ اِلَیْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّیْنَ(۲)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़ येह किताब ह़क़ के साथ उतारी तो अल्लाह को पूजो निरे इस के बन्दे हो कर।[3]

इसी त़रह़ सूरतुल अन्आम में भी फ़रमाया :

﴿وَ هٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَ اتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ(۱۵۵)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह बरकत वाली किताब हम ने उतारी तो उस की पैरवी करो और परहेज़गारी करो कि तुम पर रहम हो।[4]

नेकी और तक़्वा की तालीम

नुज़ूले क़ुरआन का एक मक़्सद क़ुरआने करीम में येह इरशाद फ़रमाया गया है कि येह किताब लोगों को नेकी और तक़्वा सिखाने के लिये नाज़िल की गई। सूरतुल जुमुआ में अल्लाह तआला फ़रमाता है : ﴿هُوَ الَّذِیْ بَعَثَ فِی الْاُمِّیّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ یَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیٰتِهٖ وَ یُزَكِّیْهِمْ وَ یُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ ۗ وَ اِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍۙ(۲)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोही है जिस ने अनपढ़ों में उन्ही में से एक रसूल भेजा कि उन पर उस की आयतें पढ़ते हैं और उन्हें पाक करते हैं और उन्हें किताब और हिक्मत का इल्म अ़ता फ़रमाते हैं और बेशक वोह इस से पहले ज़रूर खुली गुमराही में थे।[5]

सुरए आले इमरान में फ़रमाया : ﴿لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ اِذْ بَعَثَ فِیْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ یَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیٰتِهٖ وَ یُزَكِّیْهِمْ وَ یُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ ۚ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह क बड़ा एहसान हुवा मुसलमानों पर कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उन पर इस की आयतें पढ़ता है और उन्हें पाक करता और उन्हें किताबो हिक्मत सिखाता है।[6]

सूरतुल बक़रह में ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ السَّلَام की दुआ में येह मज़मून आया : ﴿رَبَّنَا وَ ابْعَثْ فِیْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ یَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیٰتِكَ وَ یُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ وَ یُزَكِّیْهِمْ ؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे और भेज उन में एक रसूल उन्हीं में से कि उन पर तेरी आयतें तिलावत फ़रमाए और उन्हें तेरी किताब और पुख़्ता इल्म सिखाए और उन्हें ख़ूब सुथरा फ़रमा दे।[7]

येह आयात बताती हैं कि क़ुरआन का नुज़ूल महज़ मालूमात फ़राहम करने के लिये नहीं बल्कि इन्सानों के अख़्लाक़ और किरदार को संवारने के लिये है। तज़्किये का मतलब है इन्सान को बुराइयों से पाक करना और नेकियों से आरास्ता करना। क़ुरआन झूट, चोरी, धोका, ज़ुल्म, बदगुमानी, ह़सद, बुग़्ज़, तकब्बुर जैसी तमाम अख़्लाक़ी बुराइयों से रोकता है और सच्चाई, अमानत, इन्साफ़, हुस्ने ज़न, ख़ैरख़्वाही, महब्बत तवाज़ोअ़ जैसी नेकियों की तालीम देता है। येह तज़्किया सिर्फ़ ज़ाहिरी नहीं बल्कि बातिनी भी है यानी दिल और रूह़ की पाकीज़गी। मुआ़शरे में जब लोग क़ुरआन की तालीम पर अ़मल करते हैं तो उन में बुलन्द अख़्लाक़ पैदा होते हैं, बाहमी महब्बत और एतिमाद बढ़ता है और मुआ़शरा अम्नो सुकून का गहवारा बन जाता है। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِنَّمَا بُعِثْتُ لِاُتَمِّمَ صَالِحَ الْاَخْلَاقِ में हुस्ने अख़्लाक़ की तक्मील के लिये भेजा गया हूं।[8]

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सदाक़त की दलील

नुज़ूले क़ुरआन का एक मक़्सद क़ुरआने करीम में येह इरशाद फ़रमाया गया है कि येह किताब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत और सदाक़त की वाज़ेह़ दलील है। सूरतुल अ़न्कबूत में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : ﴿وَ قَالُوْا لَوْ لَاۤ اُنْزِلَ عَلَیْهِ اٰیٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰیٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَ اِنَّمَاۤ اَنَا نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ(۵۰) اَوَ لَمْ یَكْفِهِمْ اَنَّاۤ اَنْزَلْنَا عَلَیْكَ الْكِتٰبَ یُتْلٰى عَلَیْهِمْ ؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बोले क्यूं न उतरीं कुछ निशानियां उन पर उन के रब की त़रफ़ से तुम फ़रमाओ निशानियां तो अल्लाह ही के पास हैं और मैं तो येही साफ़ डर सुनाने वाला हूं और क्या येह उन्हें बस नहीं कि हम ने तुम पर किताब उतारी जो उन पर पढ़ी जाती है।[9]

गुनाहों से निकालने का ज़रीआ़

नुज़ूले क़ुरआन का एक मक़्सद क़ुरआने करीम में येह इरशाद फ़रमाया गया है कि येह किताब लोगों को गुनाहों और तारीकियों से निकाल कर नूर और नेकियों की त़रफ़ लाने के लिये नाज़िल की गई।

सूरए इब्राहीम में फ़रमाया :

﴿الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَیْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : एक किताब है कि हम ने तुम्हारी त़रफ़ उतारी कि तुम लोगों को अन्धेरियों से उजाले में लाओ।[10]

सूरतुल ह़दीद में भी फ़रमाया :

﴿هُوَ الَّذِیْ یُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖۤ اٰیٰتٍۭ بَیِّنٰتٍ لِّیُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोही है कि अपने बन्दे पर रौशन आयतें उतारता है कि तुम्हें अन्धेरियों से उजाले की त़रफ़ ले जाए।[11]

येह आयात बताती हैं कि क़ुरआन इन्सान को गुनाह और ज़लालत की तारिकियों से निकाल कर ईमान और त़ाअ़त के नूर की त़रफ़ ले जाता है। जब इन्सान क़ुरआन की तिलावत करता है, उस के अह़काम पर अ़मल करता है और उस के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारता है तो उस के गुनाह मुआ़फ़ होते हैं, उस का दिल पाक होता है और वोह अल्लाह का मह़बूब बन्दा बन जाता है। क़ुरआन में तौबा की तरग़ीब, गुनाहों की मुआ़फ़ी की बिशारत और नेक आमाल के अज्र का तज़्किरा बार बार आता है ताकि इन्सान मायूस न हो और अल्लाह की त़रफ़ रुजूअ़ करे। मुआ़शरे में जब लोग क़ुरआन से दूर हो जाते हैं तो वोह गुनाहों मे डूबते चले जाते हैं और फिर मायूसी और नफ़्सियाती बीमारियों का शिकार हो जाते हैं, लेकिन क़ुरआन की त़रफ़ लौटने से उन्हें नई ज़िन्दगी मिलती है।

अल्लाह की रह़मत और बरकत

नुज़ूले क़ुरआन का एक मक़्सद क़ुरआने करीम में येह इरशाद फ़रमाया गया है कि येह किताब तमाम जहानों के लिये रह़मत और बरकत है।

सूरए यूनुस में फ़रमाया :

﴿یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ شِفَآءٌ لِّمَا فِی الصُّدُوْرِ ۙ۬ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِیْنَ(۵۷)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से नसीह़त आई और दिलों की सेह़त और हिदायत और रह़मत ईमान वालों के लिये।[12]

सूरए बनी इसराईल में फ़रमाया :

﴿وَ نُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِیْنَ ۙ وَ لَا یَزِیْدُ الظّٰلِمِیْنَ اِلَّا خَسَارًا(۸۲)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम क़ुरआन में उतारते हैं वोह चीज़ जो ईमान वालों के लिये शिफ़ा और रह़मत है और उस से ज़ालिमों को नुक़्सान ही बढ़ता है।[13]

येह आयात बताती हैं कि क़ुरआन अल्लाह की रह़मत का मज़हर है। येह इन्सानों के लिये दुनिया और आख़िरत में भलाई का ज़रीआ़ है। जो लोग क़ुरआन की तालीमात पर अ़मल करते हैं उन पर अल्लाह की रह़मतें नाज़िल होती हैं, उन की ज़िन्दगियों में बरकत आती है, उन के मसाइल ह़ल होते हैं और उन के दिल इत़मीनान पाते हैं। क़ुरआन की तिलावत से घरों में बरकत आती है, बीमारियों से शिफ़ा मिलती है, और शैत़ानी वसाविस दूर होते हैं। मुआ़शरे में जब क़ुरआन की ताज़ीम होती है, उस की तिलावत और तालीम का एहतिमाम होता है तो पूरे मुआ़शरे पर अल्लाह की रह़मतें बरसती हैं। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : مَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ فِي بَيْتٍ مِنْ بُيُوتِ اللّٰهِ يَتْلُونَ كِتَابَ اللّٰهِ وَيَتَدَارَسُونَهُ بَيْنَهُمْ اِلَّا نَزَلَتْ عَلَيْهِمُ السَّكِينَةُ وَغَشِيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ وَحَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ وَذَكَرَهُمُ اللّٰهُ فِيمَنْ عِنْدَهٗ जो लोग अल्लाह के घरों में से किसी घर में जमा हो कर अल्लाह की किताब की तिलावत करते हैं और आपस में उस का दर्स करते हैं तो उन पर सकीना नाज़िल होती है, रह़मत उन्हें ढांप लेती है, फ़रिश्ते उन्हें घेर लेते हैं और अल्लाह अपने पास वालों में उन का तज़्किरा करता है।[14]

तज़कीर और इ़ब्रत व सबक़

नुज़ूले क़ुरआन का एक मक़्सद क़ुरआने करीम में येह इरशाद फ़रमाया गया है कि येह किताब इन्सानों को याद दिलाने और उन की नसीह़त करने के लिये नाज़िल की गई और येह किताब गुज़श्ता क़ौमों के वाक़िआ़त बयान कर के इ़ब्रत और सबक़ फ़राहम करती है।

सूरए ص में भी फ़रमाया :

﴿كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَیْكَ مُبٰرَكٌ لِّیَدَّبَّرُوْۤا اٰیٰتِهٖ وَ لِیَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ(۲۹)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह एक किताब है कि हम ने तुम्हारी त़रफ़ उतारी बरकत वाली ताकि उस की आयतों को सोचें और अ़क़्लमन्द नसीह़त मानें।[15]

क़ुरआन का येह पहलू बहुत अहम है कि येह इन्सान को उस की अस्ल ह़क़ीक़त, उस के ख़ालिक़, उस की ज़िम्मेदारियों और आख़िरत की जवाबदही की याद दिलाता रहता है। इन्सान दुनिया की मसरूफ़िय्यात में अक्सर इन बुन्यादी सुवालात कि मैं कहां से आया, मुझे यहां क्यूं भेजा गया और मेरा अन्जाम क्या होगा ? के नताइज से ला तअ़ल्लुक़ हो जाता है। क़ुरआन बार बार इन ह़क़ाइक़ की त़रफ़ मुतवज्जेह करता है। येह तज़कीर सिर्फ़ मालूमात की नहीं बल्कि अ़मली ज़िन्दगी में अल्लाह की याद को ताज़ा रखने की है। मुआ़शरे में जब लोग अपने मक़्सदे ज़िन्दगी को भूल जाते हैं और माद्दिय्यत में खो जाते हैं तो क़ुरआन की येह तज़कीर उन्हें रूह़ानी बेदारी की त़रफ़ बुलाती है।

सूरए यूसुफ़ में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

﴿لَقَدْ كَانَ فِیْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ ؕ مَا كَانَ حَدِیْثًا یُّفْتَرٰى وَ لٰكِنْ تَصْدِیْقَ الَّذِیْ بَیْنَ یَدَیْهِ وَ تَفْصِیْلَ كُلِّ شَیْءٍ وَّ هُدًى وَّ رَحْمَةً لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ(۱۱۱)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक उन की ख़बरों से अ़क़्लमन्दों की आंखें खुलती हैं येह कोई बनावट की बात नहीं लेकिन अपने से अगले कामों की तस्दीक़ है और हर चीज़ का मुफ़स्सल बयान और मुसलमानों के लिये हिदायत व रह़मत।[16]

सूरए हूद में फ़रमाया :

﴿وَ كُلًّا نَّقُصُّ عَلَیْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और सब कुछ हम तुम्हें रसूलों की ख़बरें सुनाते हैं जिस से तुम्हारा दिल ठहराएं।[17]

क़ुरआने करीम में ह़ज़रते नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा और दीगर अम्बिया عَلَیْهِمُ السَّلَام के वाक़िआ़त, क़ौमे आ़द, समूद, फ़िरआ़ौन और दीगर ज़ालिम क़ौमों के अन्जाम और मुख़्तलिफ़ तारीख़ी वाक़िआ़त का तज़्किरा इस लिये किया गया है ताकि हम इ़ब्रत ह़ासिल करें। येह वाक़िआ़त बताते हैं कि जिन क़ौमों ने अल्लाह के रसूलों को झुटलाया, ज़ुल्मो फ़साद फैलाया और इस्लाह़ से इन्कार किया उन का अन्जाम तबाही था, और जिन्हों ने ईमान को क़बूल किया, नेक अ़मल किये और सब्र से काम लिया उन्हें अल्लाह ने कामयाबी अ़ता फ़रमाई। येह तारीख़ी सबक़ हर दौर के लिये यक्सां अहमिय्यत रखते हैं। मुआ़शरे में जब लोग तारीख़ से सबक़ नहीं सीखते तो वोह वोही ग़लतियां दोहराते हैं जो पहले लोग कर चुके हैं, लेकिन क़ुरआन की तालीमात पर अ़मल कर के हम उन ग़लतियों से बच सकते हैं।

क़ुरआने करीम के नुज़ूल के येह मक़ासिद और ह़िक्मतें बताती हैं कि येह किताब ज़िन्दगी के हर शोबे के लिये जामेअ़ राहनुमाई है। इस में अ़क़ाइद से लेकर अख़्लाक़िय्यात तक, इ़बादात से ले कर मुआ़मलात तक, इन्फ़िरादी ज़िन्दगी से ले कर इजतिमाई़ निज़ाम तक और दुनिया से ले कर आख़िरत तक हर पहलू को मुह़ीत़ किया गया है।

हमारा फ़रीज़ा है कि हम क़ुरआन की उन अ़ज़ीम ह़िक्मतों और मक़ासिद को समझें, उस की तिलावत को अपना मामूल बनाएं, इस के मआ़नी पर ग़ौर करें, उस के अह़काम पर अ़मल करें, और अपनी इन्फ़िरादी और इज्तिमाई़ ज़िन्दगियों को उस की तालीमात के मुत़ाबिक़ ढालें। जब हम ऐसा करेंगे तो दुनिया में भी कामयाबी और सुकून ह़ासिल होगा और आख़िरत में भी अबदी नजात नसीब होगी। अल्लाह तआ़ला हमें क़ुरआन को समझने, इस पर अ़मल करने और इस की रौशनी में ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(1)پ5، النسآء:105(2)پ6، المآئدۃ:49(3)پ23، الزمر:2(4)پ8، الانعام: 155(5)پ28، الجمعۃ: 2(6)پ4، اٰل عمرٰن: 164(7)پ1، البقرۃ: 129 (8)مسند احمد، 3/323، حدیث:8961(9)پ21، العنکبوت:50، 51(10)پ13، ابراھیم: 1(11)پ27، الحدید: 9(12)پ11، یونس: 57 (13)پ15، بنیٓ اسرآءیل: 82(14)مسلم، ص1110، حدیث:6853 (15)پ23، صٓ: 29 (16)پ13، یوسف:111(17)پ12، ھود:120۔

लो मदीने का फूल लाया हूं
मैं ह़दीसे रसूल लाया हूं

दिल न लगाओ

عَنْ اَبِی الْعَبَّاسِ سَهْلِ بْنِ سَعْدِ السَّاعِدِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ اِلَی النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ دُلَّنِیْ عَلٰی عَمَلٍ اِذَا عَمِلْتُهٗ اَحَبَّنِیَ اللّٰهُ وَاَحَبَّنِیَ النَّاسُ، فَقَالَ: اِزْهَدْ فِی الدُّنْیَا یُحِبُّكَ اللّٰهُ، وَازْهَدْ فِیْمَا عِنْدَ النَّاسِ یُحِبُّكَ النَّاسُ.

तर्जमा : ह़ज़रते अबुल अ़ब्बास सहल बिन सअ़द رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी ऐसे अ़मल पर रहनुमाई करें कि जब मैं वोह करूं तो अल्लाह करीम मुझ से मह़ब्बत फ़रमाए और लोग भी मह़ब्बत करें। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : दुनिया से बे रग़बत हो जाओ तो अल्लाह तुम से मह़ब्बत करेगा और लोगों के पास जो कुछ है उस से बे नियाज़ हो जाओ तो लोग तुम से मह़ब्बत करेंगे।[1]

इस ह़दीसे पाक में बुन्यादी त़ौर पर दो चीज़ों का बयान है : 1 ह़ाज़िर होने वाले शख़्स का सुवाल कि एक ही अ़मल के नतीजे में ख़ालिक़ व मख़्लूक़ दोनों मुझ से मह़ब्बत करें 2 नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इस मक़्सद को पाने के लिये ज़ोहद का अ़मल इरशाद फ़रमाना कि येह वोह अ़मल है जिस से तुम्हारा मक़्सद ह़ासिल हो जाएगा कि अल्लाह और लोग दोनों तुम से मह़ब्बत करेंगे ।

शर्हे ह़दीस

इस ह़दीसे पाक के मुख़्तलिफ़ पहलूओं पर बात की जा सकती है : मसलन ❁ मह़ब्बते ख़ल्क़ का मुत़ालबा करना कैसा ? ❁ ज़ोहद की अहमिय्यत और फ़ज़ीलत ❁ ज़ोहद की तारीफ़ ❁ ज़ोहद के दावे के सच्चे या झूटे होने का कैसे पता चलेगा ? ❁ अल्लाह अरह़मुर्राह़िमीन का अपने बन्दे से मह़ब्बत का मत़लब ❁ ज़ोहद इख़्तियार करने वाले से अल्लाह रब्बुल आ़लमीन क्यूं मह़ब्बत करता है ? ❁ अल्लाह पाक के नज़्दीक दुनिया की क्या ह़ैसिय्यत है ? ❁ कौन सी दुनिया मज़मूम है ? ❁ ज़ाहिद से लोग क्यूं मह़ब्बत करते हैं ? ❁ लोगों के माल में रग़बत रखने के नुक़्सानात और दीगर । जलीलुल क़द्र शारिह़ीने किराम ने इस ह़वाले से जो कुछ फ़रमाया इस का ख़ुलासा और निचोड़ मुलाह़ज़ा कीजिये :

लोगों की मह़ब्बत पाने की ख़्वाहिश

आने वाले के सुवाल में येह भी था कि लोग भी मुझ से मह़ब्बत करें । अगर येह ख़्वाहिश मम्नूअ़ होती तो नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आने वाले की इस्लाह़ फ़रमा देते । लिहाज़ा निय्यत अच्छी हो तो उस ख़्वाहिश में कोई ह़रज नहीं क्यूंकि मह़ब्बते ख़ल्क़ मह़ब्बते ख़ालिक़ की अ़लामत है। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ السَّلَام ने दुआ की थी : ﴿وَ اجْعَلْ لِّیْ لِسَانَ صِدْقٍ فِی الْاٰخِرِیْنَ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मेरी सच्ची नामवरी रख पिछलों में।[2]

ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान में है : यानी उन उम्मतों में जो मेरे बाद आएं चुनान्चे अल्लाह तआ़ला ने उन को येह अ़ता फ़रमाया कि तमाम अहले अदयान उन से मह़ब्बत रखते हैं और उन की सना करते हैं।

ज़ोहद की अहमिय्यत व फ़ज़ीलत

बन्दे के लिये सब से बुलन्द और अ़ज़ीम मक़्सद येह है कि वोह अपने ख़ालिक़ो मालिक का मह़बूब बन जाए। अल्लाह करीम की मह़ब्बत हर मत़लूब की इन्तिहा और हर चाहत की मन्ज़िल है। इमाम अह़मद ने किताबुज़्ज़ोहद में और इमाम बैहक़ी ने ह़ज़रते त़ाऊस से मुर्सलन रिवायत किया : اَلزُّهْدُ فِي الدُّنْيَا يُرِيحُ الْقَلْبَ وَالْبَدَنَ، وَالرَّغْبَةُ فِي الدُّنْيَا تُطِيلُ الْهَمَّ وَالْحَزَنَ यानी दुनिया से बे रग़बती (ज़ोहद) दिल और बदन को राह़त देती है, और दुनिया की रग़बत ग़म और परेशानी को बढ़ा देती है।[3]

इमाम शरफ़ुद्दीन त़ैबी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ज़ोहद से अल्लाह पाक की मह़ब्बत ह़ासिल होना इस बात पर दलील है कि ज़ोहद बहुत आला और अफ़्ज़ल अ़मल है क्यूंकि उसे अल्लाह करीम की मह़ब्बत का सबब बनाया गया है और दुनिया की मह़ब्बत अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी का सबब है।[4]

मेरा दिल पाक हो सरकार ! दुनिया की महब्बत से
मुझे हो जाए नफ़रत काश ! आक़ा मालो दौलत से[5]

ज़ोहद किसे कहते हैं ?

लुग़वी माना : اَلْاِعْرَاضُ عَنِ الشَّيْءِ اِحْتِقَارًا किसी चीज़ को ह़क़ीर समझ कर उस से मुंह मोड़ लेना।

शरई़ माना : اَلْاِقْتِصَارُ عَلٰى قَدْرِ الضَّرُوْرَةِ مِمَّا يَتَيَقَّنُ حِلَّهٗ ह़लाल होने का पूरा यक़ीन रखते हुए सिर्फ़ ब क़द्रे ज़रूरत पर इक्तिफ़ा करना।[6]

एक ह़दीसे मुबारक में है जिसे तिरमिज़ी और इब्ने माजा ने ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत किया, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ज़ोहद ह़लाल को ह़राम करने और माल ज़ाएअ़ करने का नाम नहीं, बल्कि दुनिया से बे रग़बती येह है कि तुम्हें अपने हाथ की चीज़ से अल्लाह के पास चीज़ पर ज़ियादा भरोसा हो, और मुसीबत पर मिलने वाले सवाब की रग़बत उस चीज़ से ज़ियादा हो कि वोह नेमत तुम्हारे पास बाक़ी रहती।[7]

दुनिया पर क़ुदरत रखने के बा वुजूद ज़ोहद अपनाना

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ज़ोहद उस का नाम है कि इन्सान दुनिया पर क़ुदरत रखने के बावुजूद आख़िरत की ख़ातिर दुनिया से दिल हटा ले, चाहे जहन्नम के ख़ौफ़ से हो, या जन्नत की रग़बत से, या ह़क़ तआ़ला के सिवा तवज्जोह हर चीज़ से हटाने के सबब। और येह कैफ़िय्यत उस वक़्त तक पैदा नहीं होती जब तक सीना नूरे यक़ीन से खुल न जाए। और उस शख़्स से ज़ोहद का तसव्वुर नहीं किया जा सकता जिस के पास न माल हो और न मरतबा।[8]

मैं ने किस चीज़ में ज़ोहद इख़्तियार किया है ?

ह़ज़रते इब्ने मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه को किसी ने पुकारा : "ऐ ज़ाहिद !" तो उन्हों ने फ़रमाया : अस्ल ज़ाहिद तो उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه हैं, जिन के पास दुनिया ख़ुद चल कर आई और उन्हों ने इसे छोड़ दिया, और मैं ने किस चीज़ में ज़ोहद इख़्तियार किया है (कि तुम ने मुझे ज़ाहिद पुकारा) ?

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़िकायत के बारे में फ़रमाते हैं : येह कामिल ज़ोहद की वज़ाह़त है, वरना ज़ोहद की अस्ल ह़क़ीक़त किसी चीज़ की त़रफ़ मैलान न रखने का नाम है, और ह़क़ीक़त में येह कैफ़िय्यत अल्लाह की एक ख़ास कशिश के बग़ैर ह़ासिल नहीं होती जो सालिक को फ़ानी चीज़ों से हटा दे और बाक़ी रहने वाली ह़ालतों में मश़ग़ूल कर दे।[9]

ज़ोहद का दावा सच्चा या झूटा होने की दलील

मिरक़ातुल मफ़ातीह़ में है : नफ़्स ज़ोहद का दावा करता है तो उस की सच्चाई या झूट उसी वक़्त ज़ाहिर होता है जब दुनिया मुयस्सर हो और क़ुदरत ह़ासिल हो, और दुनिया न होने की ह़ालत में

बात दो एहतिमालों के दरमियान रहती है, और अल्लाह बेहतर जानता है।[10]

ज़ोहद का नतीजा

ज़ोहद का नतीजा दुनिया से बक़द्रे ज़रूरत पर क़नाअ़त है और इस से मुराद इतना खाना कि जिस से भूक मिट जाए और ऐसा लिबास कि जिस से सत्र छुप जाए और ऐसा घर कि जो उसे सर्दी व गर्मी से बचाए और इतना सामान कि जिस की उसे ज़रूरत होती है।[11]

अ़क़्लमन्द कौन ?

ज़ोहद इख़्तियार करने वाले अ़क़्लमन्द तरीन लोग होते हैं क्यूंकि उन्हों ने उसी चीज़ से महब्बत की जिस से अल्लाह महब्बत करता है, और उसी चीज़ को नापसन्द किया जिसे अल्लाह नापसन्द करता है यानी दुनिया को जमा करने को, और उन्हों ने अपने नफ़्स को राहत में रखा। इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर मुझे अ़क़्लमन्द तरीन लोगों के लिये वसिय्यत करनी हो तो मैं ज़ाहिदों के हक़ में करूं।[12]

बड़ा ज़ाहिद कौन है ?

बैहक़ी ने ह़ज़रते ज़ह्हाक़ से मुर्सल रिवायत किया : एक शख़्स बारगाहे नबवी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : सब से बड़ा ज़ाहिद कौन है ? फ़रमाया : सब से ज़ियादा ज़ाहिद वोह है जो क़ब्र और बोसीदा होने को न भूले, दुनिया की बेहतरीन, ज़ीनत छोड़ दे, बाक़ी रहने वाली चीज़ को फ़ानी चीज़ पर तरजीह़ दे, कल को अपने दिनों में शुमार न करे और ख़ुद को मुर्दों में शुमार करे।[13]

नबी के नूर का सदक़ा ख़ुदाया जगमगा देना
करम ! या रब ! अन्धेरा क़ब्र का मुझ को डराता है[14]

सूफ़िया के नज़्दीक ज़ोहद का ख़ुलासा

सूफ़िया के नज़्दीक ज़ोहद का मत़लब है कोशिश के साथ किसी चीज़ की रग़बत दिल से हटा देना, और उस के तीन दर्जे हैं : **पहला :** शुब्हात से ज़ोहद, अल्लाह की नाराज़ी से बचने के लिये। **दूसरा :** ज़रूरत से ज़ाइद खाने पीने से ज़ोहद ताकि मुराक़बे में मश्ग़ूल हो कर वक़्त का दुरुस्त इस्तिमाल करे। **तीसरा :** तुम अपने ज़ोहद को रब की अ़ज़मत के सामने कोई अहमिय्यत न दो और तुम्हारे नज़्दीक ज़ोहद का होना और उस का न होना दोनों का बराबर हो जाना।[15]

अल्लाह तुम से महब्बत करेगा

जब बन्दा ज़ोहद इख़्तियार करेगा तो अल्लाह उस से महब्बत फ़रमाएगा, इस लिये कि बन्दे ने उस चीज़ से एराज़ किया जिस से अल्लाह ने एराज़ फ़रमाया, और जिस की त़रफ़ उस ने पैदाइशे दुनिया के बाद कभी नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाई। (जैसा कि ह़दीस में आया है) और येह बात समझाई गई है कि अगर तुम दुनिया से महब्बत करोगे तो अल्लाह तुम से नाराज़ हो जाएगा, क्यूंकि उस की महब्बत दुनिया की महब्बत के न होने के साथ है। नीज़ इस लिये भी कि अल्लाह तआ़ला उस से महब्बत करता है जो उस की इताअ़त करे, और अल्लाह की महब्बत और दुनिया की महब्बत जमा नहीं हो सकतीं, क्यूंकि दिल रब का घर है, और वोह पसन्द नहीं करता कि अपने घर में किसी और को शरीक किया जाए। और अल्लाह की महब्बत से मुराद सवाब अ़ता करना है।[16]

महब्बत में अपनी गुमा या इलाही
न पाउं मैं अपना पता या इलाही
रहूं मस्तो बेख़ुद मैं तेरी विला में
पिला जाम ऐसा पिला या इलाही[17]

फिर जिस दुनिया की मज़म्मत की गई है, उस से मुराद ज़रूरत से ज़ाइद दुनिया है। रही ज़रूरत की ह़द तक दुनिया त़लब करना तो वोह वाजिब है। बाज़ उ़लमा ने कहा : ज़रूरत की ह़द तक ह़ासिल करना दुनिया में शुमार ही नहीं होता, अस्ल दुनिया वोह है जो किफ़ायत से ज़ाइद हो। इसी पर अल्लाह तआ़ला का येह फ़रमान दलील है :

﴿زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَ الْبَنِيْنَ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : लोगों के लिये उन की ख़्वाहिशात की महब्बत को आरास्ता कर दिया गया यानी औ़रतों और बेटों।[18]

येह आयत वुस्अ़त और ऐ़श त़लबी की त़रफ़ इशारा करती है।[19]

दुनिया से महब्बत की महमूद सूरत

मालो दौलत और दुनिया की ऐसी महब्बत मज़मूम है जो शहवाते नफ़्सानी की तक्मील के लिये हो क्यूंकि ऐसी महब्बत इन्सान को अल्लाह पाक की याद से ग़ाफ़िल कर देती है। बहरहाल भलाई के काम करने, मोहताज की हाजत रवाई करने, सितम रसीदा की मदद करने, तंगदस्त को खाना खिलाने के लिये माल से महब्बत करना इबादत है।[20] लेकिन येह भी ख़याल रहे कि अगर कोई शख़्स लोगों पर फ़ख़्र, घमन्ड और लोगों पर बरतरी जताने के लिये दुनिया मिलने पर ख़ुश हो तो येह मज़मूम है, और अगर अल्लाह के फ़ज़्ल पर शुक्र के तौर पर ख़ुश हो तो येह क़ाबिले तारीफ़ है।[21]

अल्लाह और किस किस से महब्बत फ़रमाता है ?

अल्लाह तआला ऐसे लोगों से महब्बत फ़रमाता है जिन में दर्जे ज़ैल औसाफ़ पाए जाते हों। क़ुरआने मजीद में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर इन का ज़िक्र आया है : ईमान, तक़्वा, सब्र, नेकी, इन्साफ़, पाकीज़गी, तौबा और तवक्कुल इख़्तियार करने वालों से।

लोगों के पास जो कुछ है उस से बे रग़बत रहो

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुनिया से बे रग़बती के साथ साथ इस से भी बे रग़बत रहने का फ़रमाया है जो कुछ लोगों के पास है यानी : माल और मरतबा।[22]

जब इन्सान येह कर लेगा तो उसे येह इन्आम मिलेगा कि लोग उस से महब्बत करेंगे क्यूंकि लोगों के दिलों में दुनिया की महब्बत फ़ित़री त़ौर पर रखी गई है और येह महब्बत उन के दिलों पर नक़्श हो गई है तो जो कोई इन्सान से उस की पसन्दीदा चीज़ में झगड़ता है तो इन्सान उस से नफ़रत करता है और उसे छोड़ देता है और जो कोई इन्सान की पसन्दीदा चीज़ में उस के मुक़ाबले में नहीं आता इन्सान उस से महब्बत करता है और उसे इ़ज़्ज़त देता है। इसी लिये मश्हूर ताबेई ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : "लोग आदमी की इ़ज़्ज़त करते रहते हैं यहां तक कि जब वोह उन की दुनिया का ख़्वाहिशमन्द होता है तो वोह उसे ह़क़ीर समझते हैं और उस की बात को भी नापसन्द करते हैं।" मन्क़ूल है कि अहले बसरा में से किसी से पूछा गया कि तुम्हारा सरदार कौन है ? उस ने जवाब दिया : ह़ज़रते ह़सन बसरी (رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه), पूछने वाले ने कहा : उन्हें तुम्हारे नज़दीक येह मक़ामो मरतबा क्यूं ह़ासिल है ? उस ने कहा : हम उन के इ़ल्म से दलील पकड़ते हैं और वोह हमारी दुनिया से बेनियाज़ हैं।[23]

सोचने की बात

फ़ी ज़माना माह़ौल ऐसा है कि दुनिया और मालो मरतबा की महब्बत सर चढ़ कर बोल रही है। जिस को देखो दुनिया की तरक़्क़ी के लिये कोशां और माल के लालच में मुब्तला है। ऐसे में ज़ोहद इख़्तियार करने की सोच दक़्यानूसी क़रार दी जाती है ह़ालांकि ज़ोहद जन्नत के रास्ते पर ले जाता है। ज़ोहद से अल्लाह करीम की महब्बत ह़ासिल होती है और लोग भी ऐसे शख़्स से महब्बत करते हैं लेकिन अफ़सोस हमारे यहां सब कुछ उलट हो रहा है, फ़ैसला हमारे हाथ में है कि ज़ोहद इख़्तियार कर के ख़ालिक़ और मख़्लूक़ के प्यारे बन जाएं या दुनिया और माल की महब्बत में मुब्तला हो कर रह जाएं।

---

(1)شعب الایمان، 7/344، حدیث:10523(2)پ19، الشعراء:84(3)الزہد لاحمد، ص35، حدیث:51(4)شرح الطیبی،9/351، تحت الحدیث:5187(5)وسائل بخشش، ص408(6)فیض القدیر،1/615، تحت الحدیث:960 (7)دیکھیے: ترمذی،4/152، حدیث:2347(8)مرقاۃ، 9/41، تحت الحدیث: 5187(9)مرقاۃ، 9/41، تحت الحدیث:5187(10)مرقاۃ،9/41، تحت الحدیث:5187(11)مرقاۃ،9/41، تحت الحدیث:5187(12)اربعین للنووی، ص107، تحت الحدیث:31(13)شعب الایمان، 7/355، حدیث:10565(14)وسائل بخشش، ص442(15) مرقاۃ،9/41، تحت الحدیث:5187(16)دیکھیے: فیض القدیر، 1/615، تحت الحدیث:960(17)وسائل بخشش، ص108(18)پ3، اٰل عمرٰن:14 (19)اربعین للنووی، ص 108، تحت الحدیث:31(20)دلیل الفالحین، 2/402، تحت الحدیث :471(21)اربعین للنووی، ص:109، تحت الحدیث: 31 (22)دیکھیے: مرقاۃ، 9/40، تحت الحدیث: 5187 (23)دیکھیے: فیض القدیر، 1/615، تحت الحدیث:960۔

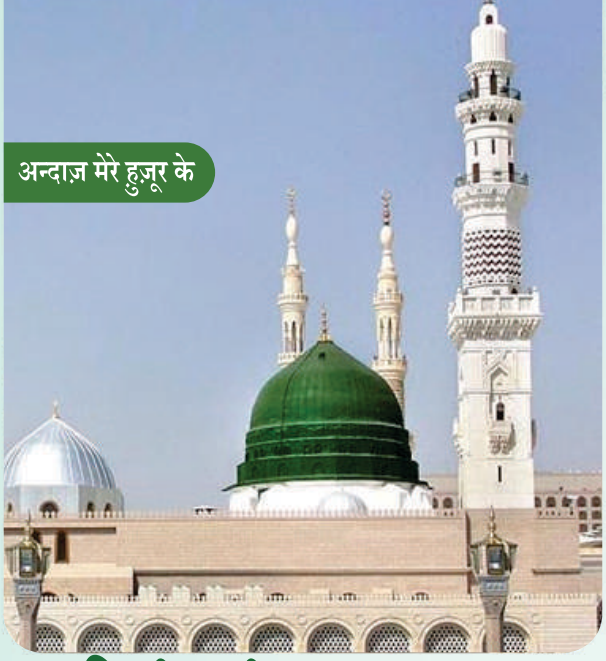

अन्दाज़ मेरे हुज़ूर के

आख़िरी नबी صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم मुहम्मदे अ़रबी का अन्दाज़े तबस्सुम

(क़िस्त : 01)

अल्लाह करीम ने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कैसी शान अ़ता फ़रमाई है कि आप की अदा को हुक्मे शरीअ़त का दर्जा ह़ासिल हुवा नीज़ रब्बे करीम ने ह़दीसे रसूल उम्मत के बेहतरीन अफ़राद यानी सह़ाबए किराम के ज़रीए हम तक पहुंचाने का एहतिमाम फ़रमाया यूं ह़दीसे रसूल सिर्फ़ ज़बान से कही हुई बात में मुन्ह़सिर नहीं रही बल्कि आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़िन्दगी की पूरी तफ़्सील ह़दीस क़रार पाई । इस पहलू पर ग़ौर कीजिये तो हर सह़ाबिये नबी की आंखों पर क़ुरबान होने को दिल चाहेगा कि दीदारे मुस्तफ़ा की बदौलत इन ह़ज़रात को वोह रुत्बा ह़ासिल हुवा कि जिस तक अब कोई कभी भी नहीं पहुंच सकता।

कुछ ऐसा कर दे मेरे किरदगार आंखों में
हमेशा नक़्श रहे रूए यार आंखों में
उन्हें न देखा तो किस काम की हैं येह आंखें
कि देखने की है सारी बहार आंखों में[1]

आ़दते मुस्तफ़ा मुस्कुराहट हमारे आक़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़दते करीमा थी।[2] जिन हस्तियों को आप का मुबारक तबस्सुम देखना नसीब हुवा, उन्हों ने उन मनाज़िर की तस्कीन को दिलो दिमाग़ में महफ़ूज़ किया जैसा कि 1 रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब दुनिया में आए, ह़ज़रते ह़लीमा सअ़दिया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ह़ाज़िर हुईं तो आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़ेद ऊनी कपड़े में लिपटे हुए सब्ज़ रेशमी बिछौने पर आराम फ़रमा थे। ह़ज़रते ह़लीमा ने आहिस्तगी से सीनए मुबारका पर हाथ रखा, प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुस्कुरा दिये और मुबारक आंखें खोल दीं, जिन से एक नूर निकला और आस्माने बरीं तक जा पहुंचा।[3] 2 ह़ज़रते जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान करते हैं: हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे जब भी देखते तो मुस्कुरा कर देखते।[4] 3 ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिस बिन जज़्अ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ कहते हैं: मैं ने किसी को नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बढ़ कर तबस्सुम फ़रमाने वाला नहीं देखा।[5]

जिस की तस्कीं से रोते हुए हंस पड़ें
उस तबस्सुम की आ़दत पे लाखों सलाम

अन्दाज़े तबस्सुम उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं ने कभी नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस त़रह़ खुल कर हंसते नहीं देखा कि आप के तालू का गोश्त नज़र आता हो। आप सिर्फ़ तबस्सुम फ़रमाया करते थे।[6]

आख़िरी नबी कब कब मुस्कुराए ?

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अन्दाज़ से हमें चेहरे के ज़रीए ख़ुशी का इज़्हार करना सिखाया नीज़ येह भी सिखाया कि येह इज़्हार कब कब करना है ? आइये ! चन्द वाक़िआ़त को मुन्तख़ब उ़नवानात के तह़त समझते हैं :

1 अल्लाह की शाने करम नवाज़ी के ज़िक्र पर मुस्कुराहट

अल्लाह की शाने करीमी दिलो दिमाग़ में बैठ जाए तो शरई अह़काम पर अ़मल में बहुत आसानी हो जाती है, आख़िरी नबी

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अल्लाह की शाने करीमी ज़ेहन नशीन करवाने का अन्दाज़ देखिये चुनान्चे एक मौक़अ पर आप ने फ़रमाया : बिलाशुबा मैं जहन्नम से निकलने वाले आख़िरी शख़्स को जानता हूं और जन्नत में जाने वाले आख़िरी शख़्स को जानता हूं। एक बन्दा जहन्नम से घिसटता हुवा निकलेगा, अल्लाह करीम उस से फ़रमाएगा : जा ! जन्नत चला जा। चुनान्चे उसे जन्नत जा कर येह ख़याल आएगा कि वोह तो भरी हुई है लिहाज़ा वोह वापस आ कर अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब ! मुझे तो वोह भरी हुई मिली है ! अल्लाह करीम फ़रमाएगा : जा ! जन्नत चला जा। चुनान्चे उसे जन्नत जा कर येह ख़याल आएगा कि वोह तो भरी हुई है लिहाज़ा वोह (अल्लाह पाक से मुनाजात करने के मक़ाम पर) वापस आ कर अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब ! मुझे तो वोह भरी हुई मिली है ! अल्लाह करीम उस से फ़रमाएगा : जा ! जन्नत चला जा, तेरे लिये दुनिया जितनी बल्कि उस से दस गुना (ज़ियादा जगह) है। आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : वोह (बेतहाशा ख़ुश हो कर) कहेगा : तू बादशाह हो कर हंसी फ़रमाता है। येह फ़रमा कर रहमते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इतना मुस्कुराए कि आप के मुबारक दांत ज़ाहिर हो गए।[7]

आइये ! मुस्तफ़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस अन्दाज़ को हम भी अपना लें, मुस्कुराहट के साथ अपनी गुफ़्तगू में रब की नेमतों और रहमतों का चर्चा करें तो उम्मीद के चराग़ रौशन हो जाएंगे और ना उम्मीदी का अन्धेरा ख़त्म होगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ الْکَرِیْم

2 ख़ौफ़ की कैफ़िय्यत दूर हो जाने पर मुस्कुराहट

बारगाहे रिसालत में एक शख़्स आया और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं हलाक हो गया। आप ने पूछा : किस चीज़ ने तुझे हलाक किया ? उस ने अ़र्ज़ की : मैं ने रोज़े की हालत में अपनी ज़ौजा से सोहबत कर ली है। आप ने पूछा : क्या तुम्हारे पास कोई ग़ुलाम है जिसे तुम कफ़्फ़ारा के तौर पर आज़ाद कर दो ? उस ने अ़र्ज़ की : नहीं। आप ने फ़रमाया : क्या तुम लगातार दो महीने के रोज़े रख सकते हो ? अ़र्ज़ की : नहीं। आप ने एक और सुवाल किया : क्या तुम साठ मिस्कीनों को खाना खिला सकते हो ? अ़र्ज़ की : नहीं। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुछ देर तवक़्क़ुफ़ फ़रमाया, इतने में आप की बारगाह में खजूरों का एक टोकरा पेश किया गया तो आप ने पूछा कि वोह शख़्स कहां है ? उस ने अ़र्ज़ की : मैं हाज़िर हूं। आप ने उस से फ़रमाया : येह टोकरा लो और उस की खजूरें सदक़ा कर दो। अ़र्ज़ की : क्या मुझ से बढ़ कर भी कोई हाजतमन्द होगा ? अल्लाह की क़सम ! इस ज़मीन के दोनों किनारों (उस की मुराद मदीनए मुनव्वरा की एक ज़मीन थी) के दरमियान कोई घर वाला मेरे घर वालों से ज़ियादा मोहताज नहीं। (उस की येह बात सुन कर) रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इतना मुस्कुराए कि आप के सामने के नोकीले दांत ज़ाहिर हो गए। फिर आप ने फ़रमाया : (जाओ) उसे अपने घर वालों को खिला दो।[8]

हुवा अगर शाने तबस्सुम का करम
सुब्ह हो जाए शब दीजोरे ग़म[9]

ग़ौर तो कीजिये कि जब येह शख़्स बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवा तो किस क़द्र ख़ौफ़ज़दा था, दरे हुज़ूर पर सब कुछ कह दिया, मुराद पूरी हुई बल्कि तबस्सुमे मुस्तफ़ा के ज़रीए रिज़ाए मुस्तफ़ा की नेमत भी नसीब हुई। तो फिर हम भी येह अ़हद न कर लें कि परेशान हाल मुसलमानों की मुश्किलात दूर करने के लिये तय्यार रहेंगे और मुस्कुराहट के ज़रीए उन के बेचैन दिल को राहत पहुंचाने का सामान भी करेंगे।

---

(1) सामाने बख़्शिश, स. 145 (2) मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 14 (3) حجۃ اللہ علی العالمین، ص190 (4) بخاری، 2/320، حدیث:3035 (5) ترمذی، 5/366، حدیث: 3661 (6) بخاری، 4/125، حدیث: 6092 (7) مسلم، ص99، حدیث: 461، الدیباج علی المسلم، 1/243، دلیل الفالحین، 8 / 735 (8) بخاری، 1 / 638، حدیث : 1936، याद रहे इस त़रह से कफ़्फ़ारे की अदाएगी उन सहाबी के ह़क़ में हुज़ूर का ख़ुसूसी इख़्तियार था, और येह हुक्म सिर्फ़ उन ही सहाबी के साथ ख़ास है। (9) ज़ौक़े नात, स. 298।

मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी मुज़ाकरों में अ़क़ाइद, इ़बादात और मुआ़मलात के मुत़अ़ल्लिक़ किये जाने वाले सुवालात के जवाबात अ़त़ा फ़रमाते हैं, उन में से 9 सुवालात व जवाबात काफ़ी तरमीम के साथ यहां दर्ज किये जा रहे हैं।

1 ई़दुल फ़ित्र का नाम मीठी ई़द क्यूं है ?

सुवाल : ई़दुल फ़ित्र को मीठी ई़द क्यूं कहते हैं ?

जवाब : ई़दुल फ़ित्र को मीठी ई़द शायद इस लिये कहा जाता है कि इस ई़द में ई़द की नमाज़ से पहले त़ाक़ अ़दद में (यानी Odd मसलन एक, तीन, पांच, सात) खजूरें खाई जाती हैं जो कि मुस्तह़ब है। खजूरें न हों या नहीं खा सकते तो कोई सी मीठी चीज़ खा लीजिये।

(मदनी मुज़ाकरा, यकुम शव्वालुल मुकर्रम, 1441 हि.)

2 ज़कात की रक़म तोह़फ़ा या ई़दी कह कर देना कैसा ?

सुवाल : अगर किसी रिश्तेदार को ज़कात की रक़म दें तो क्या उन्हें बताना ज़रूरी है कि येह रक़म ज़कात की है ?

जवाब : अगर ज़कात के ह़क़दार को तोह़फ़ा या ई़दी कह कर ज़कात दी तो अदा हो जाएगी, ज़कात कहना ज़रूरी नहीं है, क्यूंकि बाज़ औक़ात सामने वाला सफ़ेद पोश होता है और ज़कात के नाम से लेना उस पर गिरां गुज़रता है। (मदनी मुज़ाकरा, 6 मुह़र्रमुल ह़राम शरीफ़, 1441 हि.)

3 एक शेर की वज़ाह़त

सुवाल : आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इस शेर की वज़ाह़त फ़रमा दीजिये।

अहले अ़मल को उन के अ़मल काम आएंगे
मेरा है कौन तेरे सिवा आह ! ले ख़बर !

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 68)

जवाब : इस शेर में आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमा रहे हैं कि क़ियामत के दिन नेक बन्दों को तो उन के नेक आमाल काम आ जाएंगे, या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप के सिवा क़ियामत में मेरा कोई न होगा। इसी त़रह़ का किसी और का शेर है।

मेरे तो आप ही सब कुछ हैं रह़मते आ़लम
मैं जी रहा हूं ज़माने में आप ही के लिये

(मदनी मुज़ाकरा, यकुम शव्वालुल मुकर्रम 1441 हि.)

4 औ़रत का नमाज़ में ऊंची आवाज़ से क़िराअ़त करना कैसा ?

सुवाल : घर में औ़रत अकेली हो तो क्या वोह ऊंची आवाज़ में नमाज़ में क़िराअत कर सकती है ?

जवाब : औ़रत को बुलन्द आवाज़ से नमाज़ में क़िराअत करने की इजाज़त नहीं, सिर्फ़ इतनी आवाज़ से क़िराअत करेगी कि उस के अपने कानों तक आवाज़ पहुंच जाए।

(मदनी मुज़ाकरा, 5 रबीउ़ल अव्वल 1441 हि.)

5 औ़रत का नाक न छिदवाना कैसा ?

सुवाल : अगर औ़रत नाक न छिदवाए तो क्या गुनहगार होगी ?

जवाब : गुनाह नहीं है। अब तो शायद औ़रतों के नाक छिदवाने का रिवाज कम हो गया है, इस की जगह स्टीकर चस्पां करते हैं। अलबत्ता ! कान छिदवाने का रिवाज बाक़ी है येह भी कब ख़त्म हो जाए कोई पता नहीं, हो सकता है कान का भी कोई ऐसा स्टीकर आ जाए जो मज़बूती से चस्पां हो जाए तो शायद कान छिदवाने का रिवाज भी ख़त्म हो जाएगा।

(मदनी मुज़ाकरा, 10 रमज़ानुल मुबारक 1441 हि.)

6 बच्चों में पढ़ाई का शौक़ पैदा करने का त़रीक़ा

सुवाल : बच्चों का पढ़ाई में दिल नहीं लगता, उन का दिल पढ़ाई में कैसे लगाएं ?

जवाब : अगर बच्चा क़ुरआने करीम पढ़ने में दिल नहीं लगाता तो उस का शौक़ बढ़ाने के लिये वक़्तन फ़ वक़्तन कोई न कोई चीज़ दी जाए कि बेटा ! सबक़ पढ़ो तुम्हें येह चीज़ मिलेगी मसलन खाने की कोई चीज़ दे दी जो उसे पसन्द हो और सेहत के लिये नुक़्सान देह भी न हो। इसी त़रह़ नोट या सिक्का दिखा दिया अगर सबक़ पढ़ोगे तो येह मिलेगा और अगर पढ़ ले तो अपना कहा पूरा करे। बच्चे की पसन्द की चीज़ देंगे तो उसे जज़्बा मिलेगा और जोश में आ कर पढ़ेगा, लेकिन हमेशा इस त़रह़ करेंगे तो बच्चे की आ़दत ख़राब हो सकती है कि कोई चीज़ मिले तो पढ़े वरना न पढ़े। बहर ह़ाल बच्चे में पढ़ाई का शौक़ पैदा करने के लिये कोई चीज़ दे कर या बग़ैर कोई चीज़ दिये ह़िक्मते आ़मली और प्यार से बहला फुस्ला कर पढ़ने की आ़दत डलवाइये, जब आ़दत पड़ जाएगी तो اِنْ شَآءَاللّٰہ الْکَرِیْم पढ़ता रहेगा।

(मदनी मुज़ाकरा, 29 रमज़ानुल मुबारक 1441 हि.)

7 सब से पहले टिड्डी हलाक होगी फिर दीगर मख़्लूक़ात

सुवाल : क्या दुनिया में सब से पहले टिड्डियां ख़त्म होंगी ?

जवाब : ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के ज़मानए ख़िलाफ़त में पूरे एक साल तक टिड्डियां नज़र न आयी तो आप बहुत ग़मगीन हो गए, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने यमन, इराक़ और शाम की त़रफ़ एक एक सुवार भेजा ताकि वोह टिड्डियों के बारे में मालूमात करें कि शायद किसी ने कोई टिड्डी देखी हो। जब यमन की त़रफ़ भेजा जाने वाला सुवार वापस लौटा तो उस के हाथ में कुछ टिड्डियां थीं जो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के सामने डाल दी गईं जिन्हें देख कर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई और बुलन्द आवाज़ से अल्लाहु अक्बर का नारा लगाया और फ़रमाया : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि अल्लाह पाक ने 1000 मख़्लूक़ात को पैदा किया है जिन में से 600 दरिया में और 400 ख़ुश्की में हैं। सब से पहले टिड्डी हलाक होगी फिर आहिस्ता आहिस्ता दीगर मख़्लूक़ात भी हलाक होती जाएंगी।

(دیکھئے: شعب الایمان، 7/234، حدیث:10132) ह़ज़रते फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के ख़ौफ़े ख़ुदा का येह आ़लम था कि आस पास सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم मौजूद हैं और दज्जाल का भी ज़ुहूर नहीं हुवा लेकिन फिर भी टिड्डियों के नज़र न आने से घबरा गए।

(देखिये : मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 274 – मदनी मुज़ाकरा, 15 शव्वालुल मुकर्रम 1441 हि.)

8 क्या पतीली में खाना खाने वाले की शादी में बारिश होती है ?

सुवाल : लोगों में येह बात मश्हूर है कि "पतीली में खाना खाने वाले की शादी में बारिश हो जाती है !" क्या येह बात दुरुस्त है ?

जवाब : आ़वाम का येह ख़याल ग़लत़ है। पतीली में वैसै भी खाने का उ़र्फ़ नहीं है, प्लेट वग़ैरा में खाया जाता है। हां ! अगर किसी को भूक ज़ियादा लगी हो और प्लेट न हो या यूं ही पतीली से खा ले तब भी ह़रज नहीं। (मदनी मुज़ाकरा, 2 ज़ुल हुज्जतुल ह़राम 1441 हि.)

9 मय्यित को ग़ुस्ल देने वाले का इमामत करना कैसा ?

सुवाल : क्या मय्यित को ग़ुस्ल देने वाला शख़्स नमाज़े जनाज़ा पढ़ा सकता है या इमामत करवा सकता है ?

जवाब : जी हां। अगर कोई शख़्स मय्यित को ग़ुस्ल देता है तो वोह अज़ान भी दे सकता है, इमामत का अहल है तो नमाज़ भी पढ़ा सकता है, जुमुआ पढ़ाने का अहल है तो जुमुआ भी पढ़ा सकता है और निकाह़ भी पढ़ा सकता है। मय्यित को ग़ुस्ल देने से कोई ख़राबी पैदा नहीं होती और न मय्यित को ग़ुस्ल देने वाले शख़्स पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ होता है। अलबत्ता मय्यित को ग़ुस्ल देने के बाद नहा लेना मुस्तह़ब है। अगर कोई मय्यित को ग़ुस्ल देने के बाद नहीं नहाता तो वोह गुनाहगार नहीं है। (मदनी मुज़ाकरा, 25 ज़ुल हिज्जतुल ह़राम 1441 हि.)

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (दावते इस्लामी) मुसलमानों की शरई राहनुमाई में मसरूफ़े अमल है, तहरीरी, ज़बानी, फ़ोन और दीगर ज़राए से हज़ारहा मुसलमान शरई मसाइल दरयाफ़्त करते हैं, जिन में से चार मुन्तख़ब फ़तावा ज़ैल में दर्ज किये जा रहे हैं।

1 बेअमली के बावुजूद दूसरों को नेकी की दावत देने का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए दीन इस मस्अले के बारे में कि आज कल येह जुम्ला बोला जाता है कि "हम तो ख़ुद गुनहगार हैं दूसरों को क्या नेकी की दावत दें।" मुझे येह रहनुमाई चाहिये थी कि इस जुम्ले की क्या हक़ीक़त है? क्या दूसरों को नेकी की दावत देने के लिये ख़ुद का बा अमल होना ज़रूरी है? या ख़ुद के अमल में कमज़ोरी होने के बावुजूद भी दूसरों को नेकी की दावत दे सकते हैं? तफ़्सीलन रहनुमाई फ़रमा दें।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

नेकी की दावत देना और बुराई से मना करना उम्मते मुहम्मदिया के नुमायां औसाफ़ में से एक वस्फ़ है, इसी अज़ीम ख़ूबी के सबब ख़ालिक़े काइनात عَزَّوَجَلَّ ने इस उम्मत को सब से बेहतरीन उम्मत क़रार दिया, तो जिस तरह हर मुसलमान का अपने आप को गुनाहों से बचाना ज़रूरी है, इसी तरह अपने अहले ख़ाना और दूसरे मुसलमानों को भी बक़द्रे ताक़त व तौफ़ीक़, हिक्मते अमली से गुनाहों से रोकना लाज़िम है। नीज़ ख़ुद के अमल में कोताही अगर्चे सहीह नहीं कि येह भी अल्लाह पाक की नाराज़ी का सबब है, लेकिन उस कोताही की वज्ह से दूसरों को नेकी की दावत देने और बुराई से मना करने वाले फ़रीज़ा से सुबुकदोशी नहीं मिलेगी, क्यूंकि ख़ुद नेक काम करना और गुनाहों से बचना एक वाजिब है और दूसरों को बक़द्रे ताक़त गुनाहों से रोकना दूसरा वाजिब है, अगर एक वाजिब पर अमल नहीं है, तो होना येह चाहिये कि इस कमी को पूरा किया जाए, न कि जुर्म पर मज़ीद जुर्म करते हुए दूसरे वाजिब को भी छोड़ दिया जाए। लिहाज़ा सुवाल में बयान कर्दा जुम्ला कि **"हम तो ख़ुद गुनहगार हैं दूसरों को क्या नेकी की दावत दें"** दुरुस्त नहीं है, हम पर लाज़िम है कि शरीअते मुतहहरा पर चलते हुए ख़ुद भी गुनाहों से बचें दूसरों को भी बक़दरे ताक़त, हिक्मते अमली से बचाएं।

नोट : ऐसी जगह जहां ज़न्ने ग़ालिब हो कि सामने वाला नहीं मानेगा या फ़ित्ना व फ़साद होगा, वहां नेकी की दावत देना और बुराई से मना करना, लाज़िम नहीं है।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 सलाम के सवाब की जवाबे सलाम के सवाब से ज़ियादती की हिक्मत

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए दीन व मुफ़्तियाने किराम इस मस्अले के बारे में कि सलाम करने वाले को ज़ियादा नेकियां मिलती हैं, जब कि सलाम का जवाब देने वाले को कम। हालांकि सलाम करना सुन्नत और जवाब देना वाजिब है, और वाजिब का सवाब सुन्नत से ज़ियादा होता है। लेकिन यहां सुन्नत का सवाब वाजिब से ज़ियादा है। इस की क्या वज्ह है?

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

शरई उसूल येही है कि वाजिब का सवाब, वाजिब होने की वज्ह से, सुन्नत से ज़ाइद होता है जिस की वज्ह से कोई भी सुन्नत अमल सिर्फ़ इस वज्ह से कि वोह सुन्नत है, वाजिब से अफ़्ज़ल नहीं हो सकता। वाजिब अपनी हक़ीक़त और शरई दर्जा बन्दी के लिहाज़ से हमेशा सुन्नत से अफ़्ज़ल और मुक़द्दम रहेगा। ताहम बसा औक़ात

ऐसा होता है कि कम दर्जे वाले अ़मल (मसलन सुन्नत व नफ़्ल) के ज़िम्न में चन्द ऐसे फ़ज़ाइल, अस्बाब या इज़ाफ़ी ख़ुसूसिय्यात पाई जाती हैं जिन की वज्ह से उस का सवाब ज़ियादा दर्जे वाले अ़मल (फ़र्ज़ व वाजिब) से बढ़ जाता है, लेकिन येह फ़ज़ीलत ख़ास उस ख़ारिजी सबब की वज्ह से होती है न कि सुन्नत या नफ़्ल होने की वज्ह से। मुलाक़ात के वक़्त सलाम करना और जवाब देना दोनों ही मुसलमान भाई से इज़हारे महब्बत व मुवद्दत का ज़रीआ़ है, लेकिन चूंकि सलाम करने वाला इस नेकी में पहल करता है इस वज्ह से उसे ज़ियादा सवाब ह़ासिल होता है कि ह़दीसे पाक के मुत़ाबिक़ नेकी में पहल करना जवाबी इक़्दाम से कई गुना अफ़्ज़लो आला हुवा करता है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 एक फ़क़ीरे शरई़ को एक से ज़ाइद क़िस्मों के कफ़्फ़ारे देने का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरअ़ मतीन इस मस्अले में कि क़सम के कफ़्फ़ारे में एक फ़क़ीरे शरई़ को एक दिन में एक साथ एक ही सदक़ए फ़ित्र की मिक़्दार दी जा सकती है, इस से ज़ियादा देना दुरुस्त नहीं। अब सुवाल येह है कि अगर किसी शख़्स पर एक से ज़ाइद क़िस्म के कफ़्फ़ारे लाज़िम हों, तो क्या एक ही दिन में एक ही फ़क़ीरे शरई़ को हर कफ़्फ़ारे के बदले अ़लाह़दा अ़लाह़दा सदक़ए फ़ित्र दिया जा सकता है ? यानी एक फ़क़ीर को पहले कफ़्फ़ारे का सदक़ए फ़ित्र देने के बाद, उसी दिन दूसरे कफ़्फ़ारे की निय्यत से दूसरा सदक़ए फ़ित्र भी दिया जा सकता है या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जी हां ! अगर किसी शख़्स पर एक से ज़ाइद क़िस्म के कफ़्फ़ारे लाज़िम हों तो वोह एक ही शरई़ फ़क़ीर को एक ही दिन में एक कफ़्फ़ारे की निय्यत से सदक़ए फ़ित्र अदा करने के बाद, उसी फ़क़ीर को उसी दिन दूसरे कफ़्फ़ारे का सदक़ए फ़ित्र भी दे सकता है, बशर्ते कि हर कफ़्फ़ारे का सदक़ए फ़ित्र अ़लाह़दा अ़लाह़दा दे। अगर दोनों कफ़्फ़ारों का सदक़ए फ़ित्र एक साथ अदा करेगा, तो सिर्फ़ एक कफ़्फ़ारे की अदाएगी शुमार होगी। अलबत्ता जब वोह हर कफ़्फ़ारे का सदक़ए फ़ित्र अ़लाह़दा अ़लाह़दा देगा, तो हर कफ़्फ़ारे की अदाएगी शरअ़न सह़ीह़ और मोतबर होगी।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

4 चार रकअ़त वाली नमाज़ में क़ादए अख़ीरा के बाद सहवन पांचवीं रकअ़त में खड़ा होने का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस बारे में कि अगर कोई शख़्स चार रकअ़त वाली नमाज़ में क़ादए अख़ीरा मुकम्मल करने के बाद सलाम फेरने की बजाए भूले से पांचवीं रकअ़त के लिये खड़ा हो जाए और पांचवीं का सज्दा करने के बाद याद आए, तो उस के लिये क्या हुक्म है ? क्या सज्दए सहव कर के सलाम फेर सकता है ? या पांचवीं रकअ़त के बाद छट्टी रकअ़त मिलाना भी लाज़िम है ? अगर लाज़िम है, तो छट्टी रकअ़त न मिलाने की वज्ह से उस नमाज़ को दोबारा पढ़ना ज़रूरी है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

चार रकअ़त वाली नमाज़ में क़ादए अख़ीरा मुकम्मल करने के बाद अगर कोई पांचवीं रकअ़त के लिये खड़ा हो जाए, तो उस के लिये हुक्म येह है कि अगर सज्दा करने से पहले याद आ जाए, तो वापस लौट कर तशह्हुद का इआ़दा किये बग़ैर सज्दए सहव कर के नमाज़ मुकम्मल कर ले और अगर पांचवीं रकअ़त का सज्दा करने के बाद याद आए, तो ऐसे शख़्स को चाहिये कि मज़ीद एक और रकअ़त मिला कर आख़िर में सज्दए सहव कर के नमाज़ मुकम्मल कर ले, इस त़रह़ पहली चार रकअ़तें फ़र्ज़ और बाक़ी दो नफ़्ल शुमार होंगी। अलबत्ता अगर कोई शख़्स छट्टी रकअ़त न मिलाए, बल्कि पांचवीं रकअ़त मुकम्मल करने के बाद सज्दए सहव कर के सलाम फेर दे, तो भी उस की नमाज़ दुरुस्त है, नमाज़ दोबारा पढ़ना लाज़िम नहीं, क्यूंकि छट्टी रकअ़त मिलाना वाजिब नहीं, बल्कि मुस्तह़ब है और तर्के मुस्तह़ब की वज्ह से नमाज़ को लौटाना लाज़िम व ज़रूरी नहीं, अलबत्ता बेहतर येह है कि ऐसी नमाज़ को दोबारा पढ़ लिया जाए लेकिन अगर कोई न पढ़े, तो गुनहगार नहीं होगा।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

इस्लाम में प्राइवेसी का तसव्वुर

इस्लाम दीने फ़ितरत है इसी लिये इस की तालीमात भी इन्सानी फ़ितरत से मुतसादिम नहीं बल्कि फ़ितरत के ऐन मुवाफ़िक़ हैं। अल्लाह पाक ने इस्लामी तालीमात में ऐसी हमागीर जामेइय्यत, वुस्अत, गहराई और गीराई रखी है कि बड़ी से बड़ी ज़रूरत और छोटी से छोटी ह़ाजत की रहनुमाई इस में मौजूद है। इस्लाम ने अपने मानने वालों को जहां बहुत से हुक़ूक़ अ़ता फ़रमाए हैं उन में से एक ह़क़ "मुसलमान की ज़ाती ज़िन्दगी के मुआ़मलात की राज़दारी" भी शामिल है। हमारे मुआ़शरे में उस के लिये राज़दारी, ख़ल्वत, प्राइवेसी, पर्सनल लाइफ़ में अ़दमे मुदाख़लत, प्राइवेट लाइफ़ के मुआ़मलात की पासदारी जैसे मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ राइज हैं। कहा जाता है : मेरी निजी ज़िन्दगी में मुदाख़लत न करें। (Don't interfere in my privacy) याद रहे कि इस्लाम में प्राइवेसी की भी हुदूदो क़ुयूद मुक़र्रर हैं। इस्लाम ने घरों में आने जाने के आदाब सिखाए, इन्सान की प्राइवेसी को न सिर्फ़ महफ़ूज़ किया बल्कि इसे एहतिराम भी दिया। इस्लाम फ़र्द की ज़ाती ज़िन्दगी (Personal Life), इस के घर, जिस्म, गुफ़्तगू, तह़रीर और इस के राज़ सब की हिफ़ाज़त को शरई ह़क़ क़रार देता है। फ़ितरत भी इस बात का तक़ाज़ा करती है कि हर इन्सान को येह ह़क़ ह़ासिल है कि वोह अपनी ज़िन्दगी के बाज़ पहलू सिर्फ़ अपने तक महदूद रखे। बिला मक़्सद मुसल्सल निगरानी, टोह लगाना या ज़ाती मुआ़मलात में मुदाख़लत ज़ेहनी दबाव, बेचैनी और इज़्तिराब को जन्म देती है। किसी की प्राइवेसी का पास व लिह़ाज़ और एहतिराम बाहमी एतिमाद पैदा करता है। ख़ानदान, इज़्दिवाजी ज़िन्दगी और दोस्तियों में राज़दारी का लिह़ाज़ तअ़ल्लुक़ात को मज़बूत बनाता है जब कि प्राइवेसी की ख़िलाफ़ वर्ज़ी बद एतिमादी और नफ़रत को जन्म देती है। प्राइवेसी का पास व लिह़ाज़ रखने के बजाए दूसरों के ऐब तलाश करना, किसी की ज़ाती ज़िन्दगी में उस की इजाज़त के बग़ैर झांकना या बिला वज्ह तजस्सुस में पड़ना मुआ़शरती बिगाड़ का सबब बनता है। यहां इन्सानी ज़िन्दगी में प्राइवेसी की ज़रूरतो अहमिय्यत के चन्द पहलू ज़िक्र किये गए हैं।

घरेलू प्राइवेसी इन्सान का घर उस की तन्हाई, राज़दारी और ख़ल्वत का ख़ास मक़ाम है। घरों के बाहर लगे दरवाज़े और दरवाज़ों पर पड़े पर्दे पुकार पुकार कर प्राइवेसी के एह़तिराम और उस के पास व लिह़ाज़ का दर्स दे रहे होते हैं। किसी के घर में बिला झिजक, बग़ैर तवक़्क़ुफ़, बिला इजाज़त दाख़िल होना उस की प्राइवेसी को डिस्टर्ब करना और उस की तन्हाई में मुख़िल होना है। इस्लाम इस त़रह़ के रवय्ये की इजाज़त नहीं देता। इस्लाम से पहले अ़रब मुआ़शरे में एक दूसरे के घर बग़ैर इजाज़त दाख़िल हो जाने का रिवाज था। इस्लाम ने मुआ़शरे को बे ह़याई और बद गुमानियों से पाक रखने के लिये ऐसे उसूल अ़ता फ़रमाए कि अगर मुसलमान उन की पासदारी करें तो मुस्लिम मुआ़शरा अम्न, सुकून, सलामती, ह़ुस्ने अख़्लाक़, बाहमी एहतिराम वाला और बद गुमानियों से पाक मुआ़शरा बन सकता है। ह़ज़रते अ़दी बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ फ़रमाते हैं : अन्सार की एक औरत ने हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की :

या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं अपने घर में ऐसी हालत में भी होती हुं, कि मैं नहीं चाहती कि इस हालत में मुझे कोई देखे, चाहे वोह मेरा वालिद या मेरा बेटा ही क्यूं न हो लेकिन फिर भी मेरा कोई मर्द रिश्तेदार इस हाल में मेरे घर में आ जाता है तो मैं क्या करूं ? इस पर अल्लाह करीम ने येह आयते करीमा नाज़िल फ़रमाई :

﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُیُوْتًا غَیْرَ بُیُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَ تُسَلِّمُوْا عَلٰۤى اَهْلِهَا ؕ ذٰلِكُمْ خَیْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ(۲۷)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! अपने घरों के सिवा और घरों में दाख़िल न हो जब तक इजाज़त न ले लो और उन में रहने वालों पर सलाम न कर लो । येह तुम्हारे लिये बेहतर है ताकि तुम नसीहत मान लो ।[1] क़ुरबान जाएं इस्लाम की तालीमात पर ! जब किसी के घर जाएं तो दाख़िल होने से क़ब्ल रहने वालों से इजाज़त त़लब करने का पाबन्द बनाया जा रहा है ताकि घर वालों की इ़ज़्ज़त, नामूस और उन की प्राइवेसी का पास व लिहाज़ रखा जाए।

अगर घर में सिर्फ़ वालिदा और बहन हो तो ? येह तो दूसरों के घरों में दाख़िले की बात थी अपना ऐसा घर कि जिस में वालिदा और बहन रहती हों इस में भी बग़ैर इजाज़त लिये अन्दर जाने की इजाज़त नहीं जैसा कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : عَلَیْكُمْ اَنْ تَسْتَاْذِنُوْا عَلٰى اُمَّهٰتِكُمْ وَ اَخَوَاتِكُمْ यानी तुम पर लाज़िम है कि तुम अपनी माओं और अपनी बहनों के पास (दाख़िल होने से पहले) इजाज़त लिया करो ।[2] इस्लाम हमारी इ़ज़्ज़तों का कैसा मुहाफ़िज़ और हमारी प्राइवेसी का कैसा पासबान है कि अगर घर में सिर्फ़ अकेली वालिदा मौजूद हो फिर भी बग़ैर इजाज़त लिये अन्दर दाख़िल होना मना है जैसा कि एक रिवायत में है कि एक आदमी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के पास आया और कहा : क्या मैं अपनी मां से भी इजाज़त ले कर उस के घर जाऊं ? तो सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया :

مَا عَلٰى كُلِّ اَحْیَانِهَا تُحِبُّ اَنْ تَرَاهَا यानी तुम हर वक़्त (और हर हालत में) उसे देखना पसन्द नहीं करते ।[3]

वालिदैन की प्राइवेसी का भी ख़याल कीजिये औलाद को चाहिये अपने वालिदैन की राज़दारी, उन की ख़ल्वत व तन्हाई और उन की प्राइवेसी का भी ख़याल और लिहाज़ रखें। इस लिये कि इन्सान अपन घर में हर वक़्त एक जैसी हालत में नहीं रहता, वालिदैन भी चाहते हैं कि उन की बाज़ बातें उन की औलाद से भी पोशीदा रहें, इस लिये ज़रूरी है कि औलाद वालिदैन की प्राइवेसी का ख़याल करे। एक रिवायत में हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बहुत साफ़, वाज़ेह और दो टोक अल्फ़ाज़ में इजाज़त त़लब करने की वज्ह भी इरशाद फ़रमा दी जैसा कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा : क्या मैं अपनी मां से दाख़िले की इजाज़त लूं ? फ़रमाया : हां, वोह बोला कि मैं घर में उस के साथ रहता हूं, तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उस से दाख़िले की इजाज़त लो । तो वोह आदमी बोला : मैं तो उस का ख़िदमतगार हूं । (यानी बार बार आना जाना होता है, फिर इजाज़त की क्या ज़रूरत है ?) तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इजाज़ते दाख़िला लो, क्या तुम येह चाहते हो कि उसे बे लिबास देखो। वोह बोला : नहीं, तो फ़रमाया कि उस से दाख़िले की इजाज़त लो ।[4] سُبْحٰنَ اللّٰہ ! कैसी प्यारी वज्ह बयान हुई कि चूंकि मां का सत्र देखना ह़राम है और बे इजाज़त दाख़िल होने में इस का अन्देशा है लिहाज़ा इ़त्तिलाअ़ कर के आना चाहिये, हां अगर घर में सिर्फ़ बीवी हो तो इ़त्तिलाअ़ की ज़रूरत नहीं कि बीवी से ह़िजाब नहीं ।[5]

बहन भाइयों की प्राइवेसी का भी लिहाज़ कीजिये ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि आदमी को अपनी औलाद और मां से (कमरे या घर में दाख़िले की) इजाज़त लेनी चाहिये अगर्चे मां बूढ़ी हो गई हो और अपने भाई, बहन और बाप से भी (दाख़िले की) इजाज़त त़लब करे।[6] ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से रिवायत है कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से पूछा : क्या मैं अपनी बहन के पास भी इजाज़त ले कर जाऊं ? तो उन्हों ने फ़रमाया : हां, मैं ने दोबारा पूछते हुए कहा : "मेरी दो बहनें मेरी सरपरस्ती में हैं, मैं उन की कफ़ालत करता हूं", और उन पर ख़र्च करता हूं क्या फिर भी उन से इजाज़त ले कर जाऊं ? फ़रमाया : "हां, क्या तुम पसन्द करते हो कि उन्हें बे लिबास देखो ?" फिर येह आयत तिलावत की : ﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لِیَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِیْنَ مَلَكَتْ اَیْمَانُكُمْ وَ الَّذِیْنَ لَمْ یَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ؕ مِنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَ حِیْنَ تَضَعُوْنَ ثِیَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِیْرَةِ وَ مِنْۢ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَآءِ ؕ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! तुम्हारे ग़ुलाम और तुम में

से जो बालिग़ उ़म्र को नहीं पहुंचे, उन्हें चाहिये कि तीन औक़ात में, फ़ज्र की नमाज़ से पहले और दोपहर के वक़्त जब तुम अपने कपड़े उतार रखते हो और नमाज़े इ़शा के बाद (घर में दाख़िले से पहले) तुम से इजाज़त लें। येह तीन औक़ात तुम्हारी शर्म के हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने फ़रमाया कि : "उन्हें उन तीन पर्दे के औक़ात में इजाज़त लेने का ह़ुक्म है।" इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿وَ اِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَاْذِنُوْا كَمَا اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और जब तुम में से लड़के जवानी की उ़म्र को पहुंच जाएं तो वोह भी (घर में दाख़िल होने से पहले) इसी त़रह़ इजाज़त मांगें जैसे उन से पहले (बालिग़ होने) वालों ने इजाज़त मांगी। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने फ़रमाया : इस लिये इजाज़त लेना वाजिब है। इब्ने जरीज ने येह इज़ाफ़ा नक़्ल किया : तमाम लोगों के लिये (इजाज़त लेना वाजिब है)।[7]

दाख़िले से पहले अहले ख़ाना को मुतवज्जेह करने का अन्दाज़

इजाज़त लेने का त़रीक़ा येह भी है कि बुलन्द आवाज़ से سُبۡحٰنَ اللّٰہ या اَلۡحَمۡدُلِلّٰہ या اَللّٰہُ اَکۡبَر कहे, या खंकारे जिस से मकान वालों को मालूम हो जाए कि कोई आना चाहता है (और येह सब काम इजाज़त लेने के त़ौर पर हों) या येह कहे कि क्या मुझे अन्दर आने की इजाज़त है।[8]

झांकना भी मना है इस्लाम अपने मानने वालों को जहां बग़ैर इजाज़त दाख़िले की इजाज़त नहीं देता वहीं इस बात से भी मना करता है कि कोई किसी के घर में दीवार के ऊपर, दरवाज़े की दराड़ या किसी सूराख़ से अन्दर झांके इस लिये कि हर अ़क़्लमन्द जानता है कि इन्सान अपने घर में कभी बे तकल्लुफ़ी की ह़ालत में भी होता है, पर्दे का इतना ख़ास एहतिमाम भी नहीं करता जितना वोह जल्वत में करता है, लिहाज़ा अगर कोई अचानक घर में झांके या दाख़िल ही हो जाए तो घर वालों के सत्र पर नज़र पड़ने और बेपर्दगी होने का क़वी अन्देशा है, इसी लिये किसी के घर में उस की इजाज़त के बग़ैर जान बूझ कर झांकना शरअ़न मम्नूअ़ है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना सहल बिन सअ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रिवायत है कि एक आदमी ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरवाज़े के सूराख़ से आप के घर में झांका, उस वक़्त नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथ में लकड़ी की एक कंघी थी जिस के साथ आप अपना सर मुबारक खुजा रहे थे, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब उसे देखा तो फ़रमाया : अगर मुझे इ़ल्म होता कि तुम मुझे बाहर से झांक रहे हो तो मैं येही कंघी तुम्हारी आंख में मार देता। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इजाज़त का मक़्सद ही येह है कि नज़र न पड़े।[9] किसी के घर में झांकना उस के घर में बग़ैर इजाज़त दाख़िल होने की त़रह़ है। जैसे वोह मम्नूअ़ है, वैसे येह भी मम्नूअ़ है। याद रहे! येह ह़दीस डांट डपट के लिये है उस का येह मत़लब नहीं कि ह़क़ीक़त में किसी की आंख फोड़ दी जाए या क़त्ल कर दिया जाए क्यूंकि बग़ैर इजाज़त किसी के घर में दाख़िल होना कोई ऐसा अ़मल नहीं जिस पर क़त्ल या आंख ज़ाएअ़ की जाए।[10]

येह काम भी न करें इस्लाम तो अपने मानने वालों को इस बात की भी तालीम देता है कि इजाज़त लेने के लिये दरवाज़े के बाहर भी किस त़रफ़ खड़ा होना है और कहां खड़ा नहीं होना। अगर इजाज़त लेने वाला दरवाज़े के बिल्कुल सामने खड़ा हो जाए तो इस बात का इम्कान है कि दरवाज़ा खुलते ही उस की नज़र घर में चली जाए और ऐसी चीज़ या ऐसा मन्ज़र उस की नज़र के सामने आ जाए कि जो नहीं आना चाहिये था इस लिये हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का प्यारा अन्दाज़ ही क़ाबिले अ़मल है जैसा कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन बुसर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब किसी के घर दाख़िले के लिये तशरीफ़ लाते तो सामने खड़े न होते बल्कि सीधी या उल्टी त़रफ़ खड़े होते फिर अगर इजाज़त मिल जाती तो ठीक वरना वापस तशरीफ़ ले जाते।[11]

मोबाइल, ख़त और मैसेज की भी प्राइवेसी होती है बाज़ लोगों की आ़दत होती है कि किसी से कॉल करने के लिये मोबाइल मांगा या किसी का मोबाइल रखा देखा तो उठा कर चेक करना शुरूअ़ कर दिया, वॉट्सऐप देखने लगे, गैलरी में जा घुसे और मैसेज (SMS) पढ़ने लगे। याद रखें ऐसा करना हरगिज़ जाइज़ नहीं है। किसी का ख़त या चिट्ठी (रुख़्सते शरई़ के बग़ैर) न देखिये, किसी की डायरी की तह़रीर भी बे इजाज़ते शरई़ न देखिये, ह़दीसे पाक में है : مَنۡ نَظَرَ فِیۡ کِتَابِ اَخِیۡہِ بِغَیۡرِ اِذۡنِہٖ، فَاِنَّمَا یَنۡظُرُ فِیۡ النَّارِ، यानी जो कोई अपने भाई की इजाज़त के बग़ैर उस की तह़रीर में नज़र डालता है, वोह गोया आग में झांकता है।[12] नीज़ लोगों के मोबाइल्ज़ में कई

राज़ होते होंगे, जैसे महारिम की तसावीर और उन से की गई पर्सनल बातें वग़ैरा जिन का किसी अजनबी को बिला इजाज़ते शरई देखना पढ़ना जाइज़ नहीं है, जिस ने इस तरह किया उसे तौबा करनी चाहिये। इसी तरह बाज़ लोगों की आदत होती है कि दो मुसलमानों की बाहमी गुफ़्तगू छुप कर सुनने लगते हैं, इस्लाम में इस की भी इजाज़त नहीं, रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنِ اسْتَمَعَ اِلٰى حَدِيْثِ قَوْمٍ وَّهُمْ لَهٗ كَارِهُوْنَ اَوْ يَفِرُّوْنَ مِنْهُ صُبَّ فِيْ اُذُنَيْهِ الْاٰنُكُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ यानी जिस ने लोगों के ना पसन्द करने और न चाहने के बावुजूद उन की बातों की तरफ़ कान लगाए बरोज़े क़ियामत उस के कानों में सीसा उन्डेला जाएगा।[13]

याद रखिये ! इस्लाम में प्राइवेसी महज़ एक समाजी क़द्र नहीं बल्कि एक दीनी, अख़्लाक़ी और क़ानूनी तक़ाज़ा है, जिस की बुन्याद क़ुरआने करीम, सुन्नते रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आसारे सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم पर क़ाइम है। इस्लाम ने येह वाज़ेह कर दिया कि प्राइवेसी का एहतिराम हर हाल में ज़रूरी है, चाहे रिश्ता कितना ही क़रीबी क्यूं न हो। प्राइवेसी की पामाली न सिर्फ़ फ़र्द को ज़ेहनी इज़्तिराब और अज़िय्यत में मुब्तला करती है बल्कि मुआशरे में बद एतिमादी, बदगुमानी और नफ़रत को जन्म देती है, जब कि इस का एहतिराम बाहमी एतिमाद, हुस्ने अख़्लाक़ और ख़ानदानी व मुआशरती इस्तिहकाम का ज़रीआ बनता है। आज के दौर में जब टेक्नोलॉजी ने इन्सान को एक दूसरे के क़रीब कर दिया है, इस्लाम की येह तालीमात पहले से कहीं ज़ियादा अहमिय्यत इख़्तियार कर चुकी हैं। अगर मुसलमान क़ुरआनो सुन्नत की इन हिदायात पर संजीदगी से अमल करें तो इन के घरों में सुकून, ख़ानदानों में एतिमाद और मुआशरे में अम्न, हया और बाहमी एहतिराम की फ़ज़ा क़ाइम हो सकती है। बिलाशुबा इस्लाम इन्सानी इज़्ज़तों का मुहाफ़िज़ और निजी ज़िन्दगियों का बेहतरीन पासबान है और इस्लाम में प्राइवेसी का तसव्वुर इन्सानी फ़लाह और मुआशरती इस्लाह की एक मज़बूत बुन्याद है।

---

(1) تفسیر طبری، 9/297، النور، تحت الآیۃ:27 (2) تفسیر طبری، 9/297، النور، تحت الآیۃ:27 (3) مصنف ابن ابی شیبہ، 4/399، حدیث:17893 (4) مشکاۃ المصابیح، 2/169، حدیث:4674 (5) مراٰۃ المناجیح، 6/353 (6) مصنف ابن ابی شیبہ، 4/399، حدیث:17895 (7) ادب المفرد، ص273، حدیث:1063 (8) روح البیان، 6/137، النور، تحت الآیۃ:27 (9) مسلم، ص1201، حدیث:5638 (10) دیکھئے: مراٰۃ المناجیح، 5/251 (11) شعب الایمان، 6/443، حدیث: 8823 (12) مستدرک للحاکم، 5/384، حدیث:7779 (13) بخاری، 4/422، حدیث:7042۔

मुसीबत के अय्याम

राहत और मुसीबत दोनों ज़िन्दगी का हिस्सा हैं। इन्सान किसी भी वक़्त किसी भी क़िस्म की मुसीबत में मुब्तला हो सकता है। मुसीबत के अय्याम कम भी हो सकते हैं और ज़ियादा भी। मुसीबत में परेशान होना फ़ितरी बात है लेकिन क़ुरआने पाक की इस आयत पर तवज्जोह करनी चाहिये : ﴿اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ یُسْرًا(۵)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक दुश्वारी के साथ और आसानी है।[1] आप को हिम्मत और हौसला मिलेगा।

मुसीबत की शिद्दत और तवालत, लोगों के रूखे रवय्ये और कोई हल न दिखाई देना बाज़ औक़ात बन्दे को मायूस कर देता है और मायूसी ख़ुद एक मुसीबत है। अगर चन्द बातों को पेशे नज़र रखा जाए तो मुसीबत के अय्याम को हौसले और हिम्मत के साथ गुज़ारना नसीब होगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ الْکَرِیْم

1 मुसीबत कभी आज़माइश होती है और कभी गुनाहों की सज़ा के तौर पर! सूरए शूरा में है : ﴿وَمَاۤ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِیْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَیْدِیْكُمْ وَیَعْفُوْا عَنْ كَثِیْرٍ(۳۰)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हें जो मुसीबत पहुंची वोह उस के सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया और बहुत कुछ तो मुआफ़ फ़रमा देता है।[2] बहरहाल रब्बुल आलमीन की बारगाह में अपने गुनाहों से सच्ची तौबा करनी चाहिये। फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे उस ने गुनाह किया ही नहीं।[3]

2 इस्लामी तालीमात के मुताबिक़ दुआ अल्लाह से तअल्लुक़ की मज़बूत अलामत है और येह न सिर्फ़ नाज़िल शुदा मुसीबत को दूर करती है बल्कि आने वाली बला को भी टाल देती है। इस लिये अल्लाह रहमान से अपनी मुसीबत दूर होने की दुआ कीजिये, सूरए मोमिन में है : ﴿اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुझ से दुआ करो मैं क़बूल करूंगा।[4]

3 सदक़ा दीजिये कि येह मुसीबत को टाल देता है। नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सदक़ा दो और सदक़े के ज़रीए अपने मरीज़ों का मुदावा किया करो बेशक सदक़ा हादिसात और बीमारियों की रोक थाम करता है और येह तुम्हारे आमाल और नेकियों में इज़ाफ़े का बाइस है।[5]

4 मुसीबत या बीमारी आने पर येह ज़ेहन बनाइये कि हो सकता है कि अमल की कमी मुसीबत के ज़रीए पूरी की जा रही हो : फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जब किसी बन्दे के लिये अल्लाह पाक की तरफ़ से कोई दर्जा मुक़द्दर हो चुका हो जहां तक येह अपने अमल से नहीं पहुंच सकता तो अल्लाह पाक उसे उस के जिस्म या माल या औलाद की आफ़त में मुब्तला कर देता है फिर उसे इस पर सब्र भी देता है यहां तक कि उसे इस दर्जे तक पहुंचा देता है जो अल्लाह ने उस के लिये मुक़द्दर फ़रमाया है।[6]

5 मुसीबत आने पर सब्र कीजिये। सब्र की बड़ी फ़ज़ीलत है, फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जो सब्र करना चाहेगा तो अल्लाह पाक उसे सब्र अता फ़रमा देगा और किसी शख़्स को सब्र से बेहतर और वसीअ कोई चीज़ नहीं मिली।[7] हज़रते अलहाज मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस हदीस शरीफ़ के तहत

लिखते हैं : यानी रब तआ़ला की अ़ताओं में से बेहतरीन और बहुत गुन्जाइश वाली अ़ता सब्र है कि रब तआ़ला ने इस का ज़िक्र नमाज़ से पहले फ़रमाया और साबिर के साथ अल्लाह (पाक) होता है, नीज़ सब्र के ज़रीए इन्सान बड़ी बड़ी मशक़्क़तें बरदाश्त कर लेता है और बड़े बड़े दर्जे ह़ासिल कर लेता है, सब्र ही की बरकत से ह़ज़रते (इमाम) ह़ुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) सय्यिदुश्शुहदा (यानी शहीदों के सरदार) हुए।[8]

6 हमें हर ह़ाल में अल्लाह करीम का शुक्र करना चाहिये ह़त्ता कि मुसीबत व बीमारी में भी ! ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हर मुसीबत और बीमारी (जो इन्सान को पहुंचे उस) के बारे में वोह इस त़रह तसव्वुर करे कि दुनिया में इस से भी बढ़ कर बीमारी और मुसीबत मौजूद है, अगर अल्लाह पाक (मेरी इस मुसीबत को) मज़ीद बढ़ा दे तो क्या मैं उसे रोक सकता या उसे दूर कर सकता हूं ? लिहाज़ा इस त़रह तसव्वुर कर के बन्दे को अल्लाह पाक का शुक्र करना चाहिये कि उस ने इस से बड़ी मुसीबत व बीमारी नहीं भेजी ।[9] ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शअ़बी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाया करते थे : लोग अगर अपने ऊपर आई हुई आफ़त का उस से बड़ी आफ़त के साथ तक़ाबुल करते तो ज़रूर बाज़ आफ़तों को आ़फ़िय्यत (सलामती) जानते।[10]

बड़ी नेमत ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ एक दिन एक गूंगे, बहरे और मुसीबत ज़दा शख़्स के पास से गुज़रे। एक शख़्स ने पूछा : क्या उस के पास कोई नेमत मौजूद है ? आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : हां, येह जो कुछ खाता पीता है उस का आसानी के साथ ह़ल्क़ से उतर जाना और फिर पेशाब वग़ैरा की सूरत में जिस्म से निकल जाना, येह उन ज़ाहिरी फ़ौत शुदा नेमतों से बड़ी नेमत है।[11]

7 शिक्वा व शिकायत का कुछ फ़ायदा नहीं बल्कि सब्र का सवाब कमाने का मौक़अ़ ज़ाएअ़ हो जाता है। अल्लाह पाक ने ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वही फ़रमाई : जब तुम पर कोई मुसीबत आए तो मेरी मख़्लूक़ से शिकायत न करना बल्कि मुझ से अ़र्ज़ करना जैसा कि मैं मख़्लूक़ की ख़ताएं फ़रिश्तों के सामने बयान नहीं करता।[12]

8 मुसीबत व बीमारी दूर करने की तदबीर इख़्तियार करने के साथ साथ वज़ाइफ़ भी अपने मामूलात में शामिल रखिये । मुसलमान के लिये सब से बड़ा वज़ीफ़ा नमाज़ है। ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन मुत़रफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक मरीज़ था जब उस के पास क़ुरआने पाक की तिलावत की जाती तो वोह बीमारी से इफ़ाक़ा महसूस करता, मैं उस के ख़ैमे में गया और उस से कहा कि आज मैं तुम्हें तन्दुरुस्त देख रहा हूं, उस ने जवाब दिया कि मेरे पास क़ुरआने पाक की तिलावत की गई है।[13] रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स अपने घर में दाख़िल होते वक़्त सूरए इख़्लास पढ़ेगा तो येह सूरत उस घर वालों और उस के पड़ोसियों से मोह़ताजी को दूर कर देगी।[14] अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : "حَیّ" और "قَیُّوم" अल्लाह पाक के सिफ़ाती नाम हैं, और अल्लाह पाक के हर नाम में बरकत ही बरकत है। "یَاحَیُّ یَاقَیُّوْمُ" बहुत ही बा बरकत विर्द है। अगर कोई मुसीबत या परेशानी आ जाए तो ब कसरत "یَاحَیُّ یَاقَیُّوْمُ" पढ़ें اِنْ شَآءَ اللّٰہ आफ़तें दूर होंगी और मुश्किलात ह़ल हो जाएंगी (नोट : वज़ीफ़े के अव्वल आख़िर तीन तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना है।)[15]

घर वालों की ज़िम्मेदारी त़वील अ़र्से से मुसीबत या बीमारी वग़ैरा में मुब्तला शख़्स बाज़ औक़ात चिड़चिड़ा हो जाता है, बात ठीक से समझ नहीं पाता, बह़स बराए बह़स करता और बाज़ औक़ात मायूसी की बातें करता है तो उस के घर वालों और इर्द गिर्द के लोगों को चाहिये कि उस की ख़िदमत भी करें और अपने रवय्ये से बेज़ारी का इज़हार न करें कि अब इस की ख़िदमत हमें करनी पड़ रही है क्यूंकि घर वालों की त़रफ़ से बेज़ारी की सूरत में मुसीबत में मुब्तला शख़्स की ज़िन्दगी उदास और वीरान हो जाती है। अगर हम ऐसे शख़्स की दिल जोई, ह़ौसला अफ़ज़ाई के साथ साथ अ़मली तआ़वुन करेंगे तो हमें सवाब मिलेगा।

अल्लाह करीम हमें मुसीबत से बचाए और मुसीबत ज़दों से तआ़वुन करने की भी तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)پ30، الم نشرح:6(2)پ25، الشوریٰ:30(3)ابنِ ماجہ، 4/491، حدیث: 4250
(4)پ24، المؤمن:60(5)شعب الایمان، 3/282، حدیث: 3556(6)ابوداؤد، 3/246، حدیث: 3090(7)مسلم، ص406، حدیث: 2424(8)مراٰۃ المناجیح، 3/59
(9)احیاء العلوم، 4/158(10)تنبیہ المغترین، ص177(11)تنبیہ المغترین، ص177
(12)احیاء العلوم، 4/164(13)التبیان فی آداب حملۃ القرآن للنووی، ص94(14)معجم کبیر، 2/340، حدیث: 2419(15)ماخوذ از مدنی مذاکرہ، 11 جمادی الاخریٰ 1442ھ۔

सनाए सरकार है वज़ीफ़ा

इस दुनियाए फ़ानी में मख़्लूक़ को ख़ालिक़ से मिलाने के लिये बहुत से अम्बियाए किराम व रुसुले इज़ाम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तशरीफ़ लाए । अल्लाह पाक ने उन में से हर नबी व रसूल को कई कमालात व मोजिज़ात से नवाज़ा। मसलन किसी नबी को हुस्नो जमाल में कमाल अ़ता फ़रमाया तो किसी को जाहो जलाल (शानो शौकत) में। किसी को सल्तनत व माल से नवाज़ा तो किसी को रिफ़्अ़तो अ़ज़मत की दौलते ला ज़वाल से, मगर रब्बे लम यज़ल ने जब अपने महबूबे बे मिसाल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मबऊ़स फ़रमाया तो आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को न सिर्फ़ हुस्नो जमाल से नवाज़ा बल्कि जाहो जलाल और जूदो नवाल (अ़ता व बख़्शिश) की दौलत से भी ख़ूब मालामाल फ़रमाया। सय्यिदुल महबूबीन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र नूरे ईमान व सुरूरे जान है और आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र बि ऐनिही ज़िक्रे रहमान है। अल्लाह पाक फ़रमाता है : ﴿وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने तुम्हारे लिये तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द कर दिया।[1]

अल्लाह अल्लाह आप का रुत्बा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पढ़ती है दुन्या रुत्बे का ख़ुत्बा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم

रिवायत में है कि इस आयते करीमा के नुज़ूल के बाद सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام हाज़िरे बारगाह हुए और अ़र्ज़ की : आप का रब फ़रमाता है : क्या तुम जानते हो कि मैं ने कैसे बुलन्द किया तुम्हारे लिये तुम्हारा ज़िक्र ? नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब दिया : اَللّٰهُ اَعْلَم इरशाद हुवा : ऐ महबूब मैं ने तुम्हें अपनी याद में से एक याद किया कि जिस ने तुम्हारा ज़िक्र किया बेशक उस ने मेरा ज़िक्र किया।[2]

सुल्ताने जहां महबूबे ख़ुदा तेरी शानो शौकत क्या कहना
हर शै पे लिखा है नाम तेरा, तेरे ज़िक्र की रिफ़्अ़त क्या कहना

हम और आप हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने बे मिसाल को भला क्या समझ सकते हैं ? हज़राते सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم जो दिन रात सफ़र व हज़र में माहे नुबुव्वत की तजल्लियां देखते रहे उन्हों ने महबूबे ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जमाले बे मिसाल के फ़ज़्लो कमाल को जिस तरह नातिया अश्आ़र में बयान किया है वोह भी अपनी मिसाल आप है।

हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊ़न رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की कही हुई नाते पाक के दो शेर मअ़ तर्जमा मुलाहज़ा फ़रमाइये :

1 رَسُوْلٌ عَظِيْمُ الشَّانِ يَتْلُوْ كِتَابَهُ
لَهُ كُلُّ مَنْ يَّبْغِي التِّلَاوَةَ وَامِقٌ
2 مُحَبٌّ عَلَيْهِ كُلَّ يَوْمٍ طَلَاوَةٌ
وَاِنْ قَالَ قَوْلًا فَالَّذِيْ قَالَ صَادِقٌ

तर्जमा 1 वोह अ़ज़ीमुल मर्तबत रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो अपनी किताब की तिलावत फ़रमाते हैं कि हर पढ़ने वाला उस (किताब) का आ़शिक़ हो जाए 2 वोह मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं जिन के लिये हर रोज़ तरो ताज़गी व ख़ूबसूरती है और अगर कोई बात कहें तो यक़ीनन वोह सच्ची है।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने अपने क़सीदे में "जमाले नुबुव्वत" की शाने बे मिसाल को अश्आ़र की सूरत में यूं बयान फ़रमाया :

وَاَحْسَنُ مِنْكَ لَمْ تَرَقَطُّ عَيْنِيْ   وَاَجْمَلُ مِنْكَ لَمْ تَلِدِ النِّسَآءُ

(या रसूलल्लाह !) आप से ज़ियादा हुस्नो जमाल वाला मेरी आंख ने कभी देखा है न आप से ज़ियादा ख़ूबसूरत किसी औ़रत ने जना है।

خُلِقْتَ مُبَرَّاً مِّنْ كُلِّ عَيْبٍ   كَاَنَّكَ قَدْ خُلِقْتَ كَمَا تَشَآءُ

आप हर ऐ़ब से पाक पैदा किये गए हैं गोया आप ऐसे ही पैदा किये गए जैसे आप चाहते थे।(4)

मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ाई (यानी दूध शरीक) बहन ह़ज़रते सय्यिदतुना शैमा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا सरवरे काइनात صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अपनी मह़ब्बत का इज़्हार यूं फ़रमाती हैं :

مُحَمَّدٌ خَيْرُ الْبَشَرْ   مِمَّنْ مَّضٰى وَمَنْ غَبَرْ
مَنْ حَجَّ مِنْهُمْ اَوِ اعْتَمَرْ   اَحْسَنُ مِنْ وَّجْهِ الْقَمَرْ
مِنْ كُلِّ اُنْثٰى وَذَكَرْ   مِنْ كُلِّ مَشْبُوْبٍ اَغَرْ

1 यानी ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम इन्सानों से अफ़्ज़ल हैं चाहे वोह पहले गुज़र चुके या मुस्तक़्बिल में आने वाले हैं 2 आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम ह़ज व उ़मरा करने वालों से भी अफ़्ज़ल हैं और चांद से ज़ियादा ख़ूबसूरत हैं 3 आप तमाम मर्दों और औ़रतों से ज़ियादा हुस्नो जमाल वाले और सब नौजवानों से बढ़ कर ग़ैरत वाले हैं।(5)

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا से नातिया कलाम पर मुश्तमिल येह अश्आ़र मरवी हैं :

فَلَوْ سَمِعُوْا فِیْ مِصْرَ اَوْصَافَ خَدِّهٖ
لَمَا بَذَلُوْا فِیْ سَوْمِ یُوْسُفَ مِنْ نَّقْدٍ
لَوَّامِیْ زُلَيْخَا لَوْ رَاَيْنَ جَبِيْنَهٗ
لَاٰثَرْنَ بِالْقَطْعِ الْقُلُوْبَ عَلَى الْاَيْدِیْ

अगर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रुख़्सार मुबारक के औसाफ़ अहले मिस्र सुन लेते तो सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ीमत लगाने में सीमो ज़र न बहाते और अगर ज़ुलैख़ा को मलामत करने वाली औ़रतें आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जबीने अन्वर देख लेतीं तो हाथों के बजाए अपने दिल काटने को तरजीह़ देतीं।(6)

सनाए सरकार का येह ख़ूबसूरत सिल्सिला आगे चला बाद में भी आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मदह़ सराई में नातें कहीं गईं, इस की चन्द मिसालें सुनते हैं :

एक शाइ़र ने कमालाते मुस्तफ़ा को इस नातिया शेर में यूं बयान करने की कोशिश की है।

حُسنِ یُوسف دمِ عیسیٰ یدِ بیضا داری
آنچہ خوباں ہمہ دارند تو تنہا داری

यानी सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का हुस्न, ह़ज़रते सय्यिदुना ई़सा عَلَيْهِ السَّلَام की फूंक और रौशन हाथ रखते हैं, (येही नहीं बल्कि) जो कमालात दीगर सारे नबी व रसूल रखते थे वोह आप अकेले रखते हैं।

इमाम बूसैरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه अपने नातिया अश्आ़र में फ़रमाते हैं :

هُوَ الْحَبِيْبُ الَّذِیْ تُرْجٰى شَفَاعَتُهٗ
لِكُلِّ هَوْلٍ مِّنَ الْاَهْوَالِ مُقْتَحِمِ
مُحَمَّدٌ سَيِّدُ الْكَوْنَيْنِ وَالثَّقَلَيْنِ
وَالْفَرِيْقَيْنِ مِنْ عُرْبٍ وَّمِنْ عَجَمِ

तर्जमा : 1 वोही ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं कि आने वाली हर शिद्दत व मुसीबत में उन से शफ़ाअ़त की उम्मीद की जाती है।

2 ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुनिया व आख़िरत, जिन्नो इन्स, और अ़रबो अ़जम दोनों फ़रीक़ों के सरदार हैं।

आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की नातिया शाइ़री क़ुरआनो ह़दीस से मुताबक़त, ख़ूबसूरत अल्फ़ाज़ के इन्तिख़ाब और सह़ाबा, ताबेई़न और जलीलुल क़द्र औलिया व उ़लमा के नातिया कलाम का अ़क्से जमील है। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने अपने नातिया दीवान "**ह़दाइक़े बख़्शिश**" में फ़साह़तो बलाग़त के वोह दरिया बहाए कि ज़माने के कई नामी गिरामी शाइ़र व अदीब, ह़दाइक़े बख़्शिश का मुत़ालआ़ करते हैं तो उन की अ़क़्लें दंग रह जाती हैं और वोह दादो तह़सीन दिये बग़ैर नहीं रह पाते। इमामे अहले सुन्नत ने अपनी मुख़्तलिफ़ नातों में आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस्मे अक़्दस के मुख़्तलिफ़ आज़ा (Body Parts) का ज़िक्रे ख़ैर कुछ यूं बयान फ़रमाया है।

मुबारक बालों की शान

हम सियहकारों पे या रब तपिशे महशर में
साया अफ़्गन हों तेरे प्यारे के प्यारे गेसू[7]

नूरानी पेशानी की अ़ज़मत

जिस के माथे शफ़ाअ़त का सेहरा रहा
उस जबीने सआ़दत पे लाखों सलाम[8]

मुबारक अबरुओं की शान

जिन के सज्दे को मेह़राबे काबा झुकी
उन भवों की लत़ाफ़त पे लाखों सलाम[9]

मुक़द्दस आंखों का ह़ुस्न

सुर्मगीं आंखें ह़रीमे ह़क़ के वोह मुश्कीं ग़ज़ाल
है फ़ज़ाए ला मकां तक जिन का रम्ना नूर का[10]

नाक मुबारक का मक़ामो मरतबा

बीनी पुरनूर रख़्शां है बुक्का नूर का
है लिवाउल ह़म्द पर उड़ता फरेरा नूर का[11]

अ़ज़मतो शान वाले कान

दूरो नज़्दीक के सुनने वाले वोह कान
काने लाले करामत पे लाखों सलाम[12]

मुबारक मुंह की शान

वोह दहन जिस की हर बात वह़िये ख़ुदा
चश्मए इ़ल्मो ह़िक्मत पे लाखों सलाम[13]

थूक मुबारक का मोजिज़ा

जिस के पानी से शादाब जानो जिनां
उस दहन की त़रावत पे लाखों सलाम
जिस से खारी कुंएं शीरए जां बने
उस ज़ुलाले ह़लावत पे लाखों सलाम[14]

मुक़द्दस कलाम और ज़बान की शान

वोह ज़बां जिस को सब कुन की कुन्जी कहें
उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम
उस की बातों की लज़्ज़त पे लाखों दुरूद
उस के ख़ुत्बे की हैबत पे लाखों सलाम[15]

अ़ज़मत वाले हाथों का मक़ाम

जिन को सूए आस्मां फैला के जल थल भर दिये
सदक़ा उन हाथों का प्यारे हम को भी दरकार है[16]

नूरानी क़दमों की अ़ज़मत

गोरे गोरे पांव चम्का दो ख़ुदा के वासित़े
नूर का तड़का हो प्यारे गोर की शबतार है[17]

अल्लाह पाक से दुआ़ है कि हमें भी सनाए सरकार को वज़ीफ़ा बनाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

---

(1) پ30، الم نشرح:4 (2) ماخوذ از فتاویٰ رضویہ، 23/752 بحوالہ الشفا، 1/20 ملخصاً (3) سیرت ابن اسحاق، ص180 (4) دیوان حسان بن ثابت، ص21 (5) سبل الھدیٰ والرشاد، 1/380، 381 (6) زرقانی علی المواھب، 4/390، تاریخ الخمیس، 1/70 (7) حدائقِ بخشش، ص119 (8) سابقہ حوالہ، ص300 (9) سابقہ حوالہ (10) سابقہ حوالہ، ص248 (11) سابقہ حوالہ، ص243 (12) سابقہ حوالہ، ص300 (13) سابقہ حوالہ، ص302 (14) سابقہ حوالہ (15) سابقہ حوالہ (16) سابقہ حوالہ، ص176 (17) سابقہ حوالہ، ص177۔

सोशल मीडिया

सोशल मीडिया इन्फ़्लूएंसर्स और उन की ज़िम्मेदारियां

हम ऐसे तेज़ रफ़्तार डिजीटल दौर में जी रहे हैं जहां सोशल मीडिया प्लेट फॉर्म्ज़ की कसरत ने इज़्हारे राय को ग़ैर मामूली वुस्अत दे दी है। आज आ़म सी आवाज़ चन्द लम्हों में हज़ारों बल्कि लाखों लोगों तक पहुंच जाती है। इस दौर में ऐसे चेहरे और शख़्सिय्यात भी सामने आई हैं जिन्हों ने अपने ज़ाती चैनल्ज़, तक्नीकी सलाहिय्यतों और मुन्फ़रिद अन्दाज़े पेशकश के ज़रीए लोगों के दिलों पर असर क़ाइम किया है। येही लोग आज "सोशल मीडिया इन्फ़्लूएंसर्स (Social media influencers)" कहलाते हैं।

इन्फ़्लूएंसर्स बनने के लिये किसी मख़्सूस डिग्री, मन्सब या ख़िताबत का ह़ामिल होना ज़रूरी नहीं। दर ह़क़ीक़त क़ुव्वते तासीर हर उस शख़्स में होती है जिस की बात सुनी जाती है और जिस के रवय्ये, ख़यालात और त़र्ज़े ज़िन्दगी को लोग अपनाते हैं। येही वज्ह है कि बाज़ अफ़राद अपने इख़्लास, ह़िक्मत, लोगों को फ़ायदा पहुंचाने के जज़्बे, दीनी अक़्दार की नुमाइन्दगी, वत़न से वफ़ादारी और उम्मीद अफ़्ज़ा पैग़ाम की बदौलत जल्दी मक़्बूलिय्यत ह़ासिल कर लेते हैं।

असर अंगेज़ी एक नेमत है और हर नेमत के साथ एक ज़िम्मेदारी वाबस्ता होती है, सोशल मीडिया पर असर रखने वाला शख़्स दरअस्ल अमानत का ह़ामिल होता है, इस की ज़िम्मेदारी सिर्फ़ मवाद तख़्लीक़ करना नहीं बल्कि येह सोचना भी है कि उस के अल्फ़ाज़, विडीयोज़ और तब्सिरे मुआ़शरे को किस सम्त ले जा रहे हैं, क्यूंकि असर अंगेज़ी को फ़ॉलोअर्स की तादाद से नहीं बल्कि उस के मुस्बत और मुफ़ीद नताइज से जांचा जाता है।

दीने इस्लाम हमें सिखाता है कि हर लफ़्ज़ और हर अ़मल का ह़िसाब है।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : बन्दा अल्लाह की रिज़ामन्दी के लिये एक बात ज़बान से निकालता है उसे वोह कोई

अहमिय्यत नहीं देता (यानी बन्दा उसे मामूली समझता है) मगर उस की वज्ह से अल्लाह उस के दर्जे बुलन्द कर देता है और एक बन्दा एक ऐसा कलिमा ज़बान से निकालता है जो अल्लाह की नाराज़गी का बाइस होता है उसे वोह कोई अहमिय्यत नहीं देता लेकिन इस की वज्ह से वोह जहन्नम में चला जाता है।[1]

येह ह़दीस सोशल मीडिया के हर फ़अ़ाल फ़र्द के लिये एक आइना है क्यूंकि यहां कही गई बात स्क्रीन तक मह़दूद नहीं रहती बल्कि मुद्दतों ज़िन्दा रहती है कभी सवाब बन कर और कभी वबाल बन कर।

कितने ही मवाक़ेअ़ पर एक सच्ची बात ने मायूस दिल को ज़िन्दगी दी, एक अच्छे रवय्ये ने बिखरते घर को सम्भाल लिया और एक मुस्बत पैग़ाम ने नौजवान को गुमराही से बचा लिया। बहुत सी ज़िन्दगियां ऐसी हैं जो किसी एक सच्चे पेज, किसी ख़ैर ख़्वाह विडीयो या किसी बा अख़्लाक़ शख़्सिय्यत को फ़ॉलो करने की वज्ह से बदल गईं। येही अस्ल असर अंगेज़ी है।

एक सच्चा इन्फ़्लूएंसर वोह है जो ख़ुद से येह सुवाल करता है :

1 मैं जो पेश कर रहा हूं उस से मुआ़शरे / लोगों की इस्लाह़ हो रही है या बिगाड़ ?

2 क्या येह वोह बात है जिस के साथ में अल्लाह के हुज़ूर ह़ाज़िर होना पसन्द करूंगा ?

अल्लाह तआ़ला ऐसे ही लोगों के बारे में फ़रमाता है :

﴿اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَیَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا(۹۶)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये अ़नक़रीब उन के लिये रह़मान मह़ब्बत कर देगा।[2]

येही वोह क़बूलिय्यत है जो शोर, सन्सनी और शोहरत से नहीं बल्कि इख़्लास और ख़ैर से मिलती है। आज हमारे मुआ़शरे में اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! ऐसे बहुत से बा असर अफ़राद मौजूद हैं जिन्हों ने सोशल मीडिया को मह़ज़ तफ़रीह़ नहीं बल्कि दावत, तरबियत, अख़्लाक़िय्यात, सेह़त, क़ौमी शनाख़्त और अम्न का ज़रीआ़ बनाया है। इन का मवाद दिलों को जोड़ता है, उम्मीद जगाता है और एक मुतवाज़िन, बा किरदार नस्ल की तामीर में किरदार अदा करता है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

﴿وَ مَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَاۤ اِلَى اللّٰهِ وَ عَمِلَ صَالِحًا وَّ قَالَ اِنَّنِیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ(۳۳)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उस से ज़ियादा किस की बात अच्छी जो अल्लाह की त़रफ़ बुलाए और नेकी करे और कहे मैं मुसलमान हूं।[3]

यहां एक अहम ज़िम्मेदारी फ़ॉलोअर्स पर भी आ़इद होती है कि असर अंगेज़ी का दायरा सिर्फ़ बोलने वाले तक मह़दूद नहीं, बल्कि सुनने और फैलाने वाले भी इस में शरीक होते हैं।

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने किसी भलाई के काम पर रहनुमाई की तो उस के लिये वोह काम करने वाले की त़रह सवाब है।[4]

लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम उन आवाज़ों को फ़रोग़ दें जो तामीर करती हैं, न कि उन को जो नफ़रत, बे राहरवी और इन्तिशार को बढ़ाती हैं। आख़िर में येह समझ लेना ज़रूरी है कि सोशल मीडिया इन्फ़्लूएंसर होना सिर्फ़ शोहरत नहीं बल्कि लोगों की तरबियत में शराकत है। ख़ुश नसीब हैं वोह लोग जो इस ज़िम्मेदारी को पहचानें, अपनी मौजूदगी को रौशनी बनाएं और अपने असर को ख़ैर, इस्लाह़ और हिदायत का ज़रीआ़ बनाएं। येही वोह लोग हैं जिन का ज़िक्र दिलों में ज़िन्दा रहता है और जिन के लिये दुनिया और आख़िरत दोनों में कामयाबी लिखी जाती है।

---

(1) بخاری، 4 / 241، حدیث: 6478 (2) پ16، مریم: 96 (3) پ24، حٰمٓ السجدۃ: 33 (4) مسلم، ص809، حدیث: 4899۔

रोज़ें जैसा सवाब दिलाने वाली नेकियां

ऐ आशिक़ाने रसूल ! अल्लाह करीम का एहसाने अ़ज़ीम है कि उस ने हमें ऐसे नेक आमाल भी अ़ता फ़रमाए हैं कि जिन को बजा लाने से हम नफ़्ल रोज़ों का सवाब हासिल कर सकते हैं, आइये ! उन नेक आमाल के बारे में चन्द फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ते हैं, चुनान्चे

बुर्दबार रोज़ा रखने वाले की त़रह़ है

मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक बन्दा ह़िल्म (यानी बुर्दबारी) के ज़रीए रोज़ा रखने वाले और क़ियाम (यानी नफ़्ली इ़बादत) करने वाले का दर्जा पा लेता है।[1]

बा अख़्लाक़, रोज़ेदार का दर्जा पाता है

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बन्दा अपने हुस्ने अख़्लाक़ की वज्ह से रात को इ़बादत करने वाले और दिन में रोज़ा रखने वाले के दर्जे को पा लेता है।[2]

शुक्र अदा करने वाला रोज़ादार की त़रह़ है

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : शुक्र अदा करते हुए खाने वाले का अज्र सब्र करते हुए रोज़ा रखने वाले की त़रह़ है।[3]

रोज़ादार का कम से कम सब्र येह है कि अपने रोज़े को रोज़ा तोड़ने वाली चीज़ों से म़ह़फ़ूज़ रखे और दरमियानी शुक्र येह है कि मक्रूहात से बचाए, आला शुक्र येह है कि उन चीज़ों से रोज़े को म़ह़फ़ूज़ रखे जिन से रोज़ा ग़ैर मक़बूल होता है यानी सर से पांव तक हर उ़ज़्व का रोज़ा हो।[4]

रोज़ा इफ़्त़ार करवाने की फ़ज़ीलत

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : रोज़ादार को इफ़्त़ार करवाने वाले को वैसा ही सवाब मिलेगा जैसा रोज़ा रखने वाले को मिलेगा बग़ैर उस के कि उस के अज्र में से कुछ कम हो।[5]

बा वुज़ू रहने की फ़ज़ीलत

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अ़म्र बिन हुरैस رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि अल्लाह पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَلنَّائِمُ الطَّاهِرُ كَالصَّائِمِ الْقَائِمِ तर्जमा : वुज़ू कर के सोने वाला रोज़ा रखने और रात भर क़ियाम करने वाले की त़रह़ है।[6]

एक रिवायत में है कि اَنَّ الطَّاهِرَ كَالصَّائِمِ الصَّابِرِ, यानी बा वुज़ू आदमी सब्र करने वाले रोज़ादार की त़रह़ है।[7]

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊ़फ़ मुनावी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

रोज़ादार ख़्वाहिशात को छोड़ देने की वज्ह से पाकीज़ा हो जाता है और रात को क़ियाम (यानी नफ़्ली इ़बादत) करने के सबब उस पर रह़म किया जाता है और सोने वाला जब सवाब की निय्यत से पाकी (यानी वुज़ू) की ह़ालत में सोता है तो उस की रूह़ बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर हो जाती है।[8]

ग़रीबों की मदद करने वाला रोज़ादार की त़रह़ है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मोह़ताज और मिस्कीन की परवरिश के लिये कोशिश करने वाला अल्लाह पाक की राह में जिहाद करने वाले की त़रह़ है। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ फ़रमाते हैं : मेरा ख़याल है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह भी फ़रमाया कि वोह रात के क़ियाम में सुस्ती न करने और लगातार रोज़ा रखने वाले की त़रह़ है।[9]

यानी जिस क़िस्म का या जितना सवाब उस अन्थक आ़बिद को मिलता है जो साइमुद्दहर क़ाइमुल्लैल हो उस क़िस्म का या उतना सवाब उस ख़िदमत करने वाले को मिलता है।[10]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से रिवायत है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने तीन यतीमों की परवरिश की वोह रात को क़ियाम करने वाले, दिन को रोज़ा रखने वाले और सुब्ह़ शाम अल्लाह पाक की राह में अपनी तल्वार सोंतने वाले की त़रह़ है और मैं और वोह जन्नत में दो भाइयों की त़रह़ होंगे जैसा कि येह दो बहनें हैं, और अपनी अंगुश्ते शहादत और दरमियानी उंगली को मिलाया।[11]

अल्लाह पाक हमें फ़र्ज़ रोज़े रखने के साथ साथ नफ़्ली रोज़े रखने और दीगर नेक आमाल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیۡن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)حلیۃ الاولیاء، 8/320، حدیث:12349(2)شعب الایمان، 6/237، حدیث: 7998(3)مستدرک 5/188، حدیث:7277(4)مراٰۃ المناجیح، 6/31(5)شعب الایمان، 3/305، حدیث: 3608ملتقطاً (6)نوادر الاصول، 2/904، حدیث: 1193(7)الزھد لابن المبارک، ص440، حدیث: 1243(8) مسلم، ص1217، حدیث:7468(9)فیض القدیر، 6/381، تحت الحدیث:9298(10)مراٰۃ المناجیح، 6/547(11)ابن ماجہ، 4/194، حدیث:3680۔

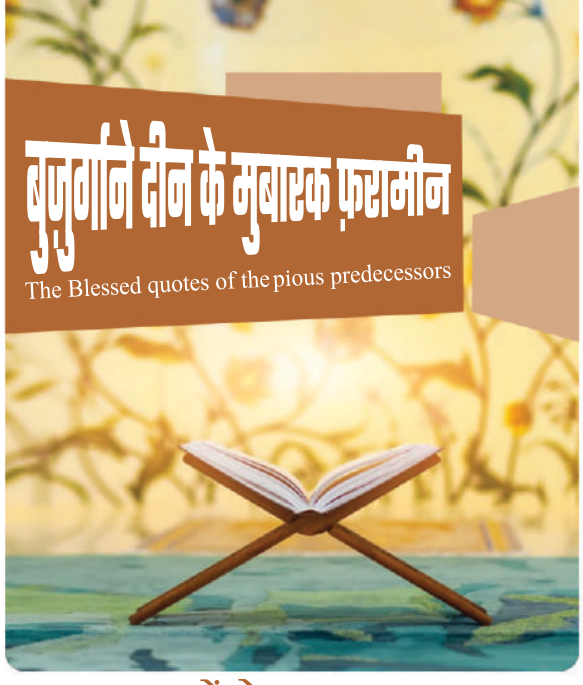

बातों से ख़ुश्बू आए

बादशाह का दरवाज़ा खटखटाने वाले

जब तक तुम नमाज़ में मश्ग़ूल रहते हो तो बादशाह का (यानी अल्लाह पाक की रह़मत) का दरवाज़ा खटखटाते रहते हो और जो बादशाह का दरवाज़ा खटखटाता रहता है इस के लिये दरवाज़ा खोल ही दिया जाता है।

(इरशाद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ)

(مصنف ابن ابی شیبۃ، 2/360)

नेकी करने से बेहतर अ़मल !

नेक लोगों की सोह़बत नेकी करने से बेहतर, बुरे लोगों की सोह़बत बुराई करने से बदतर है। (इरशादे ह़ज़रत सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ) (اخبار الاخیار، ص23)

दिल की सफ़ाई के लिये क्या ज़रूरी है ?

दिल की सफ़ाई और फ़िक्र की रौशनाई के लिये ज़िक्र ना गुज़ीर (ज़रूरी) है। (इरशादे ख़्वाजा शम्सुद्दीन सियालवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ)

(फ़ैज़ाने शम्सुल आ़रिफ़ीन, स. 70)

अह़मद रज़ा का ताज़ा गुलिस्तां है आज भी

मियां बीवी के हुक़ूक़

ज़न व शौहर (मियां बीवी) में हर एक के दूसरे पर हुक़ूक़े कसीरा वाजिब हैं, उन में जो बजा न लाएगा अपने गुनाह में गिरिफ़्तार होगा, अगर एक अदाए ह़क़ न करे तो दूसरा उसे दस्तावेज़ (यानी बुन्याद) बना कर उस के ह़क़ को साक़ित नहीं कर सकता।

(फ़तावा रज़विय्या, 24 / 391)

क़ियामत की क़िस्में

क़ियामत तीन क़िस्म की है : क़ियामते सुग़रा : येह मौत है। दूसरी क़ियामते वुस्ता : वोह येह कि एक क़र्न (यानी एक ज़माना) के तमाम लोग फ़ना हो जाएं और दूसरे क़र्न के नए लोग पैदा हो जाएं। तीसरी क़ियामते कुब्रा : वोह येह कि आस्मान व ज़मीन सब फ़ना हो जाएंगे। (मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत, स. 386 मुल्तक़त़न)

ख़त्मे नुबुव्वत में शक करने वाले का हुक्म

हुज़ूर पुरनूर ख़ातमुन्नबिय्यीन सय्यिदुल मुर्सलीन صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم وعلیہم اجمعین का ख़ातम यानी बिअ़सत में आख़िर जमीअ़ अम्बिया व मुर्सलीन बिला तावील व बिला तख़्सीस होना ज़रूरिय्याते दीन से है जो उस का मुन्किर हो या उस में अदना शक व शुबा को भी राह दे काफ़िर मुर्तद मल्ऊ़न है। (फ़तावा रज़विय्या, 14/333)

अ़त्तार का चमन कितना प्यारा चमन !

बेटियों के ह़वाले से अहम एह़तियात़

बचपन ही से अपनी बच्ची को ह़या का दर्स दीजिये। मां को चाहिये कि (चलती फिरती) बच्ची को चुस्त पाजामा न पहनाए।

(मदनी मुज़ाकरा, 13 ज़ुल क़ादतुल ह़राम 1441 हि.)

ना मह़रम से बात

ना मह़रम मर्दों औ़रत के आपस में बात चीत न करने में ही आ़फ़िय्यत है। (मदनी मुज़ाकरा, 13 ज़ुल क़ादतुल ह़राम 1441 हि.)

घर ख़राब होने से बचने का अ़ज़ीम नुस्ख़ा

मियां बीवी येह मुआ़हदा कर लें कि आपस में होने वाली नाराज़ी का अपने अपने वालिदैन वग़ैरा को नहीं बताएंगे।

(मदनी मुज़ाकरा, 13 ज़ुल क़ादतुल ह़राम 1441 हि.)

अह़कामे तिजारत

1 दर्ज़ी ने कपड़े ख़राब सिये तो क्या हुक्म है ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि एक शख़्स ने दर्ज़ी को सिलाई के लिये कपड़े दिये और जो नाप दर्ज़ी को दिया गया था उस ने उस नाप से छोटे सी दिये। अब वोह कपड़े उस शख़्स को आ भी नहीं रहे। तो मेरी रहनुमाई फ़रमाएं कि उस शख़्स का दर्ज़ी से अपने कपड़े का तावान लेना जाइज़ है ? नीज़ इस सूरत में उस शख़्स पर दर्ज़ी को उजरत देना लाज़िम होगी ? अगर होगी तो कितनी ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : इस त़रह़ कपड़ा सीना कि वोह नाप से इतना छोटा हो कि आ ही न रहा हो, दर्ज़ियों के नज़दीक बहुत ज़ियादा फ़र्क़ शुमार होता है इस सूरत में शरीअ़ते मुत़ह्हरा का हुक्म येह है कि दर्ज़ी से अपने इस बग़ैर सिले कपड़े का तावान ले सकता है और इस सूरत में उजरत लाज़िम नहीं होगी। येह भी इख़्तियार है कि जैसा कपड़ा सिल चुका है वोह ले ले और त़ै शुदा उजरत के बजाए वोह उजरत दे जो उजरत ऐसा कपड़ा सीने पर दी जाती है।

सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "इस का क़ाइ़दा कुल्लिया येह है कि अगर ज़ियादा तफ़ावुत हो यानी उस काम के करने वाले येह कहें कि येह फ़र्क़ है तो इख़्तियार है कि कपड़े की क़ीमत ले या वोही सिला हुवा कपड़ा और इस सूरत में सिलाई वोह दे जो ख़राब सिले हुए की होनी चाहिये न वोह जो बाहम ठहर चुकी और थोड़ा फ़र्क़ हो तो तावान लेना जाइज़ नहीं है।" (फ़तावा अमजदिय्या, 3/269)

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बहारे शरीअ़त में लिखते हैं : "दर्ज़ी से कह दिया कि इतना लम्बा और इतना चौड़ा होगा और इतनी आस्तीन होगी मगर सी कर लाया तो उस से कम है जितना बताया अगर एक आध ऊंगल कम है मुआ़फ़ है और ज़ियादा कम है तो उसे तावान देना पड़ेगा।" (बहारे शरीअ़त, 3/133)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّى الله عليه واٰله وسلَّم

2 पिकनिक से बच जाने वाली रक़म का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मैं ने अपने दोस्तों से बराबर बराबर पैसे जमा किये और ख़ुद भी पैसे मिलाए और उन पैसों से सब के लिये फ़ार्महाउस बुक करवाया, सुवारी और खाने वग़ैरा का एक जैसा इन्तिज़ाम किया लेकिन आख़िर में कुछ पैसे बच गए। सुवाल मेरा येह है कि क्या येह बचे हुए पैसे मैं ख़ुद रख सकता हूं या अपने दोस्तों को वापस करने होंगे ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में उन बचे हुए पैसों में से जो बाक़ी दोस्तों के पैसे हैं वोह आप के लिये ख़ुद रखना जाइज़ नहीं बल्कि आप के पास वोह पैसे अमानत हैं, चूंकि तमाम दोस्तों ने बराबर

बराबर पैसे दिये थे तो आप पर लाज़िम है कि उन के बचे हुए पैसे उन्हें बराबर बराबर लौटा दें क्यूंकि आप अपने दोस्तों की तरफ़ से फ़ार्महाउस बुक करवाने, खाने और सुवारी वग़ैरा का इन्तिज़ाम करने के वकील थे और वकील उन चीज़ों के जितने पैसे अदा करेगा उतने ही मुअक्किल (यानी वकील बनाने वाले) के हक़ में नाफ़िज़ होंगे, और वकील चूंकि अमीन होता है तो मुअक्किल के दिये हुए पैसों में से जो बच जाए वोह भी वकील के पास अमानत होते हैं जिसे वोह ख़ुद नहीं रख सकता बल्कि मुअक्किल को वापस लौटाना लाज़िम होता है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 बस का किराया अदा करना भूल गए तो क्या हुक्म है ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मैं ने शहर की लोकल बस में एक मक़ाम से दूसरे मक़ाम तक सफ़र किया, दौराने सफ़र कंडक्टर ने मुझ से किराया तलब नहीं किया और मैं भी उसे किराया देना भूल गया, मन्ज़िल पर उतरने के बाद याद आया। अब उस बस को ढूंडना भी मुश्किल है। अब मैं किराए की रक़म का क्या करूं ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में आप पर लाज़िम है कि उस बस को तलाश कर के येह रक़म उन तक पहुंचाएं, फ़ी ज़माना येह काम ज़ियादा मुश्किल भी नहीं है, उ़मूमन रूट की लोकल बसें रोज़ाना मिलते जुल्ते टाइम पर मख़्सूस मक़ामात से गुज़रती हैं लिहाज़ा हर मुम्किन कोशिश की जाए कि किराए की रक़म अस्ल मालिक तक पहुंच जाए, फिर अगर किसी तरह भी मालिक के मिलने की उम्मीद बाक़ी न रहे तो किराए की रक़म अस्ल मालिक की तरफ़ से सदक़ा कर दें। हां सदक़ा करने के बाद अगर किसी तरह वोह बस मिल जाए और बस का अस्ल मालिक सदक़ा करने पर राज़ी न हुवा तो अब आप को वोह रक़म उसे अदा करनी होगी।

आला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से एक शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल हुवा जिस ने गाड़ी में सफ़र किया और किसी वज्ह से किराया अदा न कर सका तो अब उसे क्या करना चाहिये ? जवाबन इरशाद फ़रमाया : "स्टेशन पर जाने वाली गाड़ियां अगर कोई मानेअ़ क़वी न हो तो हर गाड़ी कि आमदो रफ़्त पर ज़रूर आती जाती हैं। अगर ज़ैद स्टेशन पर तलाश करता, मिलना आसान था, अब भी ख़ुद या बज़रीए किसी मुतदय्यन मोतमद के तलाश कराए, अगर मिले दे दिये जाएं, वरना जब यास व ना उम्मीद हो जाए उस की तरफ़ से तसद्दुक़ कर दे, अगर फिर कभी वोह मिले और उस तसद्दुक़ पर राज़ी न हो, तो उसे अपने पास से दे।" (फ़तावा रज़विय्या, 25/55)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

4 चीज़ की क़ीमत पर क़ब्ज़ा करने से पहले उसे सदक़ा करना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मेरे दोस्त की अनाज की दुकान है। मैं ने उस से दो हज़ार रुपिये का सामान ख़रीदा तो उस ने मुझ से सामान की क़ीमत नहीं ली और कहा कि येह पैसे मेरे फ़ुलां दोस्त को नफ़्ली सदक़े के तौर पर दे देना। मेरी रहनुमाई फ़रमाएं कि येह रक़म मैं अपने उस दोस्त की तरफ़ से दूसरे दोस्त को दे सकता हूं, या सदक़ा करने से पहले उस रक़म पर दुकानदार का क़ब्ज़ा होना ज़रूरी है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में आप येह दो हज़ार रुपिये दुकानदार के क़ब्ज़े में दिये बग़ैर भी दूसरे दोस्त को सदक़े के तौर पर दे सकते हैं। क्यूंकि क़वाइ़दे शरइ़य्या की रौशनी में फ़रोख़्त कुनन्दा अगर समन पर क़ब्ज़ा करने से पहले वोह रक़म सदक़ा करना चाहे तो कर सकता है, उस में शरअ़न कोई ह़रज नहीं।

सदरुश्शरीआ़ बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ लिखते हैं : "समन में क़ब्ज़ा करने से पहले तसर्रुफ़ जाइज़ है उस को बैअ़ व हिबा व इजारा व **सदक़ा** व वसिय्यत सब कुछ कर सकते हैं।" (बहारे शरीअ़त, 2/749)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

हज़रते सय्यिदुना

यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام का हुस्न और बरकात

(क़िस्त : 06)

हुस्ने यूसुफ़ की शान आख़िरेकार भाई फिर मिस्र की त़रफ़ रवाना हुए, जब वोह हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام के पास पहुंचे तो कहने लगे : ऐ अ़ज़ीज़ ! हमें और हमारे घर वालों को तंगी, भूक की सख़्ती और जिस्मों के दुबला हो जाने की वज्ह से मुसीबत पहुंची हुई है, हम ह़क़ीर सा सरमाया ले कर आए हैं जिसे कोई सौदागर अपने माल की क़ीमत में क़बूल न करे। वोह सरमाया चन्द खोटे दिरहम और घर की अश्या में से चन्द पुरानी बोसीदा चीज़ें थीं, आप हमें पूरा नाप दे दीजिये जैसा खरे दामों से देते थे और येह नाक़िस पूंजी क़बूल कर के हम पर कुछ ख़ैरात कीजिये बेशक अल्लाह तआ़ला ख़ैरात देने वालों को सिला देता है।[1] भाइयों का येह ह़ाल सुन कर हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام पर गिर्या त़ारी हो गया और मुबारक आंखों से आंसू जारी हो गए और फ़रमाया : क्या यूसुफ़ को मारना, कुंएं में गिराना, बेचना, वालिद साहिब से जुदा करना और उन के बाद उन के भाई को तंग रखना, परेशान करना तुम्हें याद है और येह फ़रमाते हुए हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام को तबस्सुम आ गया, भाइयों ने जब हज़रते यूसुफ़ के गोहरे दनदान का हुस्न देखा तो पहचाना कि येह तो जमाले यूसुफ़ी की शान है[2] लिहाज़ा कहने लगे : क्या वाक़ेई आप ही यूसुफ़ हैं ? हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : हां ! मैं यूसुफ़ हूं और येह मेरा भाई है, बेशक अल्लाह तआ़ला ने हम पर एहसान किया, हमें जुदाई के बाद सलामती के साथ मिलाया और दीन व दुनिया की नेमतों से सरफ़राज़ फ़रमाया। बेशक जो गुनाहों से बचे और अल्लाह तआ़ला के फ़राइज़ की बजा आवरी करे, अपने नफ़्स को हर उस बात या अ़मल से रोक कर रखे जिसे अल्लाह तआ़ला ने उस पर ह़राम फ़रमाया है तो अल्लाह तआ़ला उस की नेकियों का सवाब और उस की इत़ाअ़त गुज़ारियों की जज़ा ज़ाएअ़ नहीं करता।

एतिराफ़े जुर्म हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام के भाइयों ने अपनी ख़त़ाओं का एतिराफ़ करते हुए कहा : ख़ुदा की क़सम ! बेशक अल्लाह तआ़ला ने आप को मुन्तख़ब फ़रमाया और आप को हम पर इल्म, अ़क़्ल, सब्र, ह़िल्म और बादशाहत में फ़ज़ीलत दी, बेशक हम ख़त़ाकार थे और इसी का नतीजा है कि अल्लाह तआ़ला ने आप को इ़ज़्ज़त दी, बादशाह बनाया और हमें मिस्कीन बना कर आप के सामने लाया।[3]

वालिदे माजिद के लिये अपना कुर्ता भेजा जब तआ़रुफ़ हो गया तो हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام ने भाइयों से अपने वालिदे माजिद का ह़ाल दरयाफ़्त किया उन्हों ने कहा : आप की जुदाई के ग़म में रोते रोते उन की बीनाई बह़ाल नहीं रही। हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : मेरा येह कुर्ता ले जाओ जो मेरे वालिदे माजिद ने तावीज़ बना कर मेरे गले में डाल दिया था और उसे मेरे बाप के मुंह पर डाल देना वोह देखने वाले हो जाएंगे और अपने सब घर भर को मेरे पास ले आओ ताकि जिस त़रह वोह मेरी मौत की ख़बर सुन कर ग़मज़दा हुए इसी त़रह मेरी बादशाहत का नज़ारा कर के ख़ुश हो जाएं।[4] जब (भाइयों का) क़ाफ़िला मिस्र की सरज़मीन से निकला और कन्आ़न की त़रफ़ रवाना हुवा तो हज़रते याक़ूब عَلَیْہِ السَّلَام ने अपने बेटों और पोतों या पोतों और पास वालों से फ़रमा दिया : बेशक ! मैं यूसुफ़ की

क़मीस से जन्नत की ख़ुश्बू पा रहा हूं। अगर तुम मुझे कम समझ न कहो तो तुम ज़रूर मेरी बात की तस्दीक़ करोगे।[5] एक बेटे यहूदा बहुत तेज़ी से सफ़र तै कर के वालिद साहिब के पास पहुंचे और जूंही हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़मीस हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام के चेहरे पर डाली तो उसी वक़्त उन की आंखें दुरुस्त हो गईं और कमज़ोरी के बाद क़ुव्वत और ग़म के बाद ख़ुशी लौट आई, फिर हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : मैं ने तुम से न कहा था कि मैं अल्लाह तआला की तरफ़ से वोह बात जानता हूं जो तुम नहीं जानते कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ज़िन्दा हैं और अल्लाह तआला हमें आपस में मिला देगा।[6]

याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام मिस्र रवाना हो गए हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने वालिदे माजिद को और उन के अहलो औलाद को बुलाने के लिये अपने भाइयों के साथ 200 सुवारियां और कसीर सामान भेजा था, हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने मिस्र तशरीफ़ ले जाने का इरादा फ़रमाया और अपने अहले ख़ाना को जमा किया तो वोह कुल मर्दो औरत 72 या 73 अफ़राद थे।[7]

वालिद की आमद पर ख़ुसी का इज़हार जब हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام मिस्र के क़रीब पहुंचे तो उधर से हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने मिस्र के बादशाहे आज़म को अपने वालिदे माजिद की तशरीफ़ आवरी की इत्तिलाअ़ दी और चार हज़ार लश्करी और बहुत से मिस्री सुवारों को हमराह ले कर आप अपने वालिद साहिब के इस्तिक़्बाल के लिये सदहा रेशमी फरेरे उड़ाते और क़तारें बांधे रवाना हुए।

फ़रिश्ते भी हाज़िर हो गए हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام अपने फ़रज़न्द यहूदा के हाथ पर टेक लगाए तशरीफ़ ला रहे थे कि आप عَلَيْهِ السَّلَام की नज़र लश्कर पर पड़ी तो देखा कि सहरा ज़र्क़ बर्क़ सुवारों से पुर हो रहा है, फ़रमाने लगे : ऐ यहूदा ! क्या येह फ़िरऔने मिस्र है जिस का लश्कर इस शानो शौकत से आ रहा है ? यहूदा ने अ़र्ज़ की : नहीं ! येह आप के फ़रज़न्द हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام हैं। हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام को मुतअ़ज्जिब देख कर अ़र्ज़ किया : हवा की तरफ़ नज़र फ़रमाइये, आप की ख़ुशी में शिर्कत के लिये फ़रिश्ते हाज़िर हुए हैं जो कि मुद्दतों आप عَلَيْهِ السَّلَام के ग़म की वज्ह से रोते रहे हैं। फ़रिश्तों की तस्बीह़, घोड़ों के हिन्हिनाने और त़बल व बिगुल की आवाज़ों ने अ़जीब कैफ़िय्यत पैदा कर दी थी।

वालिद के अदब का निराला अन्दाज़ येह मुहर्रम की दसवीं तारीख़ थी, जब दोनों हज़रात यानी हज़रते याक़ूब और हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِمَا السَّلَام क़रीब हुए तो हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने सलाम अ़र्ज़ करने का इरादा ज़ाहिर किया। हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : आप तवक़्क़ुफ़ कीजिये ! वालिद साहिब को पहले सलाम का मौक़अ़ दीजिये, चुनान्चे हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُذْهِبَ الْاَحْزَانِ यानी ऐ ग़म व अन्दोह के दूर करने वाले ! तुझ पर सलाम हो। फिर दोनों साहिबों ने उतर कर मुआ़नक़ा किया और मिल कर ख़ूब रोए, फिर उस मुज़य्यन रिहाइश गाह में दाख़िल हुए जो पहले से हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام के इस्तिक़्बाल के लिये नफ़ीस ख़ैमे वग़ैरा नस्ब कर के आरास्ता की गई थी।[8]

ख़्वाब शर्मिन्दए ताबीर हुवा जब हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام अपने वालिदैन और भाइयों के साथ मिस्र में दाख़िल हुए और दरबारे शाही में अपने तख़्त पर जल्वा अफ़रोज़ हुए तो उन्हों ने अपने वालिदैन को भी अपने साथ तख़्त पर बिठा लिया, इस के बाद वालिदैन और सब भाइयों ने हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को सज्दा किया।[9] हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने जब उन्हें सज्दा करते देखा तो कहा : ऐ मेरे बाप ! येह मेरे उस ख़्वाब की ताबीर है जो मैं ने बचपन की हालत में देखा था। बेशक वोह ख़्वाब मेरे रब्बे पाक ने बेदारी की हालत में सच्चा कर दिया।[10]

---

(1) सिरातुल जिनान, 5/52 (2) सिरातुल जिनान, 5/52 ब तग़य्युर (3) सिरातुल जिनान, 5/53 ब तग़य्युर (4) सिरातुल जिनान, 5/55 (5) सिरातुल जिनान, 5/57 (6) सिरातुल जिनान, 5/58 ब तग़य्युर (7) सिरातुल जिनान, 5/59 ब तग़य्युर (8) सिरातुल जिनान, 5/59, 60 ब तग़य्युर (9) सिरातुल जिनान, 5/62, येह सज्दा ताज़ीम और आजिज़ी के इज़्हार के तौर पर था और उन की शरीअ़त में जाइज़ था जैसे हमारी शरीअ़त में किसी अ़ज़मत वाले की ताज़ीम के लिये खड़ा होना, मुसाफ़हा करना और दस्तबोसी करना जाइज़ है। याद रहे कि सज्दए इबादत अल्लाह तआला के सिवा और किसी के लिये कभी जाइज़ नहीं हुवा और न हो सकता है क्यूंकि येह शिर्क है और सज्दए ताज़ीमी भी हमारी शरीअ़त में जाइज़ नहीं। (सिरातुल जिनान, 5/62) (10) सिरातुल जिनान, 5/62

ह़ज़रते उ़मैर बिन वहब जुमह़ी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

अ़ज़ीम सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते उ़मैर बिन वहब जुमह़ी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ इस्लाम लाने से पहले इस्लाम और अहले इस्लाम के शदीद मुख़ालिफ़ थे आप रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم को शदीद तकालीफ़ देते थे। आप के इस्लाम लाने का वाक़िआ़ मोजिज़ाते नबवी की एक रौशन मिसाल है।[1]

ग़ज़्वए बद्र से पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ग़ज़्वए बद्र में मुश्रिकीन की त़रफ़ से शरीक हुए चूंकि बहुत बहादुर और क़ुरैश में बड़ी इ़ज़्ज़त का मक़ाम रखते थे[2] इस लिये क़ुरैश ने आप को मुसलमानों की तादाद और त़ाक़त का अन्दाज़ा लगाने के लिये भेजा। आप ने अपने घोड़े पर लश्करे इस्लाम के गिर्द चक्कर लगाया और कहा : मुसलमान तीन सौ के क़रीब हैं, फिर वादी का चक्कर लगाया और आ कर ख़बर दी : उन के पीछे कोई मदद नहीं, फिर कहा : ऐ गिरोहे क़ुरैश ! मैं ने ऐसी बलाएं देखी हैं जो मौत को उठाए हुए हैं, उन लोगों के पास अपनी तल्वारों के सिवा कोई पनाहगाह नहीं। अब तुम अपनी राय पर ग़ौर कर लो (कि जंग करनी है या नहीं)।[3] मारकए बद्र में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को ज़िल्लत आमेज़ शिकस्त हुई और आप का बेटा "वहब" मुसलमानों के हाथों क़ैद हो गया।[4] आप ख़ुद एक अन्सारी सह़ाबी के हाथों शदीद ज़ख़्मी हो कर गिर पड़े लेकिन रात की ठन्डक से कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो छुपते छुपाते मक्का पहुंच गए और सेह़तयाबी पाई।[5]

क़त्ल का मन्सूबा कुछ दिनों बाद आप और सफ़वान बिन उमय्या ह़तीमे काबा में बैठे बद्र के मक़्तूलीन को याद कर रहे थे। (सफ़वान का बाप उमय्या बिन ख़लफ़ भी मैदाने बद्र में मारा गया था,) सफ़वान ने कहा : ख़ुदा की क़सम ! उन के बाद ज़िन्दगी में कोई लुत्फ़ नहीं। आप ने कहा : तुम सच कहते हो। अल्लाह की क़सम ! अगर मुझ पर भारी क़र्ज़ न होता और अपने बाद अपने बच्चों की मुफ़िलसी की फ़िक्र न होती तो मैं मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के पास जा कर उन को क़त्ल कर देता। मेरे पास वहां जाने का एक बहाना भी है कि मेरा बेटा उन की क़ैद में है, सफ़वान ने फ़ौरन कहा : तुम्हारा क़र्ज़ मेरे ज़िम्मे है, मैं उसे अदा करूंगा और मैं तुम्हारे बच्चों की कफ़ालत करूंगा। आप ने कहा : फिर तुम इस मुआ़मले को पोशीदा रखना, सफ़वान ने राज़दारी का वादा कर लिया।[6]

मदीना का सफ़र आप ने तल्वार को तेज़ करवाया फिर उसे ज़हर में बुझाया और मदीना की त़रफ़ चल दिये। मस्जिदे नबवी के क़रीब पहुंचे तो फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने पहचान लिया और फ़रमाया : येह अल्लाह का दुश्मन उ़मैर बिन वहब है ! ख़ुदा की क़सम ! येह किसी शर के इरादे से ही आया है। फ़ौरन बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर ख़बर दी, रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरे पास ले आओ। फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ आप को सख़्ती से खींचते हुए बारगाहे रिसालत में ले आए।[7]

ग़ैबी ख़बर का ज़ुहूर रसूले मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ उ़मैर ! तुम किस इरादे से आए हो ? अ़र्ज़ की : अपने क़ैदी बेटे की वज्ह से आया हूं, आप इस पर एहसान फ़रमाएं, इरशाद फ़रमाया : तो फिर गर्दन में येह तल्वार क्यूं लटक रही है ? अ़र्ज़ की : अल्लाह उन तल्वारों का भला न करे, क्या येह हमारे कुछ काम आईं? रसूले करीम ने फ़रमाया : सच बताओ ! किस लिये आए हो ? आप ने वोही बात दोहरा दी। तब रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम और सफ़्वान ह़तीम में बैठे थे, तुम ने क़ुरैश के मक़्तूलीन का ज़िक्र किया और कहा : अगर मुझ पर क़र्ज़ और बच्चों का बोझ न होता तो मैं मुह़म्मद को क़त्ल कर देता। इस पर सफ़्वान ने तुम्हारे क़र्ज़ और बच्चों की ज़िम्मेदारी इस शर्त पर उठा ली कि तुम मुझे क़त्ल करोगे, लेकिन अल्लाह मेरे और तुम्हारे इरादे के दरमियान ह़ाइल है। येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ह़ैरान हो गए और पुकार उठे : मैं गवाही देता हूं कि आप अल्लाह के रसूल हैं, हम आप को आस्मानी ख़बरों और वह़ी के मुआ़मले में झुटलाते थे, लेकिन येह एक ऐसा मुआ़मला था जो मेरे और सफ़्वान के इ़लावा कोई न जानता था, ख़ुदा की क़सम ! मुझे यक़ीन है कि येह ख़बर आप को अल्लाह ही ने दी है। फिर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से फ़रमाया : अपने भाई को दीन की समझ दो, इसे क़ुरआन पढ़ाओ और इस के क़ैदी को आज़ाद कर दो। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने आप को क़ुरआन सिखाया और आप के क़ैदी बेटे "वहब" को आज़ाद कर दिया उन्हों ने भी इस्लाम क़बूल कर लिया।[8]

मक्का वापसी जब ह़ज़रते उ़मैर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने मक्का वापस जाने का इरादा किया तो अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मैं अल्लाह के नूर को बुझाने और मुसलमानों को तकालीफ़ पहुंचाने में आगे आगे रहा, अब आप से इजाज़त चाहता हूं ताकि अहले मक्का को अल्लाह और उस के रसूल की त़रफ़ बुलाऊं और इस्लाम की दावत दूं, वरना ज़िस त़रह़ मैं ने मुसलमानों को दीने ह़क़ क़बूल करने पर तकालीफ़ दी थीं इसी त़रह़ उन काफ़िरों को कुफ़्रो शिर्क न छोड़ने पर तक्लीफ़ दूंगा। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप को इजाज़त दे दी। दूसरी त़रफ़ मक्का में सफ़्वान लोगों को ख़ुशख़बरी देता कि कुछ दिनों में एक वाक़िआ़ पेश आएगा जो तुम्हें बद्र का ग़म भुला देगा।[9] ह़ज़रते उ़मैर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने मक्के तशरीफ़ ला कर अपने इस्लाम लाने का एलान किया फिर घर वालों को भी ईमान लाने की दावत दी, सफ़्वान को मालूम हुवा तो कहने लगा : मैं कभी भी उ़मैर से बात नहीं करूंगा। एक मरतबा सफ़्वान अपने घर में था आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه उस के पास गए और उसे पुकारा तो उस ने कोई जवाब न दिया, आप ने फ़रमाया : ऐ सफ़्वान ! तू हमारे क़बीले का सरदार है हम पत्थरों की इ़बादत करते और उन के लिये ज़ब्ह़ किया करते थे तुम क्या समझते हो कि क्या येह दीने ह़क़ है ? लेकिन सफ़्वान ने कोई जवाब न दिया।[10] आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने अहले मक्का को इस्लाम की दावत दी और इस्लाम दुश्मनों को अज़िय्यत पहुंचाई। आप की कोशिशों से बहुत से लोग इस्लाम में दाख़िल हो गए[11] फिर आप ने मदीने की जानिब हिजरत की।[12]

सफ़्वान को अमान मिली फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर सफ़्वान जद्दा की त़रफ़ भाग निकला ताकि समुन्दर के रास्ते यमन चला जाए, ह़ज़रते उ़मैर ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : मेरी क़ौम का सरदार सफ़्वान भाग गया है आप उसे अमान अ़त़ा कर दें। फ़रमाया। वोह अमान में है, और बत़ौरे निशानी अपना वोह इ़मामा अ़त़ा फ़रमाया जिसे पहन कर मक्का में दाख़िल हुए थे। आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه इ़मामा मुबारका ले कर सफ़्वान के पास पहुंचे और उसे वापस ले आए। रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सफ़्वान को अमान अ़त़ा फ़रमा कर ग़ौरो फ़िक्र के लिये चार माह की मोहलत दे दी, आख़िरेकार ह़ज़रते सफ़्वान बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने इस्लाम क़बूल कर लिया।[13]

ग़ज़्वात व वफ़ात ह़ज़रते उ़मैर बिन वहब رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने ग़ज़्वए उ़हुद और दीगर ग़ज़्वात में शिर्कत की सआ़दत पाई[14] आप फ़त्ह़े मिस्र के जां निसारों में भी शामिल रहे।[15] फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के दौरे ख़िलाफ़त 22 हिजरी के बाद आप की वफ़ात हुई[16] एक क़ौल के मुत़ाबिक़ आप ने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के ज़मानए ख़िलाफ़त के शुरूअ़ में वफ़ात पाई।[17]

---

(1) سیرت ابن ہشام، ص274 (2) الاستیعاب، 3/294 (3) سیرت ابن ہشام، ص257 (4) سیرت ابن ہشام، ص274 (5) طبقاتِ ابنِ سعد، 4/151 (6) سیرتِ ابنِ ہشام، ص274 ملخصاً (7) سیرتِ ابنِ ہشام، ص274 (8) سیرتِ ابنِ ہشام، ص274 ملخصاً (9) سیرتِ ابن ہشام، ص274 (10) الاستیعاب، 3/295 (11) سیرتِ ابنِ ہشام، ص275 (12) الاعلام للزرکلی، 5/90 (13) سیرتِ ابنِ ہشام، ص475 ملخصاً (14) الاعلام للزرکلی، 5/90 (15) الاستیعاب، 3/295 (16) الاعلام للزرکلی، 5/90- انساب الاشراف للبلاذری، 10/253 (17) الاستیعاب، 3/295۔

मज़ार हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिस क़रशी सहमी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

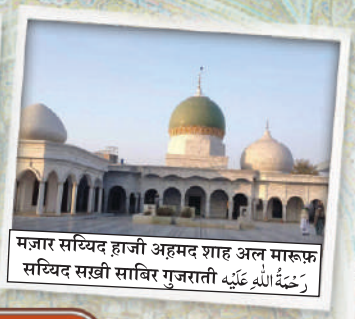
मज़ार सय्यिद हाजी अहमद शाह अल मारूफ़ सय्यिद सख़ी साबिर गुजराती رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

मज़ार पीरे त़रीक़त ख़्वाजा ह़कीम असार अ़ली मुस्तालवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

मज़ार हज़रते ख़्वाजा सिराजुल ह़क़ गुरदासपुरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये

शव्वालुल मुकर्रम इस्लामी साल का दसवां महीना है। इस में जिन सह़ाबए किराम, औलियाए इ़ज़ाम और उ़लमाए इस्लाम का विसाल या उ़र्स है, उन में से 120 का मुख़्तसर ज़िक्र "**माहनामा फ़ैज़ाने मदीना**" शव्वालुल मुकर्रम 1438 हि. ता 1446 हि. के शुमारों में किया जा चुका है। मज़ीद 13 का तआ़रुफ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان 1 ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिस क़रशी सहमी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ क़ुरैश के सरदार ह़ारिस बिन क़ैस के बेटे थे, ज़मानए जाहिलिय्यत में उस ख़ानदान में सयादत (सरदारी) व दौलत दोनों जमा थीं, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह शाइ़र भी थे, उन्हों ने अपने दीगर भाइयों के साथ इब्तिदा में ही इस्लाम क़बूल किया, ह़बशा हिजरत की और ग़ज़वए त़ाइफ़ में शव्वाल 8 हि. को शहीद हुए।[1] 2 ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबू उमय्या मख़्ज़ूमी क़रशी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के वालिद बनू मख़्ज़ूम के मुअ़ज़्ज़ज़ व फ़य्याज़ व सख़ी थे, दौराने सफ़र क़ाफ़िले वालों की कफ़ालत करने की वज्ह से ज़ादुर्राकिब मश्हूर थे, उन की वालिदा आ़तिका नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी थीं, आप उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के बाप शरीक भाई थे, फ़त्ह़े मक्का से पहले इस्लाम लाए, फ़त्ह़े मक्का, ग़ज़वए ह़ुनैन और ग़ज़वए त़ाइफ़ में शिर्कत की और ग़ज़वए त़ाइफ़ शव्वाल 8 हि. में शहीद हुए।[2]

औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام 3 सूफ़िये बा सफ़ा ख़्वाजा फ़ख़्रे उ़मरी मुजद्दिदी सरहिन्दी अल मारूफ़ मौलवी मानवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ उ़लूमे ज़ाहिरी व बात़िनी के जामेअ़, बेहतरीन मुदर्रिस और दर्सी कुतुब के शारेह़ व मुह़श्शी थे, ख़ानदाने मुजद्दिदिया के तक़रीबन तमाम साह़िबज़ादगान आप के शागिर्द हैं, आप का विसाल 4 शव्वाल 1118 हि. को हुवा, क़ुब्बा मुजद्दिदे अल्फ़े सानी से जानिबे जुनूब एक क़ुब्बे में मदफ़ून हैं।[3] 4 मुर्शिद मोह़द्दिसे आज़म, सिराजुल औलिया ह़ज़रते ख़्वाजा सिराजुल ह़क़ गुरदासपुरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की विलादत 14 ज़ीक़ादा 1273 हि. करनाल, हिन्द के क़ुरैशी फ़ारूक़ी घराने में हुई, आप ने इब्तिदा में त़हसीलदार की नौकरी की, फिर अपने आप को दीन के लिये वक़्फ़ किया और दौरए ह़दीस कर के फ़ारिग़ुत्त़हसील हुए, बैअ़तो ख़िलाफ़त का शरफ़ सिल्सिला चिश्तिया साबिरिया से ह़ासिल हुवा, सिराजुल औलिया और आप के ख़ुलफ़ा ने फ़ित्ना क़ादियानिय्यत का डट कर मुक़ाबला किया, आप से कई करामात का सुदूर भी हुवा, आप का विसाल 28 शव्वाल 1350 हि. को हुवा, आप का मज़ार मह़ल्ला ग़फ़ूरी गुरदासपूर पंजाब हिन्द में है।[4] 5 पीरे त़रीक़त मुफ़्ती सय्यिद अमीर मुह़म्मद शाह हुसैनी नक़्शबन्दी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की पैदाइश सिन्ध में हुई, आप सूफ़िये बा सफ़ा, मुफ़्तिये इस्लाम, बानिये मदरसा ऐनुल उ़लूम अमीनानी, कसीरुत्तलामिज़ा, साह़िबे फ़तावा अमीरिया और उस्ताज़ुल उ़लमा थे, विसाल 29 शव्वाल 1379 हि. को हुवा, मज़ार दरगाह अमीनानी शरीफ़ में है।[5] 6 पीरे त़रीक़त ख़्वाजा ह़कीम असार अ़ली मुस्तालवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ख़लीफ़ए आस्तानए आ़लिया मुस्ताल शरीफ़ ख़्वाजा अ़ब्दुल अ़ली मुस्तालवी के फ़रज़न्द व ख़लीफ़ा, आ़लिम व फ़ाज़िल, ह़कीम ह़ाज़िक़, इमामो

ख़तीब जामेअ़ मस्जिद, शाइ़र, मुसन्निफ़ और बानिये आस्ताना आ़लिया मुस्ताल शरीफ़ हैं। आप की विलादत मुस्ताल शरीफ़ में हुई और विसाल 24 शव्वाल 1411 हि. को फ़रमाया, मज़ार मुस्ताल शरीफ़ में है।[(6)]

उ़लमाए इस्लाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام **7** शैख़ुश्शुयूख़ ह़ज़रते इमाम ह़ाफ़िज़ इब्ने सैरफ़ी अबू अ़म्र उ़स्मान बिन सईद उमवी दानी मालिकी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश 371 हि. को क़ुर्तबा में हुई, आप ने तह़सीले इ़ल्म के बाद मिस्र, क़ैरवान, त्यूनस और फिर दानिया, उन्दुलुस में दर्सो तदरीस की ख़िदमात सर अन्जाम दीं, आप आ़लिमे उन्दुलुस, इमामुल वक़्त, ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस, मुफ़स्सिर व अदीब, वाइ़ज़ व ख़तीब और मुस्तजाबुद्दावात बुज़ुर्ग थे, मगर आप की शोहरत उ़लूमे क़ुरआनिया बिल ख़ुसूस फ़न्ने क़िराअत में महारत व तदरीस की वज्ह से है, आप का विसाल दानिया में 15 शव्वाल 444 हि. को हुवा, नमाज़े जनाज़ा में सुल्तानुल वक़्त समेत कसीर लोगों ने शिर्कत की।[(7)] **8** इमामुल अइम्मा ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अय्यूब बिन नूह ग़ाफ़िक़ी वैलेन्सी मालिकी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه यूरोपियन मुल्क स्पेन (Spain) के शहर वैलेन्सिया (Valencia) के रहने वाले थे, आप की पैदाइश 530 हि. और विसाल 6 शव्वाल 608 हि. को हुवा। आप उ़लूमो फ़ुनून में माहिर मालिकी आ़लिमे दीन, बेहतरीन क़ारी, मुफ़्तिये इस्लाम, मुफ़स्सिरे क़ुरआन, अदबे अ़रबी के माहिर, जामेअ़ मस्जिद वैलेन्सिया के ख़तीब, जूदो सख़ा के पैकर, अख़्लाक़े ह़सना के मालिक और उन्दुलुस के नाबिग़ए अ़स्र थे।[(8)] **9** शैख़ुल क़ुर्रा ह़ज़रते इमाम ज़ैनुद्दीन अ़ब्दुर्रह़मान बिन शह़ाज़ह यमनी शाफ़ेई़ मिस्री رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه 975 हि. को क़ाहिरा मिस्र में पैदा हुए और 15 शव्वाल 1050 हि. को विसाल फ़रमाया, आप शैख़ुल क़ुर्रा, इमामुल मुजव्विदीन, मुदर्रिस, कसीरुत्तलामिज़ा, ह़ुस्ने ज़ाहिरी और बात़िनी दोनों से माला माल, वलिय्ये कामिल और फ़क़ीहे अ़स्र थे। आप मालदार ताजिर भी थे, अपना माल त़लबा व फ़ुक़रा पर दिल खोल कर ख़र्च करते थे।[(9)] **10** शैख़ुल क़ुर्रा ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू समाह़ अह़मद बिन रजब बक़री शाफ़ेई़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश 1074 हि. में हुई, आप ज़हीनो फ़त़ीन, कसीरुल इ़ल्म, फ़क़ीहे शाफ़ेई़ और मुह़क़्क़िक़ थे, घर हो या सफ़र बहुत ज़ियादा तिलावते क़ुरआन करते। आप पढ़ने पढ़ाने में बहुत मेह़नत करते थे, ज़िन्दगी के आख़िरी साल में ह़ज के लिये तशरीफ़ ले गए जब मक़ामे नख़्ल में पहुंचे तो आख़िर शव्वाल 1189 हि. को वफ़ात हुई और वहीं दफ़्न किये गए।[(10)] **11** आ़शिक़ुर्रसूल ह़ज़रते मौलाना अ़ब्दुल क़दीर क़ादिरी बदायूनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश शव्वाल 1311 हि. बदायून, यूपी, हिन्द के उ़स्मानी इ़ल्मी घराने में हुई और यहीं 3 शव्वाल 1379 हि. को विसाल फ़रमाया। आप जामेअ़ माक़ूल व मन्क़ूल, शैख़े त़रीक़त, मुदर्रिस व जानशीन मद्रसा व ख़ानक़ाहे क़ादिरिया बदायून, मुफ़्तिये आज़म रियासत ह़ैदराबाद दक्कन, मुजाहिदे दीनो मिल्लत, मुसलमानों के फ़अ़्आल रहनुमा और तह़रीके आज़ादिये हिन्द में भरपूर ह़िस्सा लिया।[(11)] **12** शैख़ुल ह़दीस मौलाना सय्यिद ह़ाजी अह़मद शाह अल मारूफ़ सय्यिद सख़ी साबिर गुजराती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादत 1351 हि. को गुजरात में हुई, आप जय्यिद आ़लिमे दीन, तल्मीज़ ह़कीमुल उम्मत व मुह़द्दिसे आज़म व शैख़े त़रीक़त, उस्ताज़ुल उ़लमा और जूदो सख़ा के पैकर थे, उन का विसाल 30 शव्वाल 1401 हि. में हुवा, दरबारे आलिया शहंशाहे विलायत मह़ल्ला अ़लीपूरा गुजरात में मदफ़ून हुए।[(12)]

13 शम्सुल फ़ुक़हा ह़ज़रते मुफ़्ती मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह बलोच नई़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश 1344 हि. को मकरान, ईरान में हुई, आप जय्यिद आ़लिमे दीन व मुफ़्ती, बिल ख़ुसूस ताजुल उ़लमा मुफ़्ती मुह़म्मद उ़मर नई़मी के शागिर्द, बेहतरीन मुदर्रिस, बानिये दारुल उ़लूम मुजद्दिदिया नई़मिया, उस्ताज़ुल उ़लमा, मुह़िब्बे कुतुब व मख़्त़ूत़ात और साह़िबे फ़तावा मुजद्दिदिया नई़मिया हैं। विसाल रोड एक्सीडन्ट की वज्ह से 10 शव्वाल 1402 हि. को फ़रमाया, मज़ार दारुल उ़लूम मुजद्दिदिया नई़मिया में है।[(13)]

---

(1) دیکھیے: الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، 1/685-3/15-4/43 (2) دیکھیے: الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، 4/10-8/404 (3) روضۃ القیومیہ، 1/472، 473 (4) انسائیکلوپیڈیا اولیائے کرام، 3/400 تا 411 (5) انوار علمائے اہل سنت سندھ، ص54 تا 56 (6) انسائیکلوپیڈیا اولیائے کرام، 2/661 (7) سیر اعلام النبلاء، 13/481 تا 485 (8) غایۃ النہایۃ فی طبقات القراء، 2/93- سیر اعلام النبلاء، 16/69 (9) خلاصۃ الاثر، 2/358- فوائد الارتحال، 4/583 (10) ہدیۃ العارفین، 1/179- تاریخ عجائب الآثار فی التراجم والاخبار (تاریخ الجبرتی)، 1/650 (11) اکابر بدایون، ص49 تا 58 (12) خفتگان خاک گجرات، ص24، 25 (13) انوار علمائے اہلسنت سندھ، ص486 تا 489۔

नए लिखारी
(New Writers)

नए लिखने वालों के इनआम याफ़्ता मज़ामीन

ख़ियानत की क़ुरआनी मज़म्मत

अ़ब्दुर्रह़मान अ़त़्तारी
(दर्जए राबिआ जामिअ़तुल मदीना)

इस्लाम एक मुकम्मल ज़ाबिताए ह़यात है जो अपने मानने वालों को आला अख़्लाक़ी अक़्दार अपनाने का दर्स देता है। उन अक़्दार में "**अमानतदारी**" को बुन्यादी ह़ैसिय्यत ह़ासिल है। इस के बरअ़क्स, "**ख़ियानत**" एक ऐसा घिनौना अ़मल और अख़्लाक़ी बुराई है जिस से मुआ़शरे का सुकून बर्बाद हो जाता है। क़ुरआने मजीद में ख़ियानत की सख़्त तरीन अल्फ़ाज़ में मज़म्मत की गई है और उसे अल्लाह की ना पन्सदीदगी का सबब क़रार दिय गया है। अल्लाह पाक ने क़ुरआने करीम की मुतअ़द्दद आयात में अहले ईमान को ख़ियानत से बाज़ रहने का हुक्म दिया है। येह बुराई ईमान की कमज़ोरी और मुनाफ़िक़त की जड़ है। ख़ियानत की मज़म्मत के मुतअ़ल्लिक़ 4 आयाते क़ुरआनी पढ़िये :

1 अल्लाह व रसूल से दग़ा और अमानतों में ख़ियानत

अल्लाह पाक ने अहले ईमान को मुतनब्बेह फ़रमाया है कि वोह किसी भी सूरत में अमानतों में ख़ियानत का इर्तिकाब न करें। चुनान्चे इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَ الرَّسُوْلَ وَ تَخُوْنُوْۤا اَمٰنٰتِكُمْ وَ اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ(۲۷)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अल्लाह व रसूल से दग़ा न करो और न अपनी अमानतों में दानिस्ता ख़ियानत। (پ9،الانفال:27)

इस आयत से वाज़ेह़ हुवा कि ख़ियानत सिर्फ़ माली नहीं बल्कि अल्लाह के अह़कामात और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत से रूगर्दानी भी बहुत बड़ी ख़ियानत है, चुनान्चे तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान में है : फ़राइज़ का छोड़ देना अल्लाह तआ़ला से ख़ियानत करना है और सुन्नत का तर्क करना रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से (ख़ियानत है)। (ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, स. 323)

2 अल्लाह की ना पसन्दीदगी का सबब

जो शख़्स धोकादही, ख़ियानत और बद दियानती का रास्ता अपनाता है, वोह अल्लाह की मह़ब्बत और नुसरत से मह़रूम हो जाता है। सूरए ह़ज में ऐसे शख़्स की मज़म्मत इस त़रह़ बयान की गई है : ﴿اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ(۳۸)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह दोस्त नहीं रखता हर बड़े दग़ा बाज़ नाशुक्रे को।
(پ17،الحج:38)

येह आयत बताती है कि ख़ियानत और नाशुक्री करने वालों को अल्लाह दोस्त नहीं रखता।

3 ख़ियानत करने वालों का फ़रेब नहीं चलता

ख़ाइन कितना ही फ़रेब क्यूं न दे, अल्लाह तआ़ला के हां उस की कोई चाल कामयाब नहीं हो सकती। अल्लाह तआ़ला ह़क़ का साथ देता है और ख़ियानत करने वालों की मक्कारियों को बे नक़ाब करता

है । सूरए यूसुफ़ में ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام के वाक़िए में एक अहम उसूल बयान हुवा है: ﴿ذٰلِكَ لِیَعْلَمَ اَنِّیْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَیْبِ وَ اَنَّ اللّٰهَ لَا یَهْدِیْ كَیْدَ الْخَآىٕنِیْنَ(۵۲)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : यूसुफ़ ने कहा येह मैं ने इस लिये किया कि अ़ज़ीज़ को मालूम हो जाए कि मैं ने पीठ पीछे उस की ख़ियानत न की और अल्लाह दग़ाबाज़ों का मक्र नहीं चलने देता। (پ12، یوسف:52)

4 अमानत की अदाएगी का हुक्म अल्लाह पाक ने अमानतों को मुतअ़ल्लिक़ा अफ़राद तक पहुंचाने का हुक्म दिया है चुनान्चे इरशाद है : ﴿اِنَّ اللّٰهَ یَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰۤى اَهْلِهَا﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें जिन की हैं उन्हें सिपुर्द करो। (پ5، النسآء:58)

ख़ियानत की मुख़्तलिफ़ सूरतें क़ुरआनी तालीमात की रौशनी में ख़ियानत का मफ़्हूम बहुत वसीअ़ है। इस में माली व माद्दी और रूहानी दोनों सूरतें शामिल हैं, किसी का राज़, या वादा भी अमानत है। इसी त़रह अल्लाह के हुक़ूक़ (जैसे नमाज़ व रोज़ा) और बन्दों के हुक़ूक़ (जैसे मुलाज़मत या ओ़हदे के फ़राइज़) को पूरी ईमानदारी से अदा न करना भी ख़ियानत में शामिल है।

ख़ियानत ईमान की कमज़ोरी की अ़लामत है और मुआ़शरती बेचैनी का सबब है। क़ुरआने मजीद ने सख़्ती से इस की मज़म्मत कर के येह वाज़ेह़ कर दिया है कि ख़ियानत करने वाला शख़्स अल्लाह की नज़र में ना पसन्दीदा है और वोह आख़िरत में सख़्त अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ होगा। ब ह़ैसिय्यते मुसलमान, हमें अमानतदारी को अपने किरदार का लाज़िमी ह़िस्सा बनाना चाहिये ताकि हम दुनिया और आख़िरत की कामयाबी ह़ासिल कर सकें।

अल्लाह पाक हमें क़ुरआनी तालीमात पढ़ कर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

इख़्लास की अहमिय्यत ह़दीस की रौशनी में

ह़ाजी रय्यान अ़त़्तारी
(दर्जए राबिआ़ जामिअ़तुल मदीना)

इन्सानी आमाल की अस्ल रूह़ इख़्लास है। इख़्लास के बग़ैर न इ़बादत में जान बाक़ी रहती है और न ही अ़मल में क़बूलिय्यत की ज़मानत। इख़्लास का मत़लब येह है कि इन्सान का हर क़ौल व फ़ेल सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रिज़ा के लिये हो, न कि दिखावे, शोहरत या दुनियावी फ़ायदे के लिये। येही वोह सिफ़त है जो मामूली अ़मल को अ़ज़ीम बना देती है और बड़े से बड़ा अ़मल भी अगर इख़्लास से ख़ाली हो तो बे वज़्न हो जाता है दीने इस्लाम में इख़्लास को बुन्याद क़रार दिया गया है क्यूंकि अल्लाह तआ़ला दिलों को देखता है ज़ाहिरी शक्लो सूरत को नहीं, इसी लिये एक मोमिन की कामयाबी का राज़ उस के इख़्लास में पोशीदा है और येही इख़्लास इन्सान को अल्लाह के क़रीब और उस के आमाल को बारगाहे इलाही में मक़्बूल बनाता है, इख़्लास की अहमिय्यत व फ़वाइद के मुतअ़ल्लिक़ 5 अह़ादीस पढ़िये :

1 दीन में मुख़्लिस हो जाओ ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने यमन की त़रफ़ जाते वक़्त अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे कुछ नसीह़त फ़रमाइये तो नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि अपने दीन में मुख़्लिस हो जाओ थोड़ा अ़मल भी तुम्हें किफ़ायत करेगा।
(دیکھیے: مستدرک، 5/435، حدیث:7914)

2 इख़्लास के सबब उम्मत की मदद ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन सअ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि जब मैं ने येह गुमान किया कि मुझे दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان पर कुछ फ़ज़ीलत ह़ासिल है तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इस उम्मत के कमज़ोर लोगों की दुआ़ओं, नमाज़ों और इख़्लास के सबब इस उम्मत की मदद की जाती है। (نسائی، ص518، حدیث:3175)

3 मुख़्लिसीन की वज्ह से आज़माइश दूर होती है ह़ज़रते सौबान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि मुख़्लिसीन के लिये ख़ुशख़बरी है कि वोही हिदायत के चराग़ हैं उन्ही की वज्ह से आज़माइश की हर तारीकी छट जाती है। (जन्नत में ले जाने वाले आमाल, स. 708)

4 इख़्लास के साथ किये जाने वाले आमाल मक़्बूल नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अल्लाह पाक फ़रमाता है कि मैं शरीक से पाक हूं लिहाज़ा जिस ने मेरे साथ किसी को शरीक ठहराया तो वोह मेरे शरीक के लिये है। ऐ लोगो ! अपने आमाल में इख़्लास पैदा करो क्यूंकि अल्लाह तआ़ला सिर्फ़ इख़्लास के साथ किये जाने वाले आमाल ही को क़बूल फ़रमाता है।
(مجمع الزوائد، 10/379، حدیث:17653)

5 दुनिया मल्ऊन है ह़ज़रते अबू दर्दा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि दुनिया और जो कुछ इस में है सब मल्ऊन है सिवाए उस चीज़ के जिस के ज़रीए

अल्लाह पाक की रिज़ा चाही जाए।

(जन्नत में ले जाने वाले आमाल, स. 708)

पस हर मुसलमान पर लाज़िम है कि वोह अपने हर क़ौलो फ़ेल में अल्लाह तआ़ला की रिज़ा को पेशे नज़र रखे। दिखावे, रिया और शोहरत की ख़्वाहिश से अपने दिल को पाक करे क्यूंकि इख़्लास ही वोह कसौटी है जिस पर आमाल की क़द्रो क़ीमत मुतअ़य्यन होती है।

अल्लाह तआ़ला हमें सच्ची निय्यत, ख़ालिस अ़मल और दाइमी इख़्लास नसीब फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मुतालअ़ए ह़दीस की ज़रूरत व अहमिय्यत

मुह़म्मद इस्माईल
(दर्जए ख़ामिसा मॉडल जामिअ़तुल मदीना)

कलामुल्लाह के बाद कलामे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मरतबा है और क्यूं न हो कि अल्लाह पाक के बाद रसूलुल्लाह का मरतबा है।

बाद अज़ ख़ुदा बुज़ुर्ग तूई क़िस्सा मुख़्तसर

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं: जहां क़ुरआन का नूर है वहां ह़दीस का रंग है, क़ुरआन समुन्दर है ह़दीस उस का जहाज़, क़ुरआन मोती है और मज़ामीने ह़दीस उन के ग़व्वास, क़ुरआन इज्माल है ह़दीस उस की तफ़्सील, क़ुरआन इबहाम है ह़दीस उस की शर्ह़। हुज़ूर की हर अदा क़ुरआनी आयात की तफ़्सील है।

तेरे किरदार को क़ुरआन की तफ़्सीर कहते हैं

ग़रज़े कि क़ुरआनो ह़दीस इस्लाम की गाड़ी के दो पहिये हैं या मोमिन के दो पर जिन में से एक के बग़ैर न येह गाड़ी चल सकती है न मोमिन परवाज़ कर सकता है। (देखिये: मिरआतुल मनाजीह़, 1/2)

ह़दीस क़ुरआन की तफ़्सीर है: अल्लाह पाक ने फ़रमाया:

﴿وَ مَاۤ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۗ وَ مَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: और जो कुछ तुम्हें रसूल अ़ता फ़रमाएं वोह लो और जिस से मना फ़रमाएं बाज़ रहो। (پ28، الحشر:7)

ह़दीस क़ुरआन की तफ़्सीर कैसे है? मुलाह़ज़ा फ़रमाएं: अल्लाह पाक ने क़ुरआने करीम में बार बार हुक्म दिया, नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो, अब सुवाल येह बनता है कि नमाज़ कैसे क़ाइम करनी है और कब करनी है और ज़कात कितने माल पर अदा करनी है। तो इन सब बातों का जवाब हमें ह़दीस से ही मिलता है। इसी त़रह़ क़ुरआने पाक ने ख़िन्ज़ीर का गोश्त ह़राम किया है मगर जो दीगर जानवर ह़राम हैं वोह कैसे ह़राम हुए और कौन कौन से ह़राम हैं तो इस का जवाब भी ह़दीस से मिलता है। गोया कि किताबुल्लाह ख़ामोश क़ुरआन है और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़िन्दगी शरीफ़ बोलता हुवा क़ुरआन।

फ़ितनों से बचने के लिये ह़दीस की ज़रूरत: जिस त़रह़ दौरे ह़ाज़िर में जिद्दत तेज़ी के साथ आ रही है इसी के साथ साथ फ़ित्नों में भी इज़ाफ़ा हो रहा है। इन फ़ित्नों की शुरूआत लिब्रलिज़्म से होती है और इल्ह़ाद पर जा कर रुकती है। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: فَاِنِّیْ لَاَرَی الْفِتَنَ تَقَعُ خِلَالَ بُیُوْتِکُمْ کَوَقْعِ الْقَطْرِ तर्जमा: मैं देख रहा हूं कि (अनक़रीब) तुम्हारे घरों में फ़ित्ने इस त़रह़ बरस रहे होंगे, जैसे बारिश बरसती है। (بخاری، 4/431، حدیث:7060)

सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़दीस से हमें रहनुमाई मिलती है कि फ़ित्नों से कैसे बचा जाए और ईमान को कैसे बचाया जाए। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: مَنْ تَمَسَّکَ بِسُنَّتِیْ عِنْدَ فَسَادِ اُمَّتِیْ فَلَہٗ اَجْرُ مِائَۃِ شَہِیْدٍ तर्जमा: जो शख़्स मेरी उम्मत में (अ़मली या एतिक़ादी) ख़राबी पैदा होने के वक़्त मेरी सुन्नत पर अ़मल करेगा उस को सौ शहीदों का सवाब मिलेगा। (مشکاۃ المصابیح، 1/55، حدیث:176)

अख़्लाक़ व किरदार की तक्मील में ह़दीस की ज़रूरत: हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अख़्लाक़े अ़ज़ीमा के मालिक हैं और आप की सुन्नत व अह़ादीस के बग़ैर इन्सान अख़्लाक़ और किरदार की तक्मील तक नहीं पहुंच सकता। सरकारे दो जहां صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: اِنَّمَا بُعِثْتُ لِاُتَمِّمَ صَالِحَ الْاَخْلَاقِ तर्जमा: मुझे अच्छे अख़्लाक़ की तक्मील के लिये ही मबऊ़स किया गया। (مسند احمد، 14/512، حدیث:8952)

अह़ादीस हमें सिखाती हैं कि तकब्बुर से कैसे बचा जाए और कैसे आजिज़ी इख़्तियार की जाए, रियाकारी से कैसे बचा जाए और इख़्लास कैसे पैदा किया जाए, दिल को नर्म कैसे किया जाए, ग़ुस्से पर क़ाबू कैसे किया जाए? अह़ादीस में गोया हर मरज़ का इलाज है।

अल्लाह पाक हमें अपने महबूब के कलाम का मुतालआ़ करने की और इस से सीखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बच्चों के लिये प्यारी ह़दीस

ईदें, अल्लाह का तोह़फ़ा

हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो लोगों को देखा कि उन्हों ने खेल कूद के लिये दो दिन ख़ास किये हैं। पूछने पर बताया कि हम ज़मानए जाहिलिय्यत में उन दिनों में खेला करते थे तो जनाब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِنَّ اللّٰہَ قَدْ اَبْدَلَكُمْ بِهِمَا خَيْرًا مِّنْهُمَا يَوْمَ الْاَضْحٰى وَيَوْمَ الْفِطْرِ यानी अल्लाह पाक ने तुम्हें उन दो दिनों के बदले दो बेहतर दिन अ़त़ा फ़रमाए हैं : एक ईदुल अज़ह़ा का दिन और दूसरा ईदुल फ़ित्र का दिन।[(1)]

प्यारे बच्चो ! "**ज़मानए जाहिलिय्यत**" वोह दौर था जब लोगों को इस्लाम की तालीम नहीं मिली थी। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बताया कि अल्लाह पाक ने हमें दो बेहतरीन और पाकीज़ा दिन दिये हैं जिन में हम अल्लाह की रिज़ा के मुताबिक़ ख़ुशियां मनाते हैं।

ईदुल अज़ह़ा (बड़ी ईद) माहे ज़ुल ह़िज्जा) की 10 तारीख़ को मनाई जाती है। येह ह़ज़रते इब्राहीम और ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِمَا السَّلَام की क़ुरबानी याद दिलाती है। और रमज़ान के रोज़ों के बाद ईदुल फ़ित्र (छोटी ईद या मीठी ईद) पहली शव्वाल को मनाई जाती है।

ईद का दिन बरकत, रह़मत और बख़्शिश वाला दिन है। अल्लाह का शुक्र अदा करने, अच्छे खाने पकाने, ग़रीबों की मदद करने, रिश्तेदारों से मुलाक़ात करने और ख़ुशियां मनाने का दिन है। लफ़्ज़े ईद का मत़लब ही "**ख़ुशी**" है तो उस दिन ख़ुश होना और ख़ुशी का इज़हार करना चाहिये।

बच्चो ! ईद के दिन येह अच्छे काम करें : सुब्ह़ जल्दी उठें, नहा धो कर अच्छे कपड़े पहनें, हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ईदुल फ़ित्र के दिन कुछ खा कर नमाज़ के लिये तशरीफ़ ले जाते।[(2)] हो सके तो आप भी कुछ खा कर नमाज़े ईद के लिये जाएं, अपने बड़ों के साथ नमाज़े ईद पढ़ें। ईदगाह जाते हुए येह कलिमात पढ़ें :

اَللّٰہُ اَكْبَرُ، اَللّٰہُ اَكْبَرُ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَكْبَرُ، اَللّٰہُ اَكْبَرُ، وَلِلّٰہِ الْحَمْدُ

तर्जमा : अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं और अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है और अल्लाह ही के लिये तमाम ख़ूबियां हैं।[(3)] रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़े ईद के लिये एक रास्ते से तशरीफ़ ले जाते और दूसरे रास्ते से वापस तशरीफ़ लाते।[(4)]

अपने वालिदैन, दादा दादी, नाना नानी, चचा, मामूं सब से मिलें। ख़ानदान के बुज़ुर्गों की दस्तबोसी करें और दुआ़एं लें। अपने छोटे भाई बहनों और रिश्तेदारों के बच्चों के साथ ईद का दिन ख़ुशी ख़ुशी गुज़ारें।

ईद ख़ुशी का दिन है, किसी से लड़ाई न करें, किसी को तक्लीफ़ न दें, सब के साथ अच्छा सुलूक करें। ईदी मिले तो ख़ुश हों, चाहे कम मिले या ज़ियादा। दूसरों से मुवाज़ना न करें बल्कि शुक्र अदा करें सारे पैसे खिलौनों और टॉफ़ियों वग़ैरा में ख़र्च न करें कुछ पैसे बचाएं और अपनी ज़रूरत की चीज़ों पर ख़र्च करें।

अल्लाह पाक हमें अह़ादीस पढ़ कर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) دیکھیے: ابوداؤد، 1/418، حدیث: 1134 (2) ترمذی، 2/70، حدیث: 542

(3) دیکھیے: نماز عید کا طریقہ، ص 7 (4) ترمذی، 2/69، حدیث: 541۔

आग का शोला

अल्लाह पाक के फ़ज़्ल से हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नज़रे इनायत से जिस्मो जान की ही नहीं बल्कि दिल की कैफ़िय्यत व हालत भी बदल जाया करती है जैसा कि हज़रते शैबा बिन उ़स्मान का बड़ा ही ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ है, दर अस्ल उन के चचा और वालिद जंगे उहुद में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़िलाफ़ लड़ाई में शामिल हुए और हज़रते अ़ली और हम्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने उन को क़त्ल किया। जब ग़ज़्वए हुनैन पेश आया तो उस वक़्त तक शैबा बिन उ़स्मान मुसलमान नहीं हुए थे, कहते हैं कि ग़ज़्वए हुनैन के दिन मुझे अपने चचा और बाप की याद आ गई। मैं ने दिल में कहा कि आज मैं मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से बदला लूंगा। मैं नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब आया तो दाएं तरफ़ हज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه थे मैं ने सोचा कि येह हज़रत मुहम्मद को बे आसरा नहीं छोड़ेंगे, बाएं तरफ़ से क़रीब हुवा तो हज़रते अबू सुफ़्यान बिन हारिस رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه को देखा, सोचा कि येह भी उन्हें अकेला नहीं छोड़ेंगे। फिर मैं पीछे से क़रीब हुवा यहां तक कि तल्वार चलाने ही वाला था कि अचानक आग का शोला बिजली की मानिन्द मेरे सामने बुलन्द हुवा, मैं इस ख़ौफ़ से अपने हाथ आंखों पर रख कर उलटे क़दमों पीछे हटा कि कहीं येह शोला मुझे जला कर राख न कर दे। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे पुकारा : ऐ शैबा ! फिर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना हाथ मेरे सीने पर रखा और दुआ की : ऐ अल्लाह ! इस के दिल से शैतान को दूर फ़रमा दे, फिर जो मैं ने नज़र उठा कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तरफ़ देखा तो आप मुझे मेरे कान आंखों बल्कि हर चीज़ से ज़ियादा महबूब लगने लगे (एक क़ौल येह है कि अल्लाह पाक ने उन के दिल में इस्लाम की महब्बत व हक़्क़ानिय्यत दाख़िल फ़रमा दी तो आप उसी रोज़ इस्लाम ले आए), हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया कि ऐ शैबा ! कुफ़्फ़ार से लड़ो तो मैं हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आगे खड़ा हो गया, बख़ुदा उस वक़्त मुझे अपनी जान दाव पर लगा कर हर ख़तरे से हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हिफ़ाज़त करना महबूब व पसन्दीदा हो गया। (دیکھئے: الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، 2/269، تاریخ ابن عساکر، 23/256 تا 258)

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर जानी हम्ले के ऐन वक़्त पर नागहां आग के शोले का ज़ाहिर होना और फिर दस्ते मुबारक और दुआए नबवी से जानी दुश्मन के दिल की कैफ़िय्यत बदल जाना

यक़ीनन हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मोजिज़ाना शान है। इस वाक़िए से कुछ बातें सीखने को मिलती हैं:

सहाबए किराम हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सच्चे अहले महब्बत, जां निसार और मुहाफ़िज़ थे येह बात कुफ़्फ़ार को भी तस्लीम थी।

दुआए नबवी से ज़ाहिर होता है कि रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अल्लाह पाक की अ़ता से इ़ल्मे ग़ैब ह़ासिल था।

आप के दस्ते मुबारक और ज़बाने अक़्दस में ऐसी बरकत थी कि फ़ज़्ले ख़ुदा से दिल की कैफ़िय्यत बदल जाया करती, ईमान नसीब हो जाता गोया आप बीमार दिलों के मुआलिज थे।

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात सरापा रह़मत है, जो दुश्मन को भी ख़ैर और हिदायत अ़ता फ़रमाती है।

दुश्मन के साथ भी नर्मी और भलाई का सुलूक करना चाहिये कि येह हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ में से है।

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैदाने जंग में भी अल्लाह पाक पर कामिल एतिमाद और सुकून के साथ रहते थे।

किसी ज़ाहिरी सबब के बग़ैर आग का शोला ज़ाहिर होना अल्लाह वालों को अल्लाह की ग़ैबी मदद ह़ासिल होने का सुबूत है।

किसी का मौजूदा ह़ाल देख कर उस के मुस्तक़्बिल का फ़ैसला या मुस्तक़्बिल के बारे में यक़ीनी राय क़ाइम नहीं की जा सकती।

दुश्मन जब दोस्त बन जाए तो उस पर भरोसा और एतिमाद कर लेना चाहिये।

हुरूफ़ मिलाइये !

ن	و	خ	س	ل	ا	ی	خ	ک
ط	ش	و	ز	ط	م	ر	س	و
ہ	ت	م	و	س	ب	ج	س	م
ا	ر	ش	ش	ک	ت	ق	و	ش
ی	ا	ت	ا	ع	د	ہ	ا	ت
ن	ج	م	ل	و	س	ز	ر	م
س	ا	ح	ا	ن	ر	ھ	گ	ح
ا	ز	ر	س	ع	ت	ی	ن	ر
ک	ت	ش	ق	ک	ڑ	س	ی	ش

प्यारे बच्चो ! दीने इस्लाम की तालीमात में से येह भी है कि हमें घर से निकलते वक़्त दुआ पढ़नी चाहिये ताकि हम महफ़ूज़ रह सकें। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने घर से निकलते वक़्त येह दुआ पढ़ने की तरग़ीब दिलाई है: بِسْمِ اللّٰهِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ۔ (ابوداؤد، 4/420، حدیث:5095)

इस के इ़लावा हमें येह भी ख़याल रखना चाहिये कि रास्ते में चलते हुए एह़तियात करें, कोई गढ़ा या गटर खुला हो तो उस से दूर रहें, सड़क पार करते वक़्त दाएं बाएं देखें, बड़ों की इजाज़त से बाहर जाएं, रास्ते में किसी अजनबी से बात करने और कोई चीज़ लेने से परहेज़ करें इस त़रह़ हम बहुत सारी परेशानियों से बच सकते हैं।

आप ने ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं हुरूफ़ मिला कर पांच अल्फ़ाज़ तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़ "**दुआ**" तलाश कर के बताया गया है। तलाश किये जाने वाले 5 अल्फ़ाज़ येह हैं :

1 घर 2 इजाज़त 3 वक़्त 4 सड़क 5 ख़याल।

क्लास रूम

उहुद पहाड़ के पास

स्टूडन्ट्स ईद की छुट्टियां गुज़ार कर आए तो उन के चेहरों पर अभी तक ईद की ख़ुशियों के रंग बिखरे हुए थे, एक दूसरे को अपने ख़ुशियों भरे लम्हात के बारे में बता रहे थे, किसी ने ईद अपने गांव में दादा दादी या नाना नानी के साथ गुज़ारी थी जब कि कुछ वोह थे जिन के वालिद या बड़े भाई दूसरे शहरों में होते हैं और ईद पर उन के पास आए थे तो वोह अपनी ईद की ख़ुशियों का मज़ा दोबाला हो जाने के बाइस ज़ियादा जोशो ख़रोश से अपनी ईद के बारे में बता रहे थे। बच्चे इन्ही ख़ुश गप्पियों में मगन थे कि सर बिलाल क्लास में दाख़िल हुए।

सर बिलाल ने हस्बे आदत सलाम व दुआ के बाद सब से पहले व्हाइट बोर्ड पर आज के सबक़ का उन्वान लिखा : तारीख़े इस्लाम।

तो बच्चो ! उम्मीद है कि आप सब की ईद ख़ैरियत से गुज़री होगी।

जी सर, सभी बच्चों ने बा आवाज़ बुलन्द जवाब दिया।

सर आप की ईद कैसी गुज़री ? उसैद रज़ा ने पूछा।

सर बिलाल : हमेशा की तरह बहुत अच्छी, तो बच्चो, आज हम तारीख़े इस्लाम के ऐसे वाक़िए के बारे में सीखेंगे जो छोटी ईद के बाद 15 शव्वाल के दिन पेश आया था, येह कहते हुए सर बिलाल ने व्हाइट बोर्ड पर तारीख़े इस्लाम के नीचे नीले मारकर से लिख दिया : "**ग़ज़वए उहुद**"।

हिजरत के तीसरे साल मुश्रिकीने मक्का इन्तिक़ाम से भरे हुए तीन हज़ार का लश्कर ले कर मुसलमानों को ख़त्म करने के इरादे से हमला करने आए तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सिपह सालारी में महज़ सात सौ अफ़राद पर मुश्तमिल इस्लामी लश्कर उन का मुक़ाबला करने के लिये मदीने से बाहर निकला। आख़िरेकार मदीना शरीफ़ से कुछ किलो मीटर के फ़ासिले पर वाक़ेअ उहुद नामी पहाड़ के क़रीब दोनों लश्करों का आमना सामना हुवा।

बच्चो ! जंग की इब्तिदा में मुसलमानों का पल्ला भारी रहा, वोह काफ़िर जो बड़े बहादुर बने नारे लगाते मुसलमानों को ख़त्म करने आए थे जंग शुरूअ होते ही मैदाने जंग से भाग निकले लेकिन फिर एक ग़लत फ़हमी की बिना पर सारे हालात बदल गए जिस की वज्ह से मुसलमानों को काफ़ी नुक़्सान उठाना पड़ा यहां तक कि सत्तर सहाबए किराम भी शहीद हो गए।

मुआविया : सर वोह ग़लत फ़हमी क्या थी ?

सर बिलाल : दर अस्ल बच्चो ! ग़ज़वए उहुद पहाड़ी जंग थी, हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जहां अल्लाह पाक ने दीन व दुनिया की हर चीज़ सिखाई थी वहीं जंगी प्लानिंग का भी इल्म दिया था तो आप मैदाने जंग देखते ही समझ गए कि कौन सी जगह से

ख़तरा हो सकता है लिहाज़ा आप ने लश्करे इस्लाम की पुश्त यानी बैक साइड पर पचास तीर अन्दाज़ मुक़र्रर किये और उन्हें ताकीद भी फ़रमा दी कि "**जब तक मेरा हुक्म न आ जाए तुम ने यहां से नहीं हटना**" तो जब काफ़िर मैदाने जंग से भाग निकले तो दीगर सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की तरह तीर अन्दाज़ों में से भी अक्सर ने सोचा कि हम जंग जीत चुके हैं लिहाज़ा अपनी जगह छोड़ दी लेकिन हुवा येह कि भागते हुए काफ़िरों की नज़र भी इस अहम मोर्चे की तरफ़ पड़ गई तो उन्हों ने उसी तरफ़ से हम्ला कर दिया यूं अचानक हम्ले की वज्ह से अफ़रा तफ़री फैल गई और जीती हुई जंग मुसलमानों के हाथ से निकलने लगी।

सौबान : सर इसी ग़ज़्वे में हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के एक चचा भी शहीद हुए थे नां..!

सर बिलाल : जी बेटा ! इस अफ़रा तफ़री में मुसलमानों को बहुत नुक़्सान उठाना पड़ा, हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के प्यारे चचा हज़रते हम्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ शहीद हुए, हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरए मुबारक ज़ख़्मी हुवा और दांत मुबारक का थोड़ा सा किनारा भी अलग हो गया।

लेकिन बच्चो ! ऐसी अफ़रा तफ़री में भी सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को अपनी जानों से ज़ियादा नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़याल था, अपनी पुश्त को आप के लिये ढाल बना लिया। ख़ुद अपनी पीठ पर तीर बरदाश्त किये लेकिन प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दिफ़ाअ़ नहीं छोड़ा। सात अन्सारी सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से एक के बाद एक ने हुज़ूर की हिफ़ाज़त में अपनी जानें क़ुरबान कर दी थीं। बेशक इस ग़ज़्वे में सहाबए किराम ने बड़ी अ़ज़ीम और बे मिसाल क़ुरबानियां दीं और हमें इस से सीखने को भी बहुत कुछ मिलता है कि अल्लाह पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जैसा फ़रमाएं इस पर अ़मल किया जाए वरना आख़िरत के साथ साथ दुनिया में भी इस का नुक़्सान उठाना पड़ सकता है।

बच्चों और बच्चियों के 6 नाम

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आदमी सब से पहला तोहफ़ा अपने बच्चे को नाम का देता है लिहाज़ा उसे चाहिये कि उस का नाम अच्छा रखे। (جمع الجوامع، 3/285، حدیث:8875) यहां बच्चों और बच्चियों के लिये 6 नाम, उन के माना और निस्बतें पेश की जा रही हैं।

बच्चों के 3 नाम

नाम	पुकारने के लिये	माना	निस्बत
मुहम्मद	शफ़ीक़	मेहरबान	रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सिफ़ाती नाम
मुहम्मद	अशरफ़	ज़ियादा शराफ़त वाला	सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का मुबारक नाम
मुहम्मद	अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़	रिज़्क़ देने वाले का बन्दा	शहज़ादए ग़ौसे आज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का बा बरकत नाम

बच्चियों के 3 नाम

सौदा	सियाह रंगत वाली	उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا का बा बरकत नाम
रमला	ज़मीन का बुलन्द हिस्सा	सहाबिय्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا का बा बरकत नाम
अनीक़ा	ख़ुश आइन्द	एक बुज़ुर्ग ख़ातून رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہَا का बा बरकत नाम

(जिन के हां बेटे या बेटी की विलादत हो वोह चाहें तो इन निस्बत वाले 6 नामों में से कोई एक नाम रख लें।)

बच्चों को दूसरों का एहसास करना सिखाइये

मुआशरा अफ़राद से बनता है और अफ़राद की तरबियत का सब से पहला और मज़बूत मर्कज़ घर होता है। मां बाप ही वोह अ़ज़ीम हस्तियां हैं जो अपनी औलाद के दिलों में मह़ब्बत, हमदर्दी और दूसरों का ख़याल रखने का जज़्बा पैदा करती हैं। अगर बच्चों को बचपन ही से दूसरों के एहसासात और ज़रूरिय्यात का ख़याल रखना सिखाया जाए तो वोह बड़े हो कर मुआशरे के बेहतरीन अफ़राद में शुमार हो सकते हैं। इसी अहम पहलू के त़रफ़ तवज्जोह दिलाने के लिये चन्द बातों की निशान दही की जा रही है।

जो अपने लिये पसन्द करो वोही दूसरों के लिये करो मां बाप की येह ज़िम्मेदारी है कि वोह बच्चों के दिल में येह बात बिठाएं कि जो चीज़ वोह अपने लिये पसन्द करते हैं, वोही दूसरों के लिये भी पसन्द करें। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम में से कोई उस वक़्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक वोह अपने भाई के लिये वोही पसन्द न करे जो अपने लिये पसन्द करता है।[1] इस ह़दीसे मुबारका की रौशनी में अगर बच्चों को सिखाया जाए कि वोह दूसरों के साथ वोही सुलूक करें जो अपने लिये चाहते हैं तो उन के अख़्लाक़ संवर जाएगें। अगर बच्चा चाहतां है कि उस के साथ नर्मी से बात की जाए तो उसे भी दूसरों के साथ नर्मी इख़्तियार करनी चाहिये, और अगर वोह येह चाहता है कि उस की बात सुनी जाए तो उसे भी दूसरों की बात ग़ौर से सुननी और उन का एहतिराम करना चाहिये।

दूसरों को तक्लीफ़ से बचाना मां बाप को चाहिये कि वोह बच्चों के दिल में येह एहसास पैदा करें कि किसी को तक्लीफ़ देना अल्लाह तआ़ला को ना पसन्द है। बच्चों को समझाएं कि जैसे उन्हें दर्द, डांट या बे इ़ज़्ज़ती अच्छी नहीं लगती, इसी त़रह़ दूसरों को भी येह बातें तक्लीफ़ देती हैं। रोज़ मर्रा मिसालों के ज़रीए येह बात ज़ेहन नशीन करवाई जाए कि धक्का देना, चिड़ाना, मज़ाक़ उड़ाना या सख़्त अल्फ़ाज़ कहना भी तक्लीफ़ देने वाले काम हैं। किसी मुसलमान को तक्लीफ़ देने वाले को अल्लाह पाक सख़्त सज़ा देता है। मश्हूर ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते मुजाहिद رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जहन्नमियों पर ख़ारिश मुसल्लत़ कर दी जाएगी। तो वोह अपने जिस्म को खुजलाएंगे ह़त्ता कि उन में से एक की (खाल और गोश्त उतरने से) हड्डी ज़ाहिर हो जाएगी। उसे पुकार कर कहा जाएगा : ऐ फ़ुलां ! क्या तुम्हें इस से तक्लीफ़ होती है ? वोह कहेगा : हां। पुकारने वाला कहेगा : तू मुसलमानों को तक्लीफ़ पहुंचाया करता था येह उस की सज़ा है।[2]

शोर शराबे से रोकना वालिदैन को चाहिये कि वोह बच्चों को समझाएं कि घर में शोर मचाना घर वालों और पड़ोसियों की तक्लीफ़ का बाइ़स है बच्चों को नर्मी से बताया जाए कि चींख़ना चिल्लाना, चीज़ें पटकना या शोर मचा कर खेलना बीमारों, बुज़ुर्गों और आराम करने वालों के सुकून में ख़लल डालता है। जब बच्चे येह समझ लेंगे कि उन के शोर से दूसरों को पेरशानी होती है तो उन के अन्दर एहसास पैदा होगा और वोह शोर वग़ैरा करने से बचेंगे।

बच्चों को बताएं कि पड़ोसियों के ह़ुक़ूक़ की अदाएगी इस

क़दर अहम है कि एक मरतबा नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम से इरशाद फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! वोह शख़्स मोमिन नहीं, ख़ुदा की क़सम ! वोह शख़्स मोमिन नहीं, ख़ुदा की क़सम ! वोह शख़्स मोमिन नहीं । सहाबए किराम ने पूछा : या रसूलल्लाह कौन ? फ़रमाया : जिस की आफ़तों से उस के पड़ोसी महफ़ूज़ न हों । (यानी जो शख़्स अपने पड़ोसियों को तक्लीफ़ देता हो)[3]

रोल मॉडल बनें बच्चे वालिदैन की नक़्ल करते हैं, इस लिये सब से पहले ख़ुद अच्छी मिसाल क़ाइम करें । घर में अपने वालिदैन का एहतिराम करें, आपस में महब्बत से बात करें, पड़ोसियों की मदद करें, ग़रीबों पर तरस खाएं और ख़ादिमों से अच्छा सुलूक करें । बच्चे येह सब देख रहे होते हैं और ख़ुद बख़ुद सीखते हैं ।

दूसरों के नुक़्सान पर हमदर्दी करना सिखाएं बाज़ बच्चे दूसरों की मुसीबत पर ख़ुश होते हैं येह इन्तिहाई बुरी आ़दत है । वालिदैन को चाहिये कि बच्चों को दूसरों के नुक़्सान या मुसीबत पर हमदर्दी करना और मुम्किना सूरत में परेशानी दूर करना सिखाएं । बच्चों को बताएं कि किसी की मुसीबत पर ख़ुश होना ख़ुद उस मुसीबत में मुब्तला होने का बाइ़स बन सकता है । नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अपने भाई की शमातत न कर (यानी उस की मुसीबत पर ख़ुश न हो) कि अल्लाह पाक उस पर रह़म करेगा और तुझे उस में मुब्तला कर देगा ।"[4]

दूसरों की मुसीबत पर ख़ुश होने वाली बुरी आ़दत से बच्चों को यूं भी बचाया जा सकता है कि उन को नेक लोगों के वाक़िआ़त सुनाए जाएं । जैसा कि ह़ज़रते सरी सक़ती का वाक़िआ़ है कि बाज़ार में आप की एक दुकान थी, एक दफ़ा उस बाज़ार में आग लग गई, पूरा बाज़ार जल गया, लेकिन आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की दुकान बच गई । जब आप को इस बात की ख़बर दी गई तो बे साख़्ता आप के मुंह से निकला : " اَلْحَمْدُ لِلّٰه " मगर फ़ौरन ही अपने नफ़्स को मलामत करते हुए इरशाद फ़रमाया : "फ़क़त अपना माल बच जाने पर मैं ने कैसे اَلْحَمْدُ لِلّٰه कह दिया !" चुनान्चे आप ने तिजारत को ख़ैरबाद कह दिया और اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहने पर तौबा व मुआ़फ़ी की ख़ातिर उ़म्र भर के लिये दुकान छोड़ दी ।[5]

नेक कामों में शामिल करें बच्चों को दूसरों का एहसास सिखाने के लिये मां बाप को चाहिये कि बच्चों को अ़मली तौर पर नेक कामों में शामिल करें । उन्हें अपने हाथ से सदक़ा दिलवाएं, बच्चों के सामने यतीमों और मुस्तह़िक़ लोगों की ख़िदमत करें । ईद, मीलादुन्नबी और दीगर ख़ुशी के मवाक़े़अ़ पर ग़रीबों में कपड़े या खाना तक़्सीम करने में शामिल करें कि येह काम भी बच्चों के दिल में एहसास पैदा करेंगे ।

दुआ़ और शुक्र की आ़दत दूसरों का ख़याल रखने का एक त़रीक़ा दुआ़ भी है, वालिदैन को चाहिये कि बच्चों को दूसरों के लिये दुआ़ करना सिखाएं । जब कोई बीमार हो, मुश्किल में हो, या कामयाब हो तो उन के लिये बच्चे दुआ़ करें ।

जानवरों और दीगर मख़्लूक़ का ख़याल बाज़ बच्चे जानवरों, कीड़े मकोड़ों और चरिन्द परिन्द को तक्लीफ़ पहुंचाते हैं । वालिदैन को चाहिये कि बच्चों को इन्सानों के साथ साथ जानवरों और दीगर अल्लाह की मख़्लूक़ का ख़याल रखना भी सिखाएं ।

अगर मां बाप बचपन ही से औलाद के दिल में दूसरों का ख़याल, हमदर्दी और हुस्ने सुलूक की तरबियत रासिख़ कर दें तो येही बच्चे मुस्तक़्बिल में एक सालेह़ और पुरअम्न मुआ़शरे की बुन्याद बनते हैं । घरेलू तरबियत के येह छोटे छोटे उसूल दरअस्ल बड़े अख़्लाक़ी इन्क़िलाब का पेश ख़ैमा होते हैं । लिहाज़ा वालिदैन की ज़िम्मेदारी है कि वोह रोल मॉडल बन कर अपनी औलाद को इन्सानिय्यत और ख़ैरख़्वाही का रास्ता दिखाएं ।

---

(1) مسلم، ص47، حدیث:170 (2) احیاء العلوم، 2/242 (3) بخاری، 4/104، حدیث:6016 (4) ترمذی، 4/227، حدیث:2514 (5) احیاء العلوم، 5/71۔

बच्चे की पैदाइश से ले कर शादी तक के तमाम मराह़िल के मालूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की किताब "तरबिय्यते औलाद" का मुत़ालआ़ मुफ़ीद है ।

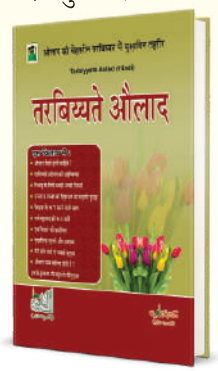

बेटियों की तरबियत

बेटियों को मसाइल का हल तलाश करना सिखाएं

"**बेटी**" येह लफ़्ज़ सुनते ही दिल में महब्बत, नर्मी और सुकून की एक लहर दौड़ जाती है। बेटी वोह नाज़ुक फूल है जो अपने वुजूद से घर को जन्नत का रंग देती है। मगर याद रखिये ! येह नाज़ुक फूल सिर्फ़ हिफ़ाज़त का मोहताज नहीं होता, बल्कि उसे ज़िन्दगी की तेज़ व तुन्द आंधी व तूफ़ान का मुक़ाबला करने के लिये हौसले और दानाई की ज़रूरत भी होती है। आज के दौर में जहां ज़िन्दगी नित नए इम्तिहानात से भरी हुई है, हम अपनी बेटियों को सिर्फ़ रिवायती तालीम तक महदूद न रखें बल्कि उन्हें मसाइल का हल तलाश करने का हौसला और शऊर भी दें। हमारी बेटियों को सिखाने की अहम चीज़ सोचना, समझना और अपने मसाइल का हल तलाश करना भी है क्यूंकि वोह बेटी जो मुश्किल वक़्त में हिम्मत न हारे, जो हालात के तूफ़ान में भी अपनी राह ख़ुद तलाश कर ले, दरअस्ल वोही बेटी हक़ीक़ी मानों में कामयाब और बा वक़ार बनती है। वालिदैन को चाहिये कि वोह अपनी बेटियों को फ़ैसला करने का हौसला दें। जब कोई छोटा मस्अला दरपेश हो, चाहे वोह घर की कोई ज़िम्मेदारी हो या तालीम का मुआमला, उन से राय लें, उन्हें ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ दें। उन्हें येह एहसास दिलाएं कि उन की सोच की क़द्र है, उन की राय अहम है। येही छोटे छोटे मवाक़ेअ आगे चल कर उन के अन्दर एतिमाद, बसीरत और ख़ुद इन्हिसारी पैदा करते हैं। बेटी को ज़िन्दगी के उतार चढ़ाव का सामना करना सिखाना दरअस्ल उस के अन्दर येह यक़ीन बढ़ाना है कि "मैं कमज़ोर नहीं, मैं अपने मसाइल का हल तलाश कर सकती हूं।" जब हम अपनी बेटियों को सिर्फ़ सहारा नहीं बल्कि हौसला देना सीख जाते हैं, तब वोह ज़िन्दगी के हर मैदान में कामयाबी के चराग़ रौशन करती हैं। वोह मां बन कर औलाद की रहनुमाई करती हैं, उस्ताद बन कर नस्लों को रौशनी देती हैं, सास बन कर ख़ानदान में महब्बत, हिक्मत और फ़हमो फ़िरासत से ख़ुशी, इत्तिहाद और इस्तिहकाम का ज़रीआ बनती हैं, नानी दादी, फूफी ख़ाला बन कर वोह नर्मी, महब्बत और इल्म से बच्चों की शख़्सिय्यत संवारती हैं, बीवी बन कर अपने हमसफ़र के सुख दुख की साथी बनती हैं। आइये, हम अपनी बेटियों को कमज़ोर नहीं, मज़बूत बनाएं। उन्हें शिकायत करना नहीं, सोचना और हल तलाश करना सिखाएं। बेटियों की तरबियत में सब से अहम पहलू येह है कि उन्हें न सिर्फ़ दीनी व दुनियावी तालीम दी जाए बल्कि ज़िन्दगी के मसाइल को पहचानने और उन का हल तलाश करने की सलाहिय्यत भी सिखाई जाए। बेटियों को मसाइल का हल क़ुरआन की रौशनी में सिखाएं। येह उ़न्वान तीन बुन्यादी इस्लामी उसूलों को यक्जा करता है, 1 **सब्र :** मुश्किलात में साबित क़दमी। 2 **शुऊर :** इल्मो फ़हम के ज़रीए मस्अले को पहचानना। 3 **हिम्मत व हौसला :** हल की तरफ़ अमली क़दम उठाना। इस्लामी तालीमात के मुताबिक़ बेटियों को मसाइल का हल तलाश करना सिखाना एक अहम तरबियती फ़रीज़ा है, जो उन की ख़ुद एतिमादी, फ़हम और रूहानी तरक़्क़ी का ज़रीआ बनता है। येह मज़मून इसी तरबियती उसूल को उजागर करता है।

क़ुरआन की तालीमात क़ुरआने मजीद में हज़रते मरयम, हज़रते आसिया رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا और दीगर ख़वातीन के वाक़िआत

हमें सिखाते हैं कि औरत भी मुश्किलात में सब्र, हिक्मत और तदब्बुर से काम ले सकती है। हज़रते ख़दीजा, हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا और दीगर मिसाली ख़वातीन की ज़िन्दगियों से सबक़ हासिल करें। बेटियों को इस्लाम की बुज़ुर्ग ख़वातीन के वाक़िआत से सबक़ सिखाया जाए कि वोह अपने मसाइल को अल्लाह पर तवक्कुल के साथ हल करें।

तालीमाते नबवी رسूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी बेटी हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا को न सिर्फ़ महब्बत दी बल्कि अमली ज़िन्दगी के मसाइल से निमटने की तरबियत भी दी। उन की ज़िन्दगी सादगी, सब्र और फ़हम की मिसाल है।

दुआ और मश्वरा इस्लाम में दुआ को मस्अले के हल का अहम ज़रीआ क़रार दिया गया है। बेटियों को सिखाएं कि वोह हर मुश्किल में अल्लाह से रुजूअ करें, नमाज़ों की पाबन्दी किसी हाल में न छोड़ें नीज़ नवाफ़िल की कसरत भी शुरूअ कर दें और अहले इल्मो तजरिबा कार से मश्वरा लेना भी सीखें।

तरबियती तरीक़े सुवाल पूछने पर हौसला अफ़ज़ाई करें। बेटियों को सिखाएं कि वोह मुनासिब अन्दाज़ में सुवाल करें, हक़ीक़त को जानें लेकिन ऐसी बातें कि जिन का जानना शरअन ज़रूरी हो और ज़िन्दगी की ज़रूरिय्यात का हिस्सा हो, ऐसी बातें जिन की जुस्तजू में पड़ने से घर का सुकून ख़राब हो, दूर रहें, बेटियों को सिखाएं कि शौहर से हर बात का सुवाल करते रहना और बार बार कुछ ना कुछ कुरेदते रहना भी दुरुस्त नहीं।

अमली मश्क़ें दें रोज़ मर्रा मसाइल जैसे सहेलियों के साथ इख़्तिलाफ़ या तालीमी दबाव पर बात करें और हल तलाश करने की मश्क़ करवाएं।

अख़्लाक़ी तरबियत सच्चाई, अद्ल और सब्र जैसे इस्लामी अख़्लाक़ी उसूलों को मसाइल के हल में शामिल करें। येह तरबियत न सिर्फ़ उन की ज़ाती ज़िन्दगी में मददगार होगी बल्कि वोह मुआशरे में भी मुस्बत किरदार अदा करेगी। अब चाहे दीनी मसाइल हों या दुनियावी मसाइल हों हर पहलू से अपनी बेटियों को तरबियत दें मसलन कभी ज़िन्दगी के उतार चढ़ाव में उसे किसी क़ुदरती आफ़त ने आन घेरा तो उसे डिप्रेशन में जाने के बजाए सब्रो हिम्मत से काम लेना आता हो, पैसे की तंगी का सामना हो तो उसे हलाल ज़राए से पैसे कमाना, इसराफ़ से बचना, किफ़ायत शिआरी करना आता हो बजाए इस के कि बिला वज्ह सुवाल कर के दूसरों की मोहताज बने। घरेलू तनाज़ुआत का सामना हो तो उसे अपनी मीठी ज़बान, नर्म अल्फ़ाज़ और हुस्ने अख़्लाक़ से सख़्त दिल को भी मोम करना आता हो। घर में अचानक मेहमान आ जाए तो क्या क्या बनाना है कितने अफ़राद का खाना बनाना है येह सब आता हो, घर में इमरजेंसी हो जाए कोई हादिसा पेश आ जाए तो घबराने के बजाए उसे फ़र्स्ट एड (इब्तिदाई तिब्बी इम्दाद) करना आता हो वग़ैरा। बेटी अगर ज़िन्दगी में किसी मुश्किल या चैलेंज से दो चार हो जाए तो उस के लिये सब से क़ीमती असासा उस की सोचने और समझने की सलाहिय्यत है। वालिदैन को चाहिये कि वोह अपनी बेटियों को हर बात में दूसरों पर इन्हिसार करने के बजाए ख़ुद सोचने, तज्ज़िया करने और दुरुस्त फ़ैसला करने की तरबियत दें। उन्हें येह समझाएं कि मुश्किल वक़्त में घबराने के बजाए ठहर कर मस्अला देखें, उस के अस्बाब जानें और मुम्किना हल तलाश करें। घर के छोटे छोटे कामों में भी बेटियों को शरीक करें। अगर कोई मस्अला पैदा हो जाए तो फ़ौरन ख़ुद हल करने के बजाए उन से मश्वरा लें, उन की राय को अहमिय्यत दें। इस तरह उन के अन्दर एतिमाद पैदा होगा कि वोह किसी भी सूरतेहाल का मुक़ाबला ख़ुद कर सकती हैं। येह तरबियत न सिर्फ़ उन की घरेलू ज़िन्दगी में मददगार साबित होगी बल्कि मुस्तक़्बिल में जब वोह अमली ज़िन्दगी में क़दम रखेंगी, चाहे वोह एक मां, उस्तानी, डॉक्टर, या कोई भी पेशा इख़्तियार करें उन के अन्दर फ़ैसला करने और मुश्किलात का सामना करने की सलाहिय्यत और जुरअत होगी। अपनी औलाद की बेहतरीन तरबियत के लिये हर हफ़्ते नमाज़े इशा के बाद होने वाले मदनी मुज़ाकरे को देखा करें।

इस्लामी बहनों के शरई मसाइल

1 مَاشَآءَاللہ के कलिमात को बे वुज़ू छूना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि हमारे हां ख़वातीन ह़िजाब में एक पट्टी इस्तिमाल करती हैं, जिस पर क़ुरआनी कलिमा "مَاشَآءَاللہ" लिखा होता है, यूंही मर्दों के लिये भी पट्टी आती है, जिस को बाज़ू पर बांधा जाता है, उस पर भी "مَاشَآءَاللہ" लिखा होता है, सुवाल येह है कि ऐसे कपड़े या पट्टी को बे वुज़ू छू सकते हैं या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

बयान कर्दा सूरत में ऐसी पट्टी जिस पर "مَاشَآءَاللہ" के कलिमात लिखे हों, उसे बे वुज़ू छू सकते हैं, शरअ़न इस में गुनाह नहीं, क्यूंकि उ़मूमन इस त़रह़ की चीज़ों पर येह कलिमात आयते क़ुरआनी की ह़िकायत के त़ौर पर नहीं, बल्कि ह़ुसूले बरकत या किसी और मक़्सद, मसलन नज़रे बद से बचने के लिये लिखे जाते हैं, इस लिये ऐसे कलिमात जिन को इन मक़ासिद के लिये लिखने में लोगों का मामूल है, उन को बेवुज़ू ह़ालत में छूना, गुनाह नहीं, हां ! वुज़ू व त़हारत की ह़ालत में छूना, बेहतर है। अलबत्ता येह याद रहे कि उन्हें पहने हुए बैतुल ख़ला में जाना मना है।

इस की फ़िक़्ही एतिबार से नज़ीर "بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ" है कि हमारे हां किताबों या त़हरीरात वग़ैरा के शुरूअ़ में लिखी जाती है और उस में उ़मूमन आयते क़ुरआनी की ह़िकायत मक़्सूद नहीं होती, बल्कि अल्लाह तआ़ला के मुक़द्दस नामों से बरकत लेना मक़्सूद होता है, इसी त़रह़ कलिमए इस्तिरजाअ़ "اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ" कि उस को मह़ज़ इज़्हारे अफ़्सोस के लिये या ख़बरे ग़म के जवाब में या मुसीबत के वक़्त इस जुम्ले को कहने की ह़दीसे पाक में बयान कर्दा फ़ज़ीलत पाने की ग़रज़ से लिखा व बोला जाता है, इन दोनों कलिमात को दुआ़ व सना व बरकत वग़ैरा की निय्यत से लिखने व बोलने में तआ़मुले नास है कि हर ख़ासो आ़म किसी ख़ास मौक़अ़ पर इन कलिमात को बत़ौरे दुआ़ व सना या तबर्रुक के त़ौर पर लिखता, बोलता है और लिखते, बोलते वक़्त ह़िकायते क़ुरआन की त़रफ़ तवज्जोह ही नहीं होती, इसी त़रह कलिमए "مَاشَآءَاللہ" को भी ह़ुसूले बरकत या नज़रे बद से बचने के लिये लिखा जाता है, इस लिये इस कलिमे को बे वुज़ू लिखना और छूना, जाइज़ है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 क़ियाम व रुकूअ़ व सुजूद में माज़ूर के लिये ह़ुक्मे शरई़

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस बारे में कि एक ख़ातून को इस्तिह़ाज़े का मरज़ है, उन्हें खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने और रुकूअ़ व सुजूद में झुकने की वज्ह से ख़ून आता है, जब कि बैठ कर इशारे से नमाज़ पढ़ने की सूरत में ख़ून नहीं आता, तो इस सूरत में उस ख़ातून के लिये क्या ह़ुक्मे शरई़ है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में उस ख़ातून पर लाज़िम है कि बैठ कर इशारे से नमाज़ पढ़े, कि हर वोह त़रीक़ा जिस से माज़ूरे शरई़ का उ़ज़्र जाता रहे या उस में कमी हो जाए, उसे इख़्तियार करना माज़ूर पर वाजिब है और ऐसा करने से माज़ूरे शरई़ का ह़ुक्म भी ख़त्म हो जाएगा जब कि उ़ज़्र ख़त्म होने की दीगर शराइ़त भी पाई जाएं।

मस्अले की तौजीह येह है कि बिला रुख़्सते शरई़ नमाज़ में क़ियाम और रुकूअ़ो सुजूद भी ज़रूरी हैं अलबत्ता बे वुज़ू नमाज़ पढ़ने की ब निस्बत क़ियाम और रुकूअ़ व सुजूद का तर्क करना कुछ ख़फ़ीफ़ ह़ुक्म रखता है, कि शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने ब ह़ालते इख़्तियार बाज़ सूरतों में क़ियाम और सज्दा तर्क करने की रुख़्सत दी है, जैसा कि नफ़्ल नमाज़ पढ़ने वाले को बैठ कर या बैरूने शहर सुवारी पर इशारे से नफ़्ल नमाज़ पढ़ने की इजाज़त है, जब कि ब ह़ालते इख़्तियार बे वुज़ू नमाज़ पढ़ने की किसी सूरत भी इजाज़त नहीं, और शरई़ उसूल है कि जब कोई शख़्स दो आज़माइशों में मुब्तला हो जाए, तो उसे ह़ुक्म है कि उन में से कमतर को इख़्तियार करे। लिहाज़ा मज़कूरा ख़ातून भी त़हारत व वुज़ू क़ाइम रखने के लिये बैठ कर इशारे के साथ नमाज़ पढ़ेगी।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शव्वालुल मुकर्रम के चन्द अहम वाक़िआत

तारीख़ / माह / सिन	नाम / वाक़िआ	मज़ीद मालूमात के लिये पढ़िये
पहली शव्वालुल मुकर्रम 43 हि.	यौमे विसाल सहाबिये रसूल, फ़ातहे मिस्र हज़रते अम्र बिन आस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शव्वालुल मुकर्रम 1439 हि.
पहली शव्वालुल मुकर्रम 256 हि.	यौमे विसाल अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीस, हज़रते इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शव्वालुल मुकर्रम 1438 हि. और "फ़ैज़ाने इमाम बुख़ारी"
पहली शव्वालुल मुकर्रम 1047 हि.	यौमे विसाल हज़रते अल्लामा सय्यिद जमालुल औलिया رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शव्वालुल मुकर्रम 1438 हि.
5 शव्वालुल मुकर्रम 617 हि.	यौमे विसाल मुर्शिदि ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, हज़रते ख़्वाजा उस्मान चिश्ती رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शव्वालुल मुकर्रम 1440 हि.
6 शव्वालुल मुकर्रम 603 हि.	यौमे विसाल शहज़ादए ग़ौसे आज़म, हज़रते अब्दुर्रज़्ज़ाक़ जीलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शव्वालुल मुकर्रम 1438 हि.
10 शव्वालुल मुकर्रम 1272 हि.	यौमे विलादत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान क़ादिरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शव्वालुल मुकर्रम 1439 ता 1445 हि. और "फ़ैज़ाने इमामे अहले सुन्नत"
11 शव्वालुल मुकर्रम 569 हि.	यौमे विसाल लैसुल इस्लाम, सुल्तान नूरुद्दीन महमूद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शव्वालुल मुकर्रम 1438 और 1439 हि.
15 शव्वालुल मुकर्रम 3 हि.	ग़ज़वए उहुद व शोहदाए उहुद, इस ग़ज़्वे में हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा हज़रते हम्ज़ा समेत 70 सहाबा ने जामे शहादत नोश फ़रमाया	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शव्वालुल मुकर्रम 1438, 1439 हि. और "सीरते मुस्तफ़ा, सफ़हा 250 ता 283"
23 शव्वालुल मुकर्रम 739 हि.	यौमे विसाल हज़रत सय्यिद अली बग़दादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शव्वालुल मुकर्रम 1443 हि.
शव्वालुल मुकर्रम 8 हि.	ग़ज़्वए हुनैन व शोहदाए हुनैन	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शव्वालुल मुकर्रम 1439 हि. और "सीरते मुस्तफ़ा, सफ़हा 453 ता 457"
शव्वालुल मुकर्रम 38 हि.	विसाले मुबारक सहाबिये रसूल, हज़रते सुहैब बिन सिनान रूमी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शव्वालुल मुकर्रम 1439 हि.
शव्वालुल मुकर्रम 54 हि.	विसाले मुबारक उम्मुल मोमिनीन हज़रते सौदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शव्वालुल मुकर्रम 1438 हि.

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

"**माहनामा फ़ैज़ाने मदीना**" के शुमारे दावते इस्लामी की वेबसाइट से डाउनलोड कर के पढ़िये और दूसरों को शेर भी कीजिये।

शव्वालुल मुकर्रम की मुनासबत से क़ाबिले मुतालआ कुतुबो रसाइल

رضائے الٰہی کی نشانیاں

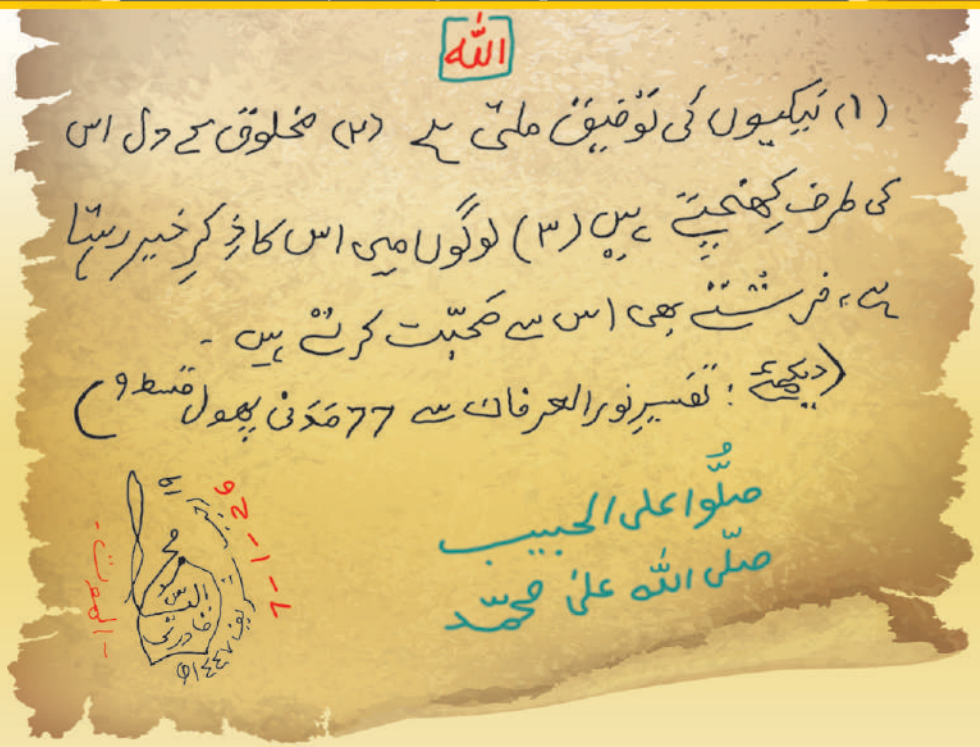

रिज़ाए इलाही की निशानियां

1. नेकियों की तौफ़ीक़ मिलती है
2. मख़्लूक़ के दिल उस की त़रफ़ खिंचते हैं
3. लोगों में उस का ज़िक्रे ख़ैर रहता है, फ़रिश्ते भी उस से महब्बत करते हैं।

(देखिये : तफ़्सीर नूरुल इरफ़ान से 77 मदनी फूल क़िस्त : 9)

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी का साथ दीजिये और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर अ़तिय्यात (Donation) के ज़रीए माली तआ़वुन कीजिये !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही (Reformatory), फ़लाही (Welfare) रूहानी ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है